दोहा ।

मृत्युलोकेमे चाहिये, भजले शिवशङ्कर ।
परामहिं (१)बलदेवजू, (२)मेहरजहांमे (३)सर ॥

(१) श्रीकृष्णाजी के भ्राता श्रीबलदेवरामजी अर्थात् श्रीदाऊजी थे, अथवा मैंश्री काशीनिवासी देहधारी इस मृत्युलोकमे, Baldeo prasad Mehrotia Khettiy 2½ Ghui, Calcutta.

(२) मेहरवानी करनेवाला अथवा सूर्य ।

(३) सरदार साहिब अथवा खलो दैत्यो दुष्ट आत्माओ प्रकृतिवालोको इस समारम निज लघु बुद्धिके अनुसार शास्त्रार्थ मे, सर पराल करनेवाला, उतम्न ह —याने ज्ञानरूपी प्रकाशमान प्रचन्ड तीक्षण सरवाणोसे, इस [illegible]

No.6756

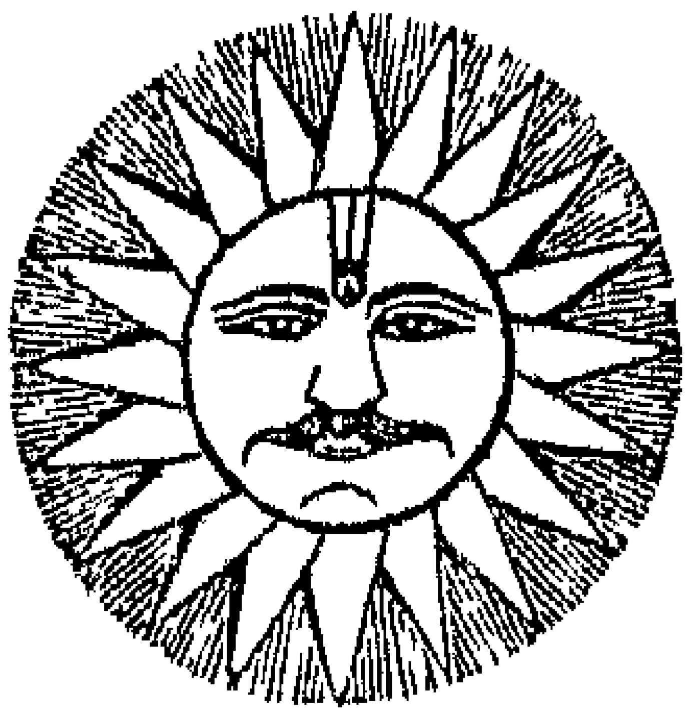

ॐ सूर्य्याय नमो नमो नमः सूर्य्याय ॥

महाधर्म्मोपदेशः ।

काश्यामधिवसता श्रीकौशिल्यगोत्रोत्पन्न-
बलदेवप्रसादवर्म्मणा-विरचितः ॥

संसार कोष न्याय पूर्व्वक प्रमाण

* * अन्याय सुखभञ्जन * *

वैष्णवविषयक गीत कला ।

HINDI POEM.

Instructions to Vaishnavs.

COPY

Government House,
NAINI TAL
21st, April 1904

Sir

I am desired to acknowledge the pages of the book you are writing forwarded with your letter of the 12th instant.

Yours Faithfully
Sd—H. G. S. Tyler, I. C. S.
Private Secretary,

Baldeo Prasad Mehrotra.
CALCUTTA.

Perusal of this poem is solicited.

श्रावण शुक्ल १५ सम्वत् १९६१

181

दाम अमुल्य १००० एक हजार प्रथम बार प्रकाशित हुआ ।

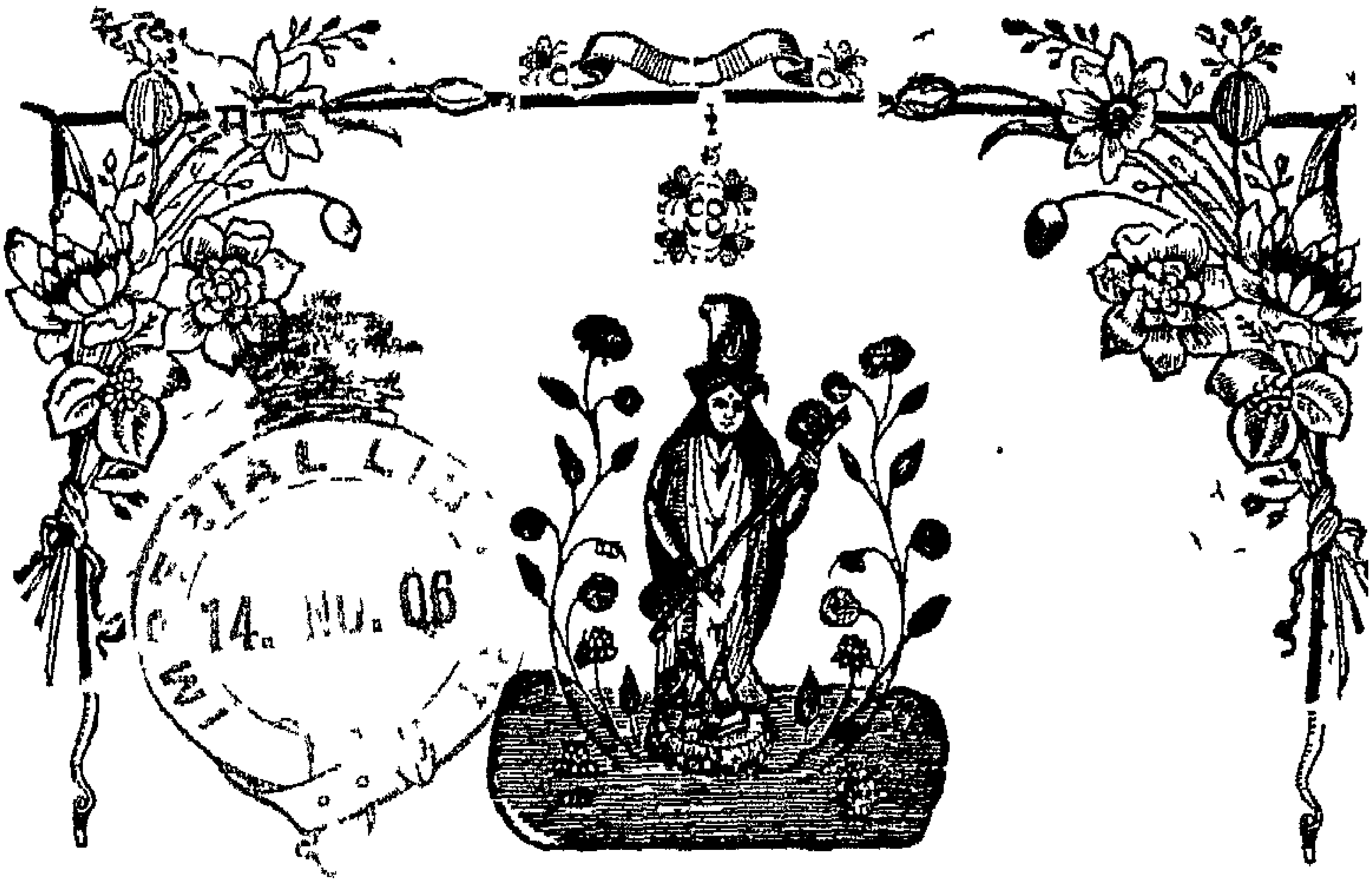
14. NO. 06

* अथ बलदेवप्रसाद मेहरोत्र २॥ घरस्थ-कृतम् *

कवित्त ।

जय जय श्रीशारदे, नारायणी मातेश्वरी, श्रीनागरी कृपा करो *
अनेक राग रागणी, प्रकाशमाण भाषणी, भव तारणी दया धरो *
अखण्ड विद्यासागरी, प्रचण्ड शक्ति आगरी, असुरनको ग्लानी करो *
बलदेव को बसै मन, ध्यान तेरे चरण मे, कलयुग की माया हरो *

NOTICE

The undersigned requests the favour of the readers of this my religious book of going through it carefully and attentively, during their leisure hours. It is hoped my readers will derive much benefit from the perusal of the Hindi poem.

Sd—Baldeo Prasad Mehrotra.
Khettry 2½ Ghur,
CALCUTTA.

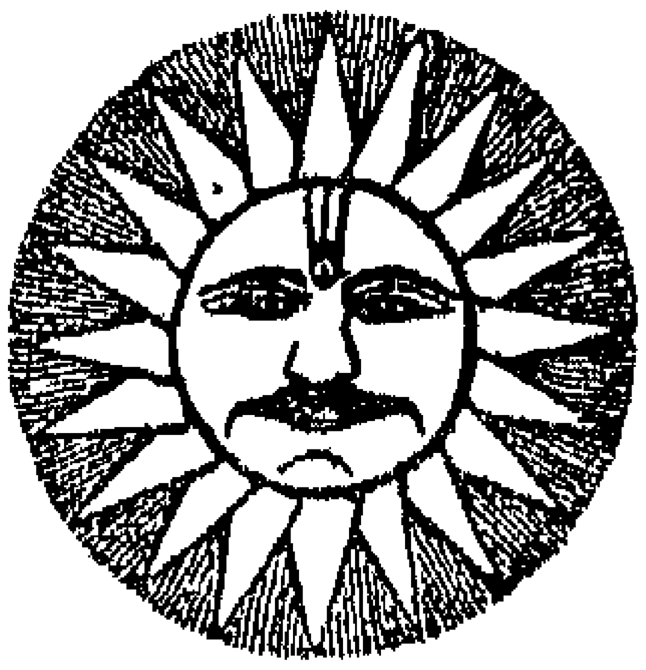

ओं सूर्य्याये नमो नमः नमो नमः सूर्य्याये ॥

काश्यमधिवसतः कौशिल्य गोत्रोत्पन्न

बलदेवप्रसाद वर्म्मणाकृतम्

महाधर्म्म उपदेश ।

वैष्णवविषयक

HINDI POEM.

INSTRUCTIONS TO VAISHNAVS.

COPY.

AJODHYA,
12th May 1903,

Dear sir,

I am diricted His Highness to thank you for the poems sent

Yours faithfully,
(Sd,) Babu PURSOTTAM DASS
Manager Ajodhya Estate,

To
Babu Baldeoprasad Mehrotra Khettry 2½ Ghur Shickderpara Street No, 12 Room No, 32,
CALCUTTA,

Printed at the B. L. Press
No. 62 Cotton Street, Calcutta.

श्रीगणेशाय नमः ।

महाधर्म्म उपदेश ।

(No. 1) **चौपाई ।**

श्रीगुरु बन्दौं जयति गणेशा † जयश्री जयश्री काशी महेशा †
श्रीविद्याधर नाथ गणेशा † शारद करती विनय हमेशा †
श्रुति गावती है विनय तुम्हारी † सो है १सुभग २अखिल भुज चारी †

दोहा ।

श्रीगणेशको करत नित, विनती हाथ पसार †
बुद्धिदेहिं बलदेवको, गणनायक भुजचार †

—o—

(No. 2)

श्री १०५ कृपासागर सकलगुण नागर सर्वविद्यालंकृत सर्वोपरि विराजमान जयतिः—श्रीमान् महोदय,—His Excellency the Right Hon'ble George Nathaniel Baron Curzon, of Kedleston, in the county of Derby, in the Peerage of Ireland P. C. G. M. S. I. G. M. I. E. Viceroy and Governor General of India.

—o—

(१) सुन्दर, सहज (२) पूर्ण,-सब ।

दोहा

मम जन्म पत्रिको फल यह, चौथे शुक्र प्रमान। बहुत मित्र जगमें रहैं, सज्जन नेक सुजान ॥
बरहें राहुको फल, खल बहु होवें भ्रात। ऊपरसे रखैं मित्रता, भीतरिहि रखैं घात ॥
सज्जन खल दोनों लखे, कलयुग में भर पूर। पशु सब रखते दुष्टता, अधमहिं लखिये क्रूर ॥
सज्जन रखते सुजनता, खलहिं करहिं अन्याय। उपदेशक बलदेव यह, जगमें नीत लखाय ॥

ग़ज़ल

भा वह जानिये सच्ची न होवे पक्षकी बातें * खुशामद छोडके यारो कहे जो ठिकचरर बातें
मारी आरज़ू सबसे सुनों मेरी सभी जातें * लिखा हमने जो पुस्तकमें जो दिलमेंथी जमी बातें
हसे आखरीतक देखिये प्यारो सच्ची बातें * यह बलदेव प्रसाद मेहरोत्र की तहरीर की बातें

विज्ञापन।

अनुग्राहक पाठक सभोंसे मेरी यह प्रार्थना है, सो क्या? याने यह मेरी गद्य पद्य धर्म्मनीति विषय की पुस्तक पृष्ठ १८६ तांई अनुग्रह पूर्व्वक आदिसे अन्त तक एकक मात्रा सहित शिघ्रताके साथ में पढ़िये, और इस पुस्तक के गुण और अवगुणको समझिये, और न्याय पूर्व्वक नीत धर्म्मको बिचार किजिये, और यह सब गद्य पद्य लेख मेरो निज कृत लघु बुद्धिके अनुसार इस पुस्तक के लेखको जानिये, और मैंने इस पुस्तक के मुद्रित प्रकाशित में किसीसे सहायता नहीं लिया है, सो सब महाशयों से मेरो यह निवेदन है, सो क्या? याने जो कुछ को मेरी भूल चूक होय सो कृपाकरके क्षमा कीजियेगा, क्योंकि मैंने इस पुस्तक को इस मृत्यु लोकमें अत्यन्त दुसह नाना प्रकारके दुःख आपत्ति को पूरी तौरसे झेला, परन्तु तिस परसे भी पूरी तौरसे प्रकाशित नहीं कर पायाहै, क्योंकि अन्याइयों के आक्रमण के द्वारोंसे अबतक निरुद्ध रही, (शेर)

लिखूं तो क्या लिखूं यारो अपमान खालिया। दुनियांमे नेकी करनेको मैंने जनम लिया ॥

सनातन धर्म्मवालोंका सच्चा शुभचिन्तक न्याई

बलदेवप्रसाद मेहरोत्र खत्री आढ़ाई घर

श्रीकाशी निवासी—बरतमान कलकत्ता

सूचीपत्र

श्रीगणेशाय नमः — पृष्ठ २
ओं नमःशिवाय नमः — पृष्ठ १८५
श्रीसत्यनारायण जी की स्तुति — पृष्ठ २६ से २७ ताईं
श्रीसांवलियाजी की अस्तुति और खल समाजकी कथा — पृष्ठ ६७ से ६८ ताईं
श्रीसच्चिदानन्द परब्रह्म ईश्वर से निवेदन — पृष्ठ ३३
सम्राट अभिनन्दन भारतेश्वर सप्तम एडवर्ड से प्रार्थना — पृष्ठ १४०
His Excellency the Viceroy Governor General of India—
पृष्ठ २ से ३ ताईं—६१से ६२ताईं१८२
H. H. The Maharaja sahib of Jaipur Rajputana — पृष्ठ ४८
H H The Maharaja Sahib of Benares — पृष्ठ ३-से ४ ताईं
Lieutenant Governor of Bengal — पृष्ठ ३८
Lieutenant Governor of United Provinces — पृष्ठ ३९
पबलिक कार्य्यके विषय मे सार्टिफिकट की अङ्गरेजी चिट्ठयोंकी कापियां हुक्मों तथा राजा महाराजोंकी — पृष्ठ ५—१९—३१—३६—७९ – १७९—१८०—१८९—१९० – १९५
विधवावोंके ऊपर कलयुगके राज्यका वरतमान आक्रमणके विषयका व्याख्यान प्रमाण मनुस्मृतिः
पृष्ठ ४१—५३ से—५६ ताईं १०९से १११ ताईं १४०से १४१ ताईं १५०से १५२ ताईं
१५७ की कबित (नं० ७५) को प्रमाण—१५९ से १६२ ताईं १७३ से १७४ ताईं १९३
गौवों के विषय में उपदेश गद्य पद्य मे — पृष्ठ ५।५१।१४८ से १४९ ताईं १८३ से १८४ ताईं
होलीके त्योहारके विषय में उपदेश — पृष्ठ ६।८० से ८१ ताईं ८४ से ८५ ताईं
बैष्णवजी नमस्ते—कलयुग की महिमा देखो ! पृष्ठ १० से११ ताईं १७से १९ ताईं ३२ से ३५ ताईं ७० से ८८।९०।१२१ से १२३ ताईं—१५४।१६६ (B. L. Press—पृष्ठ-२८
उपदेश होटलके विषय में — पृष्ठ ४४से ४९ ताईं—७१।१६९
नवग्रह सितारों का नाम फारसी मे — पृष्ठ ७६
भिन्नुसुपुन्नटी के विषय में — पृष्ठ ८।१०६।१२४ से १२५।ताईं १६७
जीव चरिन्दे परिन्दे जल थल के हिंसा विषय बलदान का खण्डन — पृष्ट १० से १५ ताईं
प्रमाण मनुस्मृति—पृष्ठ २०।२१ से २३ ताईं ॥३२॥प्रमाण मोहमद मरजीवन ६९।८८।१५५-से १५५।१७४से १७५ के फुटनोट मे व्याख्यान——

खत्रियों के मुरदनों के विषयमे पृष्ठ ४२ से ४३ ताईं १११ से ११२ ताईं

पशुवों के सन्तान के उत्पन्न में वरन सङ्कर के चिन्ह विषयका निर्णय पृष्ठ १२ से १३ ताईं १०१ से १०३ ताईं १४३ की दोहेकी १० अङ्कमें

अपभ्रंश खत्री जातिका बेवरा पृष्ठ १०३।१४०।१५७ से १५८ ताईं १६४।१८७ की दोहेकी (९) का फुटनोट । हवा और सूर्य्य के ज्ञायोंसे पवित्र वस्तुवें पृष्ठ।९७।१२६।

दिवाली'की त्योहारकी विषयमें पृष्ठ ६

ब्राह्मण के विषयमें उपदेश पृष्ठ १२६ से १३० ताईं

प्रेसके प्रिन्टिङ्गकी काम्पोजके मावा इत्यादिकों'कीशुद्ध अशुद्धी पृष्ठ १६।४९।५१।६०।६१।९०।९१ १०६ से १०८ ताईं १३२।१६८।१९१ से १९२ ताईं १९६

हिन्दी सम्पादक कलकत्ता महाशयों के समालोचना के विषय में पृष्ठ २०।२३ से २५ ताईं ४३।७०।१४६

चन्द्रप्राप्ति पुस्तक विषयमें पृष्ठ २९से३१।३९ से ४०।५९ से ६०।९१से।९५ १३४से १३९

फूट अर्थात् कुमति विषयउपदेश—पृष्ठ ६९।९९।१४१।१५६ के १३ दोहेका फुटनोट देखो !

विद्या बिषयक शिक्षा पृष्ठ ८।८२।८५ से ८६ ताईं

बच्चों'की हिफाजत अर्थात् रक्षा के विषय में पृष्ठ ८२

कलकत्ते के खत्री सभापति तथा उनके मन्त्री के द्वारा से प्रश्नका उत्तर पृष्ठ १५९।१६२।१६५ से १६६ ताईं

B. भजनलालजी लोहिया पृष्ठ ८१

राय बद्रीदास जी साहिब बहादुर पृष्ठ १००।१७१ से १७२ ताईं

L. गौरीशङ्करजी खजांची पृष्ठ २७।८.

P. गोविन्दनरायणजी उर्फ मानिकलालजी मिश्र पृष्ठ १४३ से १४४ ताईं

P. रामगोपालजी मथुरिया पृष्ठ १४६ से १४७ ताईं-१९३

माष्टर अमुल्याचरणजी घोस पृष्ठ १४६

माष्टर दीनानाथजी देव पृष्ठ १४७

पोष्टमाष्टर जेनरल बङ्गालके विषयमें पृष्ठ ८७

राजा शिवप्रसादजी साहिब बागला बहादुर पृष्ठ ८०।१००

दृष्टान्त—पृष्ठ५६ से ५९ ताईं ६२से६६ताईं ७१से७४ताईं८४से८५ ताईं ८९ से ९०ताईं

दृष्टान्त चुटकुलो के विषय मे पृष्ठ ४२।१२१ से १२३ ताईं

उपदेश कन्याके बिवाहके विषयमें— पृष्ठ १२५।१३१

मारवाड़ी तथा बैश्यों सभायों के विषयमें— पृष्ठ १६६ से १६७ ताईं १७०

प्रातिस्वीकार एक पुस्तक जगदीश पुरीकी पृष्ठ १६७ से १६८ ताईं

काव्य बिरचित्त—पृष्ठ २ से १३ ताईं १५ से १९ ताईं २१ से २३ ताईं २६ से २७ ताईं २८।३३ से ३५ ताईं ३८ से ३९ ताईं ४४ से ४७ ताईं ४९।५५ से ५७ ताईं ६१ से ६२ ताईं ६५।६७ से ६८ ताईं ७२।७५ से ७६ ताईं ७८।८०।८२ से ८९ ताईं ९६ से ९७ ताईं ९९।१०१ से १०२ ताईं १०९ से ११४ ताईं १२४ से १३२ ताईं १४० से १४४ ताईं १४६ से १५७ ताईं १५९।१६१।१६६ से १७७ ताईं १८१ से १८८ ताईं १९०।१९२——

L. Rai शिवप्रसाद जी साहिब Bahadur Cawnpur पृष्ठ ३७।९७।१९३

L. मङ्गूमलजी खत्री पृष्ठ ९७

P.—गोपीनाथजी पुरोहित पूजारी पृष्ठ १४४ से १४५ ताईं

P.—पण्डित कृपाशङ्करजी पूजारी पृष्ठ १७१

प्रमाण ज्योतिषके विषयमे पृष्ठ ७५।७७ १५३।१७५।१७९।१८१

दृष्टान्त—भारतेश्वरीजी के विषय मे— ७२।७९

प्रमाण मनुस्मृति: अध्याय के विषयमे— पृष्ठ २०।४१।१२६।१२८।१५१

प्रमाण शीघ्रबोध: कन्या विवाह के विषय मैं पृष्ठ १३१

व्याख्यान सम्बन्धियोंके बिषयमें पृष्ठ ७७ से ७९ ताईं ९८।१०६।१२१ से १२३ ताईं

पद्मानन्दजीसे सवाल पृष्ठ १७०

मुद्रित प्रकाशित पद्य विषय का वेंवरा पृष्ठ १०३।१०५।१९४ से १९५ ताईं

चि० सर्य्यूप्रसाद जीकि क्लर्क इलाहाबाद बङ्क कलकत्ता ब्रेंचमें बरतमान है पृष्ठ७३।७७।१७७

निज मुकुन्दीजी पुरीहितजी के विषयमे पृष्ठ १४४ से १४५

मृत्युविषय समाचार पृष्ठ १४४ से १४५ ताईं १६३।१९३

सतलोकके बिषयमें फा० समयछ 76पृष्ठ-१०१

आढाई घरकी जातीका बेंवरा पृष्ठ-१४१

पोष्टाफिसके इकनाजिलके विषय में पृष्ठ-३७-३८-३९-४४-१६५-१८८

मुबारिक बादी पृष्ठ ६२ १८२ से १८३ ताईं

निज ददीया सासके मृत्युके बिषयमें हासा तमाशा— पृष्ठ—१११ से ११२ ताईं।

सूचीपत्र समाप्त।

जयश्री जयश्री इकसौ पांचहि * पूजहि मनहिं सुमनसौं सांचहि *
सब विद्यालंकृत गुणवाना * जयश्री जयश्री कृपानिधाना *
जयश्री महोदय वाइसराय * श्री भारत हितकारी भाय *
जयश्री कर्जन सब गुण आगर * हिन्दुस्थान बिराजैं नागर *

दोहा ।

जयश्री वाइसराय की, जयश्री कृपानिधान *
प्रधानहिं नायक हिन्दके, न्यायधीश गुणवान *

—०—

(नज़्म)

ऐ साहबे अताव मददगार बेकसां ।
वै क़दिर दानों दादरस व आदले जहां ॥
करते हो तुम मदद जो ग़रिबों की रातोदिन ।
इसे तुम्हारा नाम है मशहूर दरजहां ।
दिलजां से दुवा देता हूं जनाब हर घड़ी ॥
कोई सुनता नहीं धरम की फ़रियाद को यहां ॥

—०—

(No. 3)

His Highness The Maharaja Sir Prabhu Narayan Shingh Bahadur K. C. S. I. of Benares.

चौपाई ॥

जय श्री रामनगर के राजा । सुखदायक महंराजधिराजा ॥
श्री काशी नरेश सुखदायक । बिराजैं रामनगरमें नायक ॥

जय श्री ज ❀ श्री प्रभुहि नरायण। परजहि पालक १ नितहि २ परायण॥
करते राज धरम (३)से नागर। बेद पुराण के रच्छक (४)आगर॥
दया धरम के नाथ सुरेशा। जय श्री जय श्री काशी नरेशा॥
जगसुमिरत श्री प्रभुहि नरायण। भारत गावत श्रीहि रमायण॥
नाम अपारहि प्रभुहि नरायण। सुमिरै शङ्कट जाय परायण॥
के, सी, यस, आई, सरकारी। पदवी विदित जगत में जारी॥
सिंघहि बहादुर पर उपकारी। प्रभुहि नरायण जगहितकारी॥
शिव सम दरश नरेश तुम्हारा। काशी महातम महं बिस्तारा॥

दोहा।

राम नगरके निकटमें, श्री गङ्गाकी धार॥
बस्ती विदित सोहावनी, श्री काशी के पार॥
बिश्वनाथ काशी पुरी, शिव शङ्कर दरबार।
जन्म भूमि बलदेवकी, जानत है संसार॥
श्री काशी गङ्गा निकट, बस्ती सुन्दर जान॥
राम नगर में जानिये, बेदोब्यास बखान।
बेद उचारें ब्यास जी, मुखसे बारम्बार॥
उपदेशक बलदेव यह, धर्म्म केर है यार॥
पुन्य हमारो देखिये, असुरन से है रार॥
हितबानी बलदेवकी, फीको मार कटार॥

—०—

(१) हमेशा और अर्थातुनीत (२) बेदशास्त्र पुराण इत्यादिकों के हितैषी (३) अत्यन्त चतुर, और श्री देवनागरी हिन्दी भाषाके रच्छक (४) प्रवीण॥

श्रीकाशी निवासी बलदेव प्रसाद मेहरोत्र अढ़ाई घरस्थ महाधर्म्म उपदेश कृत्तम् ।

(COPY.)

(No. 4) The 2nd July 1903.

Dear sir,

I have to acknowledge the receipt of the Various Hindi poems composed by you and sent for perusal of his Honour the Lieutenant Governor,

Yours faithfully
(Sd.) E. L. L Hammond,
I. C. S, Private Secretary Bengal

To

Babu Baldeo Prasad Mehrotra Khettry ½ Ghur Shickderpara Street No. 12 Room No. 32,

Calcutta,

—o—

(No, 5) सवैया ॥

वसुधा पैसुधा कहो है की नहीं ?
धरती भरेको भार गऊपर, सींगके ऊपर है की नहीं ?
घृत पकवानहिं दूधमलाई, धन उपजावत है की नहीं ?
गाय पुत्र हलजोतै गाड़ी, मृत चर्म को आदर है की नहीं ?
वसुधा पैसुधा बलदेव कहैं, कहो है की नहीं, कहो है की नहीं ?

—o—

(No, 6) सवैया ॥

प्रेम करो परमेश्वर से नित, तब निज आशा पूरि करोगे ॥
दया धरम को मन में राखो, परहितबात में ध्यान धरोगे ॥

निरङ्कार आकार ब्रह्म को, नारायण बलदेव भजोगे ॥
नीतज्ञान उपदेशको मानौं, जब भव सागर पार तरोगे ॥

—०—

(No, 7) कबित ॥

नीत को न मानें, रीतको न जानें, खेलें जूवा जहांनमें ॥
पुलिसको मिलावें, जूवा खेलें औ खेलावें, देवालीके दरम्यानमें ॥
जूवा खेल नित चोरिहि करें, मारपीट खावें, खुले मैदानमें ॥
हित बलदेवको न मानें, इज्जतको बिगाड़ें, सारे हिन्दुस्थानमें ॥

—०—

(No. 8) क़ाफिया ।

नीतको न मानेंगे, पुरानको न जानेंगे,
कमर टेंटमें पैसा नहीं, खेलें जूवा जहांनमें ॥
पुलिस को सांटेंगे, जुवा खेलेंगे, न मानेंगे,
पुरानी चाल न छोड़ेंगे, देवालीके दरम्यानमें ॥
चोरीको करेंगे नित, जूवेमें हारेंगे जब
मारपीट खावेंगे, जेहलखाने के मकानमें ॥
हित बलदेवको न मानेंगे, महाजन को बिगाड़ेंगे,
जुवारी खेल खेलावेंगे, कुल शहर हिन्दुस्थान में ॥

—०—

(No, 9) शैर ॥

मशहूर जहां में है रिशवत ख़ोरि पुलिस की ॥
ज़र रहो नहीं है यार हमेशा न किसीकी ॥

(No. 10) **सवैया ॥**

मान अपमान भयो जबसे, तबसे परमेश्वर नेह्ं लगाई ॥
ध्यान लगायके ब्रह्म लख्यो, निगमागम जाकर पार न पाई ॥
नाना भांतिके जीव बसैं जग, वेद पुरानहिं ग्रन्थहि गाई ॥
बलदेव को न्याय करै नहिं कोई, बिचार करौ जगमें यह भाई ॥

—०—

(No. 11) **सवैया ।**

अपनी अपनी हांकत हैं सब, अभिमानी निज करहिं बड़ाई ॥
अहङ्कारसे नीत न मानै, अथाई खल रखहिं लड़ाई ॥
धन से जग में लेत नहीं जस, अपजस में धन देत गंवाई ॥
लख बलदेव अजीरण धनको, अन्त समय यह सङ्ग नजाई ॥

—०—

(No. 12) **छप्पै ॥**

भैंसके आगे बीन बजावो भैंस लगै पगुराई ॥
पशुवनको उपदेश करेसे असर न उनपर जाई ॥
चिकनें घड़े पर गेंद को फेंको कबहु न ठहराई ॥
अङ्गरेज़ी सतयुग राज के अन्तर कलयुग फैलाई ॥
जूवा चोर औ बेमानों को कलकत्ते में (१)बनिआई ॥
बलदेव प्रसाद मेहरोत्र जगतका हितकारी भाई ॥

—०—

---

(१) बनीआई गौरी, अथवा बन पड़ी ।

(No, 13) **क़ाफ़िया ॥**

यह मिन्यु, सुपुल्टी को काटती (१)बिल्ल बड़ी शिकन्दर ॥
क्या भिख मङ्गोंसे भीख मांगती शहरके अन्दर ॥
बिलपर बिल बढ़ाती घटाती इक्कमटिक्स बड़ी है ॥
हिसाब किताब चुकाती सबसे तड़ा पड़ी है ॥
आफत की मारी प्रजा दुखारी ग़रीब रोती खड़ी है ॥
बलदेव कहैं खुदरा बकचों पर चूंगी कठिन पड़ी हैं ॥

—०—

(No. 14) **क़ितैबन्दी शैर ॥**

क़लम कहती है मैं शाहे जहां हूं ॥
क़लम कसको तवङ्गर में बनाऊं ॥
अगर (२) कमवक़्त होवे तो करूं क्या ॥
मगर मैं फिर भी दौलत पर बैठाऊं ॥
यह कलयुग का ज़माना है गुनहगार ॥
बलदेव प्रसाद ग़रीब अब लिखे क्या ॥

—०—

(No, 15) **दोहा ॥**

यह उपदेशको जानिये, धर्म्म विषय संसार।
हितबांनी बलदेवकी, फीकी सो है यार ॥ १ ॥
नींद भरी अज्ञानमें, सोता है संसार।
हितबांनी बलदेव की, जाग पड़ो सब यार ॥ २ ॥

---

(१) हिसाब किताब को बिल अथ्वा पिल, और याने बिल्ल अर्थातुचूहा खानेवाली बिल्ली ॥

(२) कलिकाल बरतमान यानें खराब ज़मानें कासमय।

नीत अङ्गरेज़ी राजको, चमक रहो सब ठौर।
सिंह बकरी इक घाटपर, पीते निरमल नीर॥ ३॥
होली में यह जानिये, नीच करैं उत्पात।
सड़कों में कीचड़ चलै, गली में पनहीं लात॥ ४॥
होली के त्योहारको, खेलौ सब के सङ्ग।
कुम कुम भर के मारिये, अबीरहि बुका रङ्ग॥ ५॥
पिचकारी को छोड़िये, भर के गुलाब रङ्ग।
यह मानो बलदेव की, कीचड़ में है जङ्ग॥ ६॥
खल शत्रुन की बुद्धिपर, राहु शनीचर केत।
अष्ट पत्रि बलदेव लख्यौ, मूरख रहैं अचेत॥ ७॥
जूवाचोरी मतकरौ, अधरमकेर प्रचार।
उपदेशक बलदेव की, यह मानौं सब यार॥ ८॥
नीतहि मेरी परखिये, लखिये नियत बिचार।
उपदेशक बलदेव यह, नीतधरमसौं यार॥ ९॥
अधर्म सभा में जानिये, धर्मकेर है हार।
हितबानी बलदेव की, जग में रही पुकार॥ १०॥
जहां नीत तहं धरम है, जहां धर्म तहं नीत।
उपदेशक बलदेव की, धरम सभा मे जीत॥ ११॥
अच्छे को पागल कहैं, अध्याई सब लोग।
हितबानी बलदेवकी, पशुवन के नहिं योग॥ १२॥
कला हमारी परखिये, कला हमारी नीत।
उपदेशक बलदेवकी, पशुवनसे है जीत॥ १३॥
निरलज्जन को जानिये, हया नहीं संसार।
पशुवन को बलदेव की, बार बार धिक्कार॥ १४॥
नीत लिखत है लेखनी, बारंबार हमार।

शत्रुनको बलदेव करै, पशुवन को फटकार ॥ १५ ॥
रखै भरोसा जो कोई, सुनिये श्रीरघुनाथ।
बिनय करत बलदेव यह, कर जोरे दोउ हाथ ॥ १६ ॥
हाकिम परमेश्वर सदा, करहिं भक्ति पर प्रीत।
हितबानी बलदेव की, करहु सबै पर तीत ॥ १७ ॥
राजनीत परमाँन से, करिये लेख बिचार।
समझिं मिताई धरमकी, लखिये सबै प्रकार ॥ १८ ॥
अचल भई यह जगतमें, काट सकै न गंवार।
राज भक्ति बलदेव की, बिदित सकल संसार ॥ १९ ॥
बैष्णव कटरा कौन है, कलकत्ते दरम्यान।
काट काट माछी बिकै, जंह यह धरम मकान ॥ २० ॥
कसाई कटरा बिदित है, बैष्णव का सरनाम।
मीन काट के बिकै जहां, आवै पैसा दाम ॥ २१ ॥
बैष्णव बकुले भगत को, जानैं सकल जहांन।
उपदेशक बलदेव को, लखिये नीत प्रमान ॥ २२ ॥
बकुले को जगमान है, पंछिन में हुशियार।
सांच कहैं बलदेव यह, मीन करै फलिहार ॥ २३ ॥
मीनों की है हाट में, आवत है बदबूह।
पुष्प के बदले यह बिकै, बैष्णव की खुशबूह ॥ २४ ॥
कलकत्ते में जानिये, कटरे की है हाट।
नीर तरोई काट के, तौल बिकाती बांट ॥ २५ ॥
जहां काट के बिकत है, मन्दिर आमद जान।
सांच कहैं बलदेव अब, लालच जलै मशान ॥ २६ ॥
यह १ सेवक भगवानको, बकुले को यों जान।

१) संसार।

उपदेशक बलदेव की, लखिये नीत प्रमान ॥ २७ ॥
यदि पशुवन के मांश सब, नाना भांति बिकाय।
तब मन्दिर की जानिये, नफा बहुत बढ़ जाय ॥ २८ ॥
बुद्धीपर पत्थर पड़ा, सांई की इकलैत।
कौड़ी कबुर की फेरिये, वैष्णव मत को चेत ॥ २९ ॥
असमसान को जानिये, को है कौड़ो लेत।
राजनीत बलदेव की, करिये मनमें चेत ॥ ३० ॥
गङ्गामें सब खपत है, गड़ही में यह नाहिं।
महंराजन को उचित है, परजन को जग नाहिं ॥ ३१ ॥
नद में मैला खपत है, गड़ही में उत्तराय।
लखहु नीत बलदेव की, परखुहु सब जग भाय ॥ ३२ ॥
और सुनों उपदेश को, सज्जन चतुर सुजान।
हित बानी बलदेवकी, मानौं नीत प्रमान ॥ ३३ ॥
जो देते बलिदानको, जीव अजागलकेर।
पुनि इनको यह जानिये, लेते बदलाफेर ॥ ३४ ॥
श्रीदुर्गा है वैष्णवी, नहिं चाहत बलदान।
*अजा बिचारे जीव को, छोड़ी सबै सुजान ॥ ३५ ॥
श्री काली नारायणी, जगकरती कल्यान।
शिवकी शक्ती जानिये, लखिये देवि पुरान ॥ ३६ ॥
जगदम्बे को जानिये, जगकी मात बखान।
जीव न चाहत पुत्रको, पशु नर एक समान ॥ ३७ ॥
जो मानै जगदम्बको, श्री फल कर बलदान।
यह मानौं बलदेवको, ज्ञानी चतुर सुजान ॥ ३८ ॥
श्री देवी पाखान की, छुवै नहीं बलदान।
पुन्य नहीं यह काममें, अजा न मारो जान ॥ ३९ ॥

खसी जाय निज जान से, खवैन को उत्पात ।
यह मानों बलदेव की, बकरी पाती खात ॥ ४० ॥
समर भूम में लेत है, असुरनको बलदान ।
अजा बिचारे जीव को, नहिं चाहत है प्रान ॥ ४१ ॥
मांस बढ़ावत मांश को, खाहिं करहिं बलदान ।
यह मानुष पिन्डा जानिये, अन्त में जले मशान ॥ ४२ ॥
यह पिन्डे में बसत है, ईश्वर शक्ती जान ।
बलदेव कहै ज्ञानी नर, अज्ञानी पशु समान ॥ ४३ ॥
जबलौं मनमें घृणा नहीं, तबलौं खाते मांस ।
बलदेव कहैं ज्ञानी नर, अब यह छोड़ें खास ॥ ४४ ॥
यह बचनहिं अनमोल है, धरम लेख नहिं दाम ।
हितबानी बलदेव की, आवे सबके काम ॥ ४५ ॥
सात पुश्तलौं नहिं घटे, अमीरी की खुशबूह ।
यहि लगिपीढ़ी जानिये, गरीबी की बदबूह ॥ ४६ ॥
सूमनिर दई जानिये, परको धन हर लेत ।
यह मानी बलदेव की, नीत कहे सब देत ॥ ४७ ॥
खेतमें बोते धान को, गेहूं नहिं उपजाय ।
कुतियन के पिल्ले जानिये, १ रङ्ग बिरङ्ग जनाय ॥ ४८ ॥

---

(१) जैसे एक कुतिया के चार रकम के पिल्ले पैदा होते हैं, याने-एक सफेद-दुसरा-काला-और तीसरा-लाल-और चौथा याने चितकबरा, सो नाह नजार कुत्तेका प्रमाण यह है, जैसे जिस कुतिये की सोहबत जिसरङ्गके कुत्ते से हुई, वही रङ्ग ढङ्ग का पिल्ला उत्पन्न जानिये, यदि काली कुत्तिया और काले कुत्ते से कहीं सफेद पिल्ला पैदा होय तो यह प्रमाण नीतके अनुसारसे जानिये, की कहीं सफेद कुत्तेसे उस कुतियेंसे भूलेसे सोहबत धोखा धोड़ीमें हो गई है ।

काले से काला लखो, गोरेसे गोरा जान।
नाहन जार के योग को, सोहबत से पहिचान ॥४८॥
कलिकाल में जानिये, लखिये स्थान प्रमान।
यह नीत बलदेव की, और लबेद बखान ॥ ५० ॥

—o—

*और लख योनीमें बकरा एक बहुत ग़रीब जन्तु पशु जानवर है सो उसका उद्धार करने के लिये श्री प्रचण्ड परम बैष्णवी भगवती के निकटमें बलदान लोग करतेहैं, एक छोटा सा प्रमाण यह संसार में विदित है, सो क्या? दुर्बलो दैव घातिकः, क्या सिंह लख योनीमें नहीं है ? क्या खर और शूकर लख योनी में नहीं है ? सो इन तीनों जन्तुओं का बलदान श्री देवी परम बैष्णवी के निकट क्यों नहीं होता है ? जब श्री भगवती नें असुरों के दलों को संग्राम के समर भूम में संहार किया है, सो उस समय में श्री अष्टभुजा श्री देवीजीने आज्ञा अपनी सैना जोहणियों को यह दिया है, कि तुम सब सैना असुरों के दलों को रक्त पान करके मांश रुधिर इत्यादिकोंका भक्षण करो, यदि यह कहा जावे कि श्रीदेवी भगवती की सैना के लिये जोहणियों शक्तियों दासियों के नबित यह प्रसाद अर्पण बलदान प्रचार श्री भगवती के निकट होता है, सो यह दासी शक्तियों का प्रसाद भोग दासों के लिये उचित है, अथवा श्री भगवतीजीके परम भक्त जनों बैष्णव पुरुषों के वास्ते नहीं है, महाशयो एक छोटा सा प्रमाण बरतमान समय में परखिये, और यह प्रमाण बङ्गोबासी व भारतमित्र कलकत्ते समाह्निक पत्नों के द्वारों से संसार में यह समाचार प्रसिद्धहै, सो मैं यह प्रमाण सब महाशयोंको देखलाता हूं, कि जब अङ्गरेजी बृटिश गवर्मेण्ट की सैना संग्राममें ट्रान्सवालकी ओर युद्धमें उपस्थित हुई, तब उनकी सैना इत्यादिकों

को औचटमें पड़ जानें से भोजन का सामन नहीं मिला, तब उन लोगोंनें क्या भोजन करके अपने अपने प्राणों की रक्षा किया, याने अखाद्य अथ्वा अकथ्य मांश इत्यादि कों से अपनी क्षुधाहों की रोका, और दूसरा प्रमाण यह संसार में प्रसिद्ध है, कि किसी समय में, मुसलमान महाशयों के मज़हब में घोर संग्राम हुआ है, तब उस समय में मुसलमानी सैनाओं को कुछ अहार करने को नहीं मिला था, तब किसी हज़रत मोहम्मद साहब पीर पैग़म्बरनें अपनी सैनाओं को यह अज्ञा दिया कि गाय कुशी करके सब सैना अपनें क्षुधा पीड़ीत प्राणों को रक्षा करैं, तब सब सैनाने यह प्रार्थना किया, कि प्रथम आप भोग लगाइये, तब हम सब सैना दल आपकी प्रसादीब्लूंगा, तब हज़रत महाशयनें लाहचार होकर गाय कुशी कराया, तब फिर उस मांशपर सात परत कपड़ेका रख करके अपनी हाथकी एक छोटोमी कांनी अङ्गुलीके द्वारेसे छू करके तब फिर बाद इसके निज जिह्वामें स्पर्श किया, तब फिर सब महाशयकी सैनोंने स्वामी की प्रसादीको स्वीकार किया, सो वही रेवाज़ अबतक व्योहार के साथ चला जाता है, कि साल में एक मरतबह क़ुरबान बक़रीदके दिन गाय कुशी होती है, सो हे भाइयो वैसेही इसी प्रकार से जानना चाहिये कि जो श्री देवी और देवता लोग जो खल और असुरों के संग्राम में किसी समय व्यतीत में बेधर्म्म हो गये हैं, सो उन लोगोंनें एक भैरवी चक्र स्थापित किया, सो इस भैरवी चक्रको जो लोग पूजतेहैं, सो वह लोग मांश मदरा इत्यादिकों को सेवन करते हैं, और यह बात संसारमें प्रसिद्ध है, कि प्रथम जङ्गली मनुष्यलोग कपड़ा पहिननें नहीं जानते थे, यानें नङ्गे नङ्गे बेहूदा घूमते थे, और अपनेंही आल औलाद को मार मारके भक्षण करते थे, सो अब वही मनुष्य लोग ज्ञानी संसार में प्रसिद्ध हैं, जब

पशु थे तब मनुष्यों का मांश खाते थे अब कुछ ज्ञान उत्पन्न हुआ, सो मनुष्य का मांश त्याग करके अब सब पशुवों का मांश खाते हैं, मैं आशा यह करता हूं, कि जब ज्ञान उत्पन्न होयगा, तब सब मांश अहारी लोग मांशों से घृणा करके छोड़ देंगे, फिर मदाहो मांशों से घृणा रखेंगे, और फिर परम बैष्णव होकर हरिबोल! हरिबोल!! हरी बोलेंगे।

(No 16) **राग चेतौनी ॥**

अजर है, अमर है, अधर है, अकारा।
निरङ्कार स्वामी की महिमा अपारा॥
परब्रह्म ईश्वर की माया अनन्ता।
सर्वज्ञ व्यापक है घट घट में रमता॥
नहीं देख पड़ता कहीं है जहां में।
ज्ञानों से लखिये नहीं है कहां में॥
दुनियां के चक्कर की चिन्गी है तारा।
वही है फलक में जो छिट का सितारा॥
सितारों की गरदिश जगत में है आती।
कभी रोशनी तेज़ मध्यम लखाती॥
रखो याद गारी संभो से यह प्यारो।
करो यार नेकी रहो नेक यारो॥
मोहब्बत की फोटो को दिल में उतारो॥
वफाई सफाई सचाई नहारो।
दिल की अदालत अदलसे सुधारो।
हिताई मिताई की बातें बिचारो॥

यह बन्दे (१) खोदा की इबादत निहारो।
भर मजाल संसार माया बिसारो॥
बुरे की बुराई को कूड़े पर डारो।
हिम्मत को मेरी जगत में बिचारो॥
यही तन से नाता सभों से है यारो।
अपने खुद गरज़ से हिमाकृत न मारो॥
किसी शख्स का दिल न काटो नफ़ारो।
यह बलदेव की बानी को हितसे बिचारो॥

(No 17) **टेक।**

कलिकाल बरतमान है उलटा है ज़माना।
कंठी की लाज है नहीं पलटा है ज़माना॥

---

(१) जैसे-आम-अम्बह-म्यागोज़ वैसे परमेश्वर-खोदा-गाड,—

Errata.

अशुद्ध	शुद्ध
प्रथम पृष्ठमें काश्यमधिवसतः	काश्यामधिवस्तः।
पृष्ठ २में पंक्ति २की में काशी महेशा	काशि महेशा।
पृष्ठ ४की पंक्तिमें काशी नरेशा	काशि नरेशा।
काशी महातम	काशि महातम।
पृष्ठ ५ निबासी	निवासी।
बलदेब	बलदेव।

पृष्ठ ८ मे कितैबन्दी शैर की अन्तकी पंक्तिमे-हरीच-मेहरोत्र।

अच्छा नहीं है काल अब खोटा है ज़माना।
अब कैसे रहे आबरूह बिगड़ा है ज़माना॥
जंजाल भरम जाल में भूला है ज़माना।
अपनें मौज और रङ्ग में भटका है ज़माना॥
कलिकाल बरतमान है उलटा है ज़माना।
कंठी की लाज है नहीं पलटा है ज़माना॥ १॥

अन्तरा।

नेकी के अेवज़ मे बदी रखता है ज़माना।
पैसा नहो तो पास तो पूछे न ज़माना॥
नीत सनातन को डुबाता है ज़माना।
सच्चे के लिये ख़ास कर है सख़्त जमाना॥
कलिकाल बरतमान है उलटा है ज़माना।
कंठी की लाज है नहीं पलटा है ज़माना॥ २॥

अन्तरा।

किसी के सङ्ग गया नहीं ज़र माल ख़ज़ाना।
कोई मानता नहीं है बेद शास्त्र पुराना॥
देखें भला किसी का तो नहीं है जुड़ाना।
अच्छा नहीं होता है बेगुनाह को सताना॥
कलिकाल बरतमान है उलटा है ज़माना।
कंठी की लाज है नहीं पलटा है ज़जाना॥ ३॥

अन्तरा।

स्त्रीके बसीभूत हो माता को न मानें।
अबोध के कारण से अभिमान बखानें॥
छिपके पाप करते हैं धरम को न मानें।
कलिकाल बरतमान से ईश्वर को न जानें॥

कलिकाल बरतमान है उलटा है ज़माना ।
कांठो की लाज है नहीं पलटा है ज़माना ॥ ४ ॥

अन्तरा ।

कलयुग के ज़माने मे लोग ईमान न मानें ।
इनसान वह नहीं है जो अनीत बखानें ॥
हैवान वही शख्स है जो गुण को न जानें ।
शरीफ वह नहीं है जो रफीक़ न मानें ॥
कलिकाल बरतमान है उलटा है ज़माना ।
कांठो की लाज है नहीं पलटा है ज़माना ॥ ५ ॥

अन्तरा ।

अनेक ग्रन्थ अनेक मत अनेक पुराना ।
एहसान फरामोश है कलयुग का ज़माना ॥
अकसर देवाला मार कर ईमान गँवाना ।
इजलास पर हमेशा हलफ झूठो उठाना ॥
कलिकाल बरतमान है उलटा है ज़माना ।
कांठो की लाज है नहीं पलटा है ज़माना ॥ ६ ॥

अन्तरा ।

कोई देख नहीं पड़ता है अपना न बिराना ।
यारों में यारी है नहीं पैसों का याराना ॥
जाल औ फरेब से दौलत को कमाना ।
टोपी को हया है नहीं पगड़ी को लजाना ॥
कलिकाल बरतमान है उलटा है ज़माना ।
कांठो की लाज है नहीं पलटा है ज़माना ॥ ७ ॥

अन्तरा ।

उपदेश को न माने जो जगतमे बखाना ।
अन्याय बरतमान से है नीत रवाना ॥
श्री काशिवासी नामवर रोशन है जहांना ।'
बलदेव प्रसाद मेहरोत्र अढ़ाई घरमे प्रधाना ॥
कलिकाल बरतमान है उलटा है ज़माना ।
कांठी की लाज है नहीं पलटा है ज़माना ॥ ८ ॥

COPY.

ALLAHABAD.
22 Jauly 1901.

Dear Sir,

H. H. The Maharaja has no time to see you as he is going away tomorrow morning,

Yours faithfully
Babu ——————,
(Sd.) Vindeshwari Prasad.
Private Secretary.
Ramnagar Benares.

(POST CARD.)

REPLY

To

Baldeo Prasad C/o B. Ramnarain * Right & Co.
ALLAHABAD.

* बाबू रामनरायन हमारे सगे मामूके साहब ज़ादह हैं, हमारे पिता की दो शादी हुई थी, प्रथम शादी की हमारी माताजी इनकी सगीबुआ थी, और बाबू रामनरायन श्रीमान् बाबू कुञ्जबिहारीलाल व बाबू लालबिहारीलाल खन्ना पक्के ४ घर पिनसिन याफ्तह् हेड आफिस इलाहाबाद बङ्क इलाहाबादके आप एकाउन्टेन्ट थे ।

अथ पञ्चमोऽध्यायः ।

प्रमाण मनुस्मृतिः स० पृष्ठ ३०६ श्लोकार्थ,—

जो पुरुष देवता और पितरों की पूजा (श्राद्ध आदि) के बिना पराये मांस से अपने मांस को बढ़ाया चाहता है उससे अन्य पाप कर्म्म कोई नहीं है ॥ ५२ ॥

अब यह कहते हैं कि मांस भक्षण की निवृत्ति धर्म्मके अर्थ है, जो मनुष्य सौ वर्षतक वर्ष २ में अश्वमेध यज्ञ करे—और जो मनुष्य सौ वर्षतक मांस भक्षण न करे उन दोनो को पुण्य का फल (स्वर्गादि) तुल्य होता है ॥ ५३ ॥

जिस फलको मांसके त्याग से प्राप्त है उस फल को पवित्र फल और मूलके भक्षण और मुनियोंके नीवार आदि अन्नोंके भोजन से नहीं होता है, इससे मांस भक्षण को सर्वथा त्याग दे ॥ ५४ ॥

महाशयो !

यह एक धर्म्म विषय का उपदेश मैंने लिख करके ता० २।११।३ ई० को श्रीभारतमित्र कलकत्ता सम्पादक की सेवा में धर्मार्थ परमार्थ अर्पण किया था, सो महाशयने यह कौवोंके उपदेश पर मुझे यह रसोद अनुग्रह के साथ कृतार्थ किया, सो मैं यह रसोद धर्म्म सम्बन्धी विषय का पाकर संसार में आपको निज लेखनो द्वारासे धन्यबाद देता हूं ।

COPY. ६ नवम्बर सन् १९०३ ई०

बाबू बलदेवप्रसाद जी मेहरोत्र—,के यह धर्म्म सम्बन्धी विचार प्रशंसा के योग्य है, धर्म्मात्माओं को इन पर खूब ध्यान देना चाहिये—,

श्रीमान् बाबू वैश्यकुल भूषण—
द० बालमुकुन्द गुप्त ।
हिन्दी सम्पादक भारतमित्र कलकत्ता ।

IMPERIAL * * LIBRARY

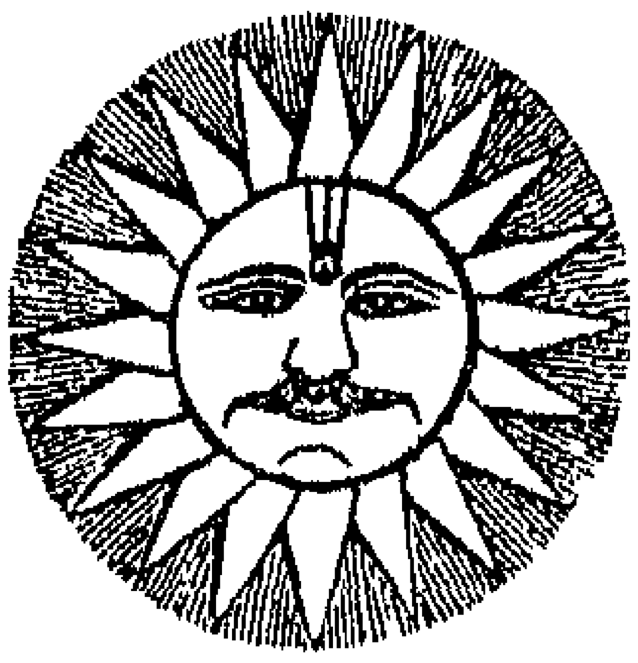

॥ ओं सूर्य्याय नमो नमो नमः सूर्य्याय ॥

काश्या मधिवसतः कौशिल्य गोत्रोत्पन्न बलदेवप्रसाद वर्म्मणः
महा धर्म्म उपदेशः कृतः।

शेर।

लाख कोई कहै न मानैंगे। अपने धरम कीरह निकालैंगे॥

—०—

"यह मेरा केवल उपदेश धर्म्म विषय का धर्म्मार्थ परमार्थ कौवे पंछियों—याने परिन्दों के वास्ते है, परन्तु मनुष्यों के वास्ते नहीं है।

शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

हे परमेश्वर! यह भतखौवा माछो मांस खानेवाले कौवों की बुद्धियां क्योंकर सुन्दर होंयगी,—

क्षमाकरो! क्षमाकरो!! क्षमाकरो!!!

(No 18) चौपाई।

मांस मछरिया खाते कौवा। कों कों करते हैं भत खौवा॥
ताक् धिक्*गावत हिरदय खोल। हरिबोल! हरिबोल!! हरीबोल

(*) धिक्कार है, क्या देखता है, अर्थात् ताक्धिनाधिन्ता,

उलटो मतहै कौवन केरी। ज्ञान बघारत हैं बहुतेरी॥
मांस मछरिया छोड़ौ कागा। पुनि जग सोहै हरिहर रागा॥

दोहा।

मछली मुरदा खात है, राम राम है राम।
हित मानो बलदेव को, छोड़ भजौ हरिनाम॥
सुर निकालत कौं कौं को काले काले काग।
भावत नहिं बलदेव को, राग रागणी राग॥
जल तरोई कबहुं न छोड़ै, नीच कहावत काग।
धुधुकुट् धुधुकुट् धुक्, तक्धिक् तक्धिक् * भाग॥
नींद भरी अज्ञान में, सोते होतो जाग।
काग सुनै बलदेव को, ताक् धिना धिन् राग॥

राग तिल्लाना।

यह कागन को उचित है, ताक् धिक् ताक् धिंक् बांचो।
ताक् धिना धिन् ताक् धिना धिन्, घुंघुरू पहिनके नाचो॥
ताक् धिक ताक् धिकता,
ताक् धिना धिन् ता,

राग काफिया।

सब कौवन को नानी मरगई ताक्धिनाधिन् लाग।
धरम की बानी को लेखनी क्या शक्ति कला है † जाग॥

अथवा मृदङ्ग की आवाज़, ताक्धिनाधिन्ता,—हरिबोल! हरिबोल!! हरीबोल!!!

(*) भागना, अर्थात् हिस्सा रागिणीका, अथवा—क़िसमत याने प्रालब्द।

† जगमगाती कला अथवा सोते हुवे को जगाना।

अढाई घर नहिं गाता हूं मिरदङ्ग ढोल पर राग।
बलदेवप्रसाद मेहरोत्र खत्रीको नहिं आवे फाग॥
ताक् धिक् ताक धिक्ता———
ताक् धिना धिन्ता—

—०—

COPY.

२२।७।३ ई०

बाबू बलदेव प्रसाद मेहरोत्र अढ़ाई घर जीमे होटल के विषय में एक लेख हमें भेंट किया है, जिसमे बाबू साहब का बिचार वर्त्तमान दशा को खूब सोचनीय दशा से ब्तलाता है, हम उक्त महोदय जी को हार्दिक धन्यबाद देकर और सज्जनों से प्रार्थना करते हैं, कि बाबू साहब के बिचार पर बिशेष ध्यान देकर काय मनो बाक्य से सहायता दें।

श्रीमान् सर्व पूजनीय द्विजबर अडीटर—
भवदीय,—
द० पण्डित शिवप्रसाद सम्पादक
हिन्दी सुखप्रचारक
काटनष्ट्रीट न० ४६ कलकत्ता।

—०—

शेर।

हिन्दुस्थान के दरम्यान मे कलकत्ता है बन्दर।
मशहूर जहां में है श्रीगङ्गाके निकट पर॥

बङ्गबासी सप्ताहिक समाचार पत्रके सम्पादक महाशय हिन्दी अडीटरने ता० २५ वीं नवम्बर सन् १८०१ ई० को हमारे होटल के विषय के उपदेश पर आपने यह समालोचना अनुग्रह से किया है,-

काशी के बलदेवप्रसाद जी आप लावनी बनाने में दिन बदिन उन्नति करते जाते हैं। यह लेख मैंने अपने हाथ से लिख करके दिया था,—

और आपने ता० १ डिसम्बर सन् १८०१ ई० के सप्ताहिक पत्रमें मेरे लेख का यह समालोचना किया है, सो मै धन्यबाद देता हूं, सो क्या? श्रीबलदेवप्रसाद मेहरोत्रने छोटे लाट साहब बङ्गालके मरने पर एक शोक कथा लिखी है, सो यह पत्र एक हजार मुद्रित छोय कर संसार में बट गया है,—

महाशय बङ्गबासी सम्पादक कलकत्ता पण्डित हिन्दी लेखक आप बहुत दानाई बीनाई और चतुराई हुशीयारी के साथ संसारमें हिन्दी लेखनी की कला रखते हैं, आपने मेरी कविता कारनेशन देहली दरबार के बारे में ता० २२ जून सन् १८०३ ई० को आपने सप्ताहिक पत्रमें यह समालोचना किया है, सो मैं धन्यबाद देता हूं क्षमा करियेगा, आपने अपनी लेखनी द्वारा से यह लिखाहै कि, कविता अच्छी नहीं हैं, सो बहुत ठीक है, महाशय आप अनुग्रह करके मेरी भूल चूक को मेरी लघु बुद्धी के अनुसार से मेरे लेख को स्वीकार कीजिये और मैं तो आपके इस इबारत का यह अर्थ समझता हूं, सो क्या?

यानि यह कविता सज्जनोंके लिये क्या है? मानो शिरोमणि है, परन्तु खल और कुटिल व कण्टक अथवा असुरोंके वास्ते यह कविता ललित सुन्दर नहीं है, और आपने अपने समालोचना में यह भी

बिदित किया है, कि इस पुस्तकमें इस पुस्तक का दाम कुछ लिखा नहीं है, सो बहुत ठीक है, इसका दाम अनमोल मेरे एक एक बचनों का है, सो जो कुछ मुनासिब प्रभु बड़े लाट साहब और प्रभु छोटे लाट साहब समझेंगे सो मेरे मेहनतका मेहनताना अपने हस्त कमलके द्वारोंसे क्रपाकी अनुग्रह से क्रतार्थ करेंगे, और इस कारने-शन देहली दरबारके लेखके बारे का दाम प्रजाओंसे नहीं है, इस लेखका दाम प्रभु बड़े लाट साहबसे है, अब सब महाशयोंसे मेरी यह निवेदन है, कि इस पुस्तकके (No 8) की कविता जो इस पुस्तक में प्रकाशित होकर धर्म्मार्थ परमार्थ है, सो इसका दाम भी अनमोल है, याने एक एक बचनोंका एक एक लक्ष रुपया है, क्योंकि यह उपदेश कौए परिन्दोंके वास्ते है, "परन्तु मनुष्योंके वास्ते "नहीं है, चुपरहो! खामोश रहो!! अबतो यह सुनके सब कुटिलों की नानी क्यों मर गई? नहीं! नहीं!! नहीं!!! पेटोंमे हल बली मच गई, यह कविता क्या है? मानो घी चीनी का लेड़वा है. एक छोटा सा दृष्टान्त यह संसारमे प्रसिद्ध है, सो क्या? याने घी चीनी का लेड़ुवा टेढ़ा भला होताहै, चाहे गोल खाव, चाहे टेढ़ा, चाहे लम्बा, परन्तु स्वाद गोल टेढ़ा लम्बे घीके चीनीके लेडुवे का यह तीनोंमे से कोई रङ्गका खानेसे एक समान हृदय को सन्तुष्ट तरबतर करनेवाला है, और घी चीनी का लेड़ुवा चाहे टेढ़ा होय, चाहे लम्बा होय, चाहे गोल होय, परन्तु एक समान मीठे स्वाद में लज्जत ज़बानको देता है, और जिभ्या को अत्यन्त मुलायम करता है।

(No 19) **दोहा ।**

सत्यनरायण भानु जग, सोहैं लक्ष्मी साथ ।
बलदेवके हियमें बसैं, तीन लोकके नाथ ॥
तीन लोकके नाथ को, पूजै सकल जहांन ।
लक्ष्मीपति मेरी सुनो, नारायण भगवान ॥
कर जोरि सुमिरण करों, श्री प्रभुको गुण नाम ।
उपदेशक बलदेव कर, भगवतको परणाम ॥

चौपाई ।

जयश्री नारायण भगवन्ता । महिमा जग बिस्तार अनन्ता ॥
ब्रह्मरूप नारायण स्वामी । घट घट व्यापक अन्तरयामी ॥
निरङ्कारको रूप न पाया । जगमें सोह अपरमित माया ॥
सङ्कटमोचन नाम तुम्हारा । गावत वेद पुराण अपारा ॥
श्रीपति राखन सिन्धु कृपालू । प्रभु लक्ष्मीपति दीन दयालू ॥
अगम नीर सागर जहँ धारा । शेष नाग पर शैन तुम्हारा ॥
सुनहु नाथ प्रभु बिनय हमारी । मै शुभचिन्तक जगहितकारी ॥
पालन पोषन सबको करहू । पति राखन दारुण दुख हरहू ॥

श्री लक्ष्मीपति की बलिहारी। प्रभु तुम जगके रक्षा कारी॥
माया अपरम पार बिचारी। मागहु दास भक्ति अधिकारी॥

दोहा।

पार ब्रह्म माया लखी, तेरी कछू न जाय।
उपदेशक बलदेव यह, बिनवत बिनय बनाय॥

(Copy.)

श्रीपत्री लाला बलदेव प्रसाद, योग बंक बङ्गाल इलाहाबाद से, गौरीनाथ खजांची को जैगोपाल बंचने, आगे समाचार १ बंचने आगे पत्र आपके नगर२ पहुंचे, आपको धन्यवाद है, कि ऐसे ऐसे कार्य्यमें मेहनत करते हो, और इन किताबो में इसकदर रुपया खर्च करते हो, आपको पर उपकारका बहुत ख्याल है, आपको हम बहुत तरह से धन्यबाद देते हैं, आगे ज्यादः शुभ।
ता० २७ मई सन् १९०३ ई०,—

विज्ञापन।

विदित हो कि मैंने कलकत्ता बन्दरमें ३००० पत्र मुद्रित करके संसारमे अर्पण किया था, १००० श्रीभारतेश्वरी जीके स्वर्गवास विषयका, और १००० प्रभु छोटे याट साहब बङ्गालके स्वर्गवास विषय का, और १००० देहली दरबारके विषय का, आश्चर्य्य की बात यह है, कि मैंने यह मुद्रित पत्र सब राजस्थानमें बज़रिये डांक के द्वारासे रवाना किया, मगर पहुंच मैंने किसी कोई राजस्थानसे एक पैसे के पोष्टकार्ड के द्वारासे नहीं पाया, और हाल समय वरतमान मे मैंने जोकि देहली दरबार के बारे मे पत्र

मुद्रित किया था, सो मैंने ११० पाकेट परदेश मे रवाना किया, यानि राजस्थान और मित्र इत्यादिकोंको पोष्टाफिसके द्वारासे भेजा, और पोष्टिज इष्टाम्प रु० ६॥) का खर्च किया, महाशयो! मैंने केवल एक पाकेट का पहुंच पाया, जो कि इस विज्ञापनके ऊपर चिट्ठी की नकल मुद्रितहै, और मालुम नहीं कि हमारा १०९पाकेट बुक, जा बजा डांक के द्वारासे ठीक तौर पर पहुंचा, या नहीं? इसलिये सब महाशयों कि सेवामें यह निवेदन है कि कृपा करके यह जो पाकेट रवाना होता है, सो इसकी पहुंच एक पैसेके पोष्ट-कार्डके द्वारा से कृतार्थ करना चाहिये, और जो जो पाकेट रवाना किया है, सो हमारा पाकेट रवाना किया हुआ वापस कहींसे नहीं आया है।

(No 20) **दोहा।**

मुद्रित चन्दा पत्रको, लियो सभोंसे यार।
उपदेशक बलदेव को, धन्यबाद संसार॥
गुरु ब्राह्मणके चरण मे, बार बार परणाम।
पृथ्वीके हैं देवता, औद्विज चौबे नाम॥
दशहिं नवम्बर जानिये, सकल विदित प्रचार।
सन उनीस सौ तीन को, इश्वो है संसार॥
काटन की ष्ट्रीट है, कलकत्ते दरम्यान।
नम्बर बासठ जानिये, जहं यह पत्र छपान॥
बी, एल, प्रेस मे जानिये, मनेजर बांके लाल।
बलदेव कृत् उपदेश यह, मुद्रित धरम विशाल॥

धन्यवाद ।

नीचे लिखे हुए श्रीभारत हितैषी असद्भाव महाशयोंने इस पत्रके छपाने में प्रेसको छपाई चन्दा देकर सहायता की है, सो मैं इसके नीचे लिखे हुवे सुधर्म्म रक्षकोंके नामको सुशोभित करके श्री भारत हित सुधाकरोंको मैं श्री काशि निवासी बलदेव प्रसाद मेहरोत्र अढ़ाई घर उपदेशक संसारमें धर्म्मविषय धन्यवाद देता हूं ।

१८॥) न्यू चीनाबाजारके ब्रोकर आफ गवर्मेण्ट पेपरके महाशय से पाया ।

१) श्रीद्विज मान् सर्व पूजनीय दामोदर जी चौबेका जमा ।

१) श्रीद्विज मान् सर्व पूजनीय बेनीमाधो जी चौबेका जमा

सिकदरपाड़ा ष्ट्रीट (नं० ४०)

१) श्रीद्विज मान् सर्व पूजनीय झाऊलाल जी चौबेका जमा ।

१) श्रीद्विज मान् सर्व पूजनीय छबिनाथ जी चौबेका जमा ।

१) श्रीद्विज मान् सर्व पूजनीय रामदयाल जी चौबे का जमा, हस्ते महराज विश्वम्भर नाथ जी मिश्र सिनीयर क्लर्क चीफ् इञ्जीनियर दफ्तर नैनीताल से पाया ।

१) श्रीद्विज मान् सर्व पूजनीय पितम्बर दास व बेनीमाधो जी, चौबेका जमा ।

१) श्रीद्विज मान् सर्व पूजनीय देवीप्रसाद जी चौबेका जमा ।

१) श्रीद्विज मान् सर्व पूजनीय रङ्गलाल जी चौबेका जमा

१) श्रीद्विज मान् सर्व पूजनीय मोहनलाल इन्द्रमणि जी चौबे का जमा ।

१) श्रीद्विज मान् सर्व पूजनीय लालजी चौबे का जमा ।

बांसतल्ला ष्ट्रीट (नं० २०) से पाया ।

॥) श्रीद्विज मान् सर्व पूजनीय मदनमोहन जी गोरखी पहलवान चौबेका जमा।

१) श्रीद्विज मान् सर्व पूजनीय मन्नालाल जी चौबेका जमा।

१) श्रीमान् गणेश जी प्रोहित मारवाड़ी का जमा,

१) श्रीमान् बाबू ललितबिहारीलाल कपूर खत्री का जमा।

१) श्रीमान् बाबू शिवदत्त राय प्रेमसुख जी कम्पनी का जमा।

१) श्रीमान् बाबू बिशुनदयाल गजानन्द जी का जमा।

१) श्रीमान् बाबू हरदयाल जी पोद्दार कम्पनी का जमा।

१) श्रीमान् बाबू नरसिंह दास जी भिवाणी का जमा।

१) श्रीमान् बाबू लक्ष्मीनरायण व रामकिशुन दास जी सुदरा का जमा।

१) श्रीमान् ठाकुर डोगर सिंह जी का जमा।

१८॥)

१) श्रीमान् बाबू लालबिहारीलाल जी रोड़ा खत्री काटन ष्ट्रीट (नं० ४३) का जमा

१) श्रीमान् बाबू गुलाब राय, राजा शिव बक्स जी बहादुर काटन ष्ट्रीट (नं० ५७) का जमा।

१) श्रीमान् बाबू रामचरण दास व हजारीमल जी का जमा। हस्ते श्रीमान् बाबू मनहीराम जी से पाया, (नं० १२) कालीगोदाम अफीम का चौरास्ता

२) श्रीमान् बाबू भजनलाल महादेवप्रसाद जी लोहिया का जमा। हरीसन रोड कोठी (नं० ९०)

१) श्रीमान् बाबू गणेशदास गङ्गाविशुन जी रोड़ा खत्री हंसपोखरिया (नं० १०) का जमा,

॥) श्रीमान् बाबू ज्वाहिरमल रामगोपाल जी का जमा।
(नं० ११) पगाड़ियापट्टी

१) श्रीमान् लाला पूरणचन्द्र दिलवाली सिंह कपूर २॥ घर जी
का जमा (नं० २७) राजा बरदवान का कटरा।

१) श्रीमान् बाबू सीतावचन्द जी साहब जौहरी
सिकन्दरपाड़ा ष्ट्रीट (नं० १८।१) का जमा।

३) मनोहर दास जी के कटरे (नं० ११३) के साथ
मर्चेण्ट महाशयों का जमा।

१) श्रीमान् बाबू चुन्नीलाल हरदान जी से पाया
१) श्रीमान बाबू बीजराज चुन्नीलाल जी से पाया।
१) श्रीमान् बाबू मगनीराम कनहैयालाल जीसे पाया

१) श्रीमान् बाबू चुन्नीलाल बिनानी जीसे पाया
अफीम का चौरास्ता (नं० १४)

---

३२)

(COPY)

Government House
Naini Tal
15 th. September 1900.

Undersigned has the honour to acknowledge receipt of the poems submitted by Baldeo Prasad Khattri under cover of his petition the 8th. instant.

Baldeo Prasad Khattri
C/o Wright & Co, Johnstongung,
ALLAHABAD.

(Sd) W. B. Douglas, Capt:
Pt. Secy. to H. H. the L. G. C.
C. N. W. P. &. Oudh.

अतः,—

और टन्डन खत्री और कपूर खत्री श्रीचण्डिका श्री देवी जी के उपासक हैं, किसी समय में यह मांस अहारी लोग बकरे का बलदान श्री देवीके निकट करते थे, और कहीं२ यह रसूम व्योहार चलन बलदान बकरे का होता है, और जो मांस अहारी लोग हैं सो अपनी पुरानी मर्य्यादा को नहीं छोड़े हैं, सो अजा का बलदान करते हैं, अथवा कहीं२ श्रीफल का बलदान भी होता है, और हमारे मेहरोत्र वंश सब श्रीशिवाय श्रीदेवी शक्ति के उपासक हैं, और हमारे मेहरोत्र वंश में श्रीशिवाय माता जी के निकट श्रीफल का फल चटकाते हैं, याने टन्डन कुल वैष्णव खान्दान खान्दानी वैष्णव वंशमे नहीं है, और मेहरोत्र कुल वैष्णव खान्दान खान्दानी हंसके समान देवता तुल्य हैं, जिस कुल-पवित्र मे मेरा जन्म हुआ है, सो दया सहित देवताके समान यह मेहरोत्र वंश संसार मे प्रसिद्ध हैं।

अतः,—

विदित हो कि २ वर्ष के निकट व्यतीत होता है, कि जब से मैंने श्रीभारतेश्वरी जीके स्वर्गवास विषय का पत्र उपदेशके साथ मे मुद्रित करके संसार मे अर्पण किया था, और संसार मे बांटा था, तब से हमारे सब नातेदार अधर्म्मी अथवा असत्य की रक्षा करनेवाले सम्बन्धी लोग मुझसे अत्यन्त बीनीत होकर मुख,तलिफ बरखिलाफ हो रहे हैं, और तभी से खासकर हमारे रिश्तेदार लोग मुझसे विरोध रखते है, और हमारे उपदेश मात्र पत्र इत्या-दिकों के बारेमें, जो कि संसार मे हमारा महाधर्म्म उपदेश जोकि विख्यात है, उसके यह सब लोग द्रोही हैं, और दो वर्ष से यह लोग हमारे सहायक नहीं हैं, बलकि हमारे धर्म्मके यह लोग

रच्चक नहीं हैं, और बल्कि काम ख्याली अबोधी लोग नाशक हैं, बाज़ बाज़ कण्टक महाशय हसद् और रश्क करनेवाले लोग हमारे इज्जत और आबरूह और प्राणों के भी भूखे होकर ग्राहक हैं, और यह बात संसार में प्रसिद्ध है कि, देवता लोग दूसरोंके धर्म्म इत्यादिकों की रच्चा करते हैं, परन्तु असुर अर्थात् दैत्य याने दया रहित लोग जो हैं, यदि कोई पुरुष जो ग़रीब है, सो वह जो अपने धर्म्म कर्म्म इत्यादिकों की जो रच्चा करता है, सो उसके धर्म्म और ईमानके बाग़ी होकर अधर्म्मी लोग नाश करतेहैं,हमारा मात्र पच्च उपदेश क्या सबके धर्म्मोंका रच्चक नहीं है ? जो लोग की मेरे हितैषी नहीं हैं, सो उन लोगों को मैं संसार में धन्यवाद देता हूं।

(No.21) (शेर)

कलम खींच कर कतल करना नहीं यह रवा अमीरों को *
हमेशा चाहिये रखना अदल से याद गारों को *

उद्देश्य।

चौपाई।

हे परमेश्वर नीत तुम्हारी * ब्रह्मा बचन वेद मुखचारी ॥
ब्रह्मको ज्ञान चार है बेदा * अनेक ग्रन्थ जगकेर लबेदा ॥
वेद पुराण न मानैं कोई * कलिमें रहै न महिमा होई ॥
राजनीत से चलै न कोई * कलयुग में अनीत सब होइ ॥
परस्वारथ में कुटिल कुढ़ाई * खलनन केरी बुद्धि मूढ़ाई ॥
सब कण्टक को मतलब गूढ़ा * नीत न मानै बालक बूढ़ा ॥
अज्ञानी अज्ञान उड़ाते * खलहि मण्डली नहीं जुड़ाते ॥

जो नर अपने हैं विश्वासी * घटिआई करते हैं खासी ॥
बरधन केरी बुद्धि बुढ़ाई * जस कौरत सों असुर कुढ़ाई ॥
अज्ञानी बक्कियाके ताज * जूवाचोरि न करिये काज ॥
निरलज्जन को लाज न आती * अन्याइनको नीत न भाती ॥
असुरनसे हम रहत निरासी * उलटीमत है पलटी खासी ॥
परस्वारथ में अनीत छोड़ै * अनहित करैं सबै जन कोई ॥
परमेश्वर जग दीनदयालू * मो पर कीन्ह्या कृपा बिशालू ॥
भई अनुग्रह ईश्वर केरी * प्रभुहि लार्डने करिहि न देरी ॥
तबहि आई इज्जत सरकारी * कम्पलीमेण्ठ भई जग जारी ॥
दया सहित आई यह पाती * कृपा बिदित जगमें है भाती ॥
पश्चिम उत्तरके अधकारी * प्रभु लाटहि शोभित अधिकारी ॥
सार्टिफिकट मोहिं भेज्यो आला * आनर इज्जत केर हवाला ॥
मान बड़ाई दौड़ी आई * आनर चार की चिट्ठी पाई ॥
बङ्गालहि लाट विराज बङ्गाला * न्यायधीश प्रभु हाकिम बाला ॥
प्रभुहि निहाल अनुग्रहि कीन्हा * धनहि बाद मुबारिक दीन्हा ॥
अयोध्यापुरिके नाथ सुरेशा * धनहिं बाद मोहिं दीन्ह नरेशा ॥
यह सब ईश्वर की है माया * जग प्रकाश जो हमने पाया ॥
गर्व करहिं अन्याई बन्धू * अज्ञानी नर हियके अन्धू ॥
यह सब नाता देह से भाई * नाते दारी सङ्ग न जाई ॥
रे अभिमानी मिथ्या चोला * अन्त समय बोलहि नहिं बोला ॥
घट घट व्यापहिं अन्तरयामी * पाप पुण्य निरखत जग स्वामी ॥
दस इन्द्री दस गुणहिं बखाना । मन नहिं जीत सकै बलवाना ॥
यह पिण्डा दस इन्द्रिन केरा । मन सेवत चोला बहु तेरा ॥
चञ्चल चोला चितहि चलावै । पाप करम में मनहिं लगावै ॥
नित चाखत मन दूध मलाई । तकते चलते परहि लुगाई ॥

कण्ठी पहिनके माला फेरैं। पर नारिन सों नैन तरेरैं ॥
कण्ठी पहिनके करहिं ठगाई। परधन हरते नेहं लगाई ॥
कण्ठी पहिनके मिथ्या चलैं। पर उपकार लखैं तो जलैं ॥
दया रहित नहिं पर उपकारी। अन्याई सदा बिभिचारी ॥
अज्ञानी अज्ञानमें भूले। अनहित करत मगनमें फूले ॥
पाठ करहिं श्रीभगवत गीता। अन्तर कपट प्रगट बिपरीता ॥
कहँ लगि बरनौं यह अनरीता। प्रथम चरण कलयुग कर बीता ॥
भरम जालमें सब जग लटका। अन्त समय मनुवां तन सटका ॥
सब कर मन माया में भटका। परमेश्वरका डर नहिं खटका ॥
अनुचित बोलैं झूठी बानी। बातहिबात सौगन्ध लखानी ॥
नीत न मानैं धरम गंवाई। असुरन की लखिये प्रभुताई ॥
माथे सुन्दर तिलक लगाई। रोलिहि श्रोहि निसान जमाई ॥
कलयुग के पाषण्डी लोगा। अधरम से करते सुख भोगा ॥
जबलौं नहिं मारहिं-देवाला। तब लौं नहीं महाजन लाला ॥
अज्ञानी नर पशुहि समाना। निरबुद्धी हैवान बखाना ॥
अभिमानी सैतान समाना। राजनीत को यह परमाना ॥
धनके गरब में जो नर भूला। जानहु पापको जगमें मूला ॥
खलनन केरि निशाचरि माया। अधरम सेवत धरम गँवाया ॥
बरतहिमान समय कलिकाला। हितहि बिचार करौ सब लाला ॥

दोहा।

राजयोग सनमान हित, उपदेश भयो संसार।
यह मानों बलदेवको, नीत न त्यागो यार ॥

सोरठा।

यह जानत संसार, जहां नीत तहं धरम है
करिये सबै बिचार, हित बानी बलदेवकी।

(COPY)

Government House

ALLAHABAD.

Dated the 6th January 1904,

Sir,

I am desired to acknowledge your letter of the 22nd instant together with the 3 printed books of your own composition which you have sent.

Yours faithfully,

Sd—H. G. S. Tyler, I. C. S.,

Private Secretary.

To

Baldeo Prasad Mehrotra.,

CALCUTTA.

(COPY)

Government House,

CALCUTTA.

12th, January 1904.

Sir,

I am directed to acknowledge the receipt of the Hindi poems forwarded with your letter of the 23rd ultimo.

Yours faithfully,

Sd—John, .O Miller, (C. S. I.) I. C. S.

Private Secretary to the Viceroy.

Lala Baldeo Prasad Mahrotra.

यह चिट्ठी बज़रीये डांक हाज़ा अङ्गरेज़ी की मुवर्खः १२ जनवरी सन् १९०४ ई० शब को, आंजनाब आली जाहा, वाइसराय हिन्द, बहादुर दाम इक़बालहूके दस्तफैज़ शरीफ मुबारिक अदलसे सादिर होकर मरहमत हुई, इस पुस्तक का ४ फरमा मुद्रित आंजनाबके खिदमत शरीफमे बज़रिये डांक हाज़ाके रवाना किया था, सो उसकी रसीद बज़रिये डांक हाज़ा ता० २२-१२-३-ई० को पोष्टाफिस खेङ्गड़ापट्टी कलकत्ता की रजिष्टी, A. D. शुदह No. 148 की एकनालिजमेण्ट ता० 27—12-3 ई० को पाया।

(COPY)

श्रीपत्री भाई बलदेवप्रसाद योग्य लि० शिवप्रसाद की जयगोपाल बंचने, आगे समाचार १ बंचने,—

आगे तुमने हमारे यहां बरस ६)) के क़रीब काम किया, (इज़लाय गवर्नमेण्ट खज़ानों में कई ज़िले में खाजाञ्चिगरीका) काम बहुत ईमान्दारी से किया है, और कोई बैमानी किसी तरह की नहीं किया है, और चाल चलन, जबतक, तुम हमारे यहां रहे, हमने बहुत ठीक पाया, आगे ज्यादः शुभ ता० २३ अगस्त सन् १८९३ ई०

यह सार्टिफिकाट मिनजानिब जनाब राय
लाला शिवप्रसादजी साहब बहादुर
*रईश कानपुरने दिया,— ता: ६-७-३ ई० कलकत्ता-,
Babu—
Sd—Surju Prasad.

---

* रईश शब्द उच्चारणका दो टुकड़े करनेसे यह अर्थ प्राप्त होता है, र—अर्थात् रयासत—ईश—अर्थात् मालिक याने अथवा रईश,

LIEUTENANT GOVERNOR OF BENGAL.

The Hon. Sir Andrew Fraser,

K. C. S. I. बिराज मान हिन्द जयतिः—

(No 22) **चौपाई**

जय श्री जय श्री फ्रेज़र साहब। राजधानि बङ्गालके १नायब ॥
जगमे सोहै मान बड़ाई। पर उपकार की कीरत छाई ॥
धर्म्महिं के हितकारी भाई। परजन के रक्षक सुखदाई ॥
जय श्री फ्रेज़र साहबकेरी। जय जयकार होत बहुतेरी ॥
जय श्री जय श्री सज्जन आगर। परजहि पालक जगत उजागर ॥
मधुर शब्द जयकार की शोरा। जय जयकार होत चहुंओरा ॥

दोहा

जय श्री फ्रेज़र लाट की, सोहै जय जयकार।
हितकारी बङ्गाल के, विदित सकल संसार ॥

—o—

१ सरदार { ता० २६-१२-३ ई० को इस पुस्तक का ४ फर्म्मा बज़रिये डांक हाज़ा A. D. रवाना कियाथा, सो ता० २८-१२-३ ई० को पोष्टाफिस बड़ाबाजार का एकनालिजमिन्ट No 39 का पाया।

—:o:—

LIEUTENANT GOVERNOR OF UNITED PROVINCES,

The Hon. Sir James John Digges La Touch,

C. S. I. बिराजमान हिन्द जयतिः—

(No 23) **क़सीदा**

सरजान लाट लटञ्च की जयकार हो रही।
क्या क्या सिफत बयांन औ तारीफ हो रही॥
सुनते हमेशा आप गुरबों की पुकार को।
दिल जां से लोग देते हैं दुवा सरकार को॥
हनूद मुसलमानों की करते हैं ख़ातरी।
बलदेव प्रसाद मेहरोत्र यह लिखता बहादुरी॥

—:o:—

इस पुस्तक का चार फर्मा मुद्रित किया हुआ, बज़रिये डांक हाज़ा, A. D. रवाना किया था, सो ता० २२-१२-३ ई० का एकनाॅलिजमेन्ट No. 20 पोस्टाफिस बड़ाबाज़ार का ता० 24-12-3 ई० को पाया, और नं० २२ व नं० २३ की यह दोनो गद्य पद्य लेख ता० १२-१-४ ई० को प्रातःकाल प्रेस मे मुद्रित की दिया।

—:o:—

३२) मीज़ान टोटल इस पुस्तक के चन्दे छपाई पृष्ठ ३१ को—

१) श्रीमान् बाबूलाल गङ्गाप्रसादजी सोनी ब्रोकर न्यू चीना-बाज़ार का जमा,

१) श्रीमान् बाबू चुन्नीलालजी जौहरी बांसतल्ला लेन नं० ३२, का जमा,

१) श्रीमान् बाबू केदारनाथ भावसिंहका ब्रोकर आफ रेली-बिरादर्स, हरिसन रोड (नं० १२६) का जमा,

१) श्रीमान् महँराज महन्त आनन्दगिरजी गोस्वामी मिरज़ापुर निवासी का जमा, ता० 3-1-04 ई० "गोस्वामी अपःभ्रंश गोसांई',

१) श्रीमान् बाबू डोंगरसिंह दास भावशिंकाजी का जमा, नीमतल्ला (नं० १६)

१) श्रीमान् बाबू विश्वेश्वर दास कसेराजी का जमा, श्रीठाकुरकी गली (नं० २)

१) श्रीमान् बाबू नाथूराम रामकिशुन खेम का क्लाथ मर्चेन्टजी का जमा, मनोहर दास का कटरा (नं० ११३)

१) श्रीमान् लाला मनोहर दासजी मेहरोत्रा २॥ घर का जमा, सूतापट्टी नं० ८५

---

८) बांसतल्ला ष्ट्रीट न० २६ के मर्चेण्ट से पाया।

—:o:—

१) श्रीमान् बाबू गौरीदत्त चौधरीजी से पाया,

१) श्रीमान् बाबू रामप्रसाद चिमनलाल गन्डेड़ीवाला से पाया,

१) श्रीमान् बाबू आसाराम घासीराम झुंझुनवालेसे पाया,

१) श्रीमान् बाबू दिलसुख राय रामजस से पाया,

१) श्रीमान् बाबू जैदेव बांसदेव चूड़ीवाले से पाया,

१) श्रीमान् बाबू रामचन्द्र बन्सीधर से पाया,

१) श्रीमान् बाबू शिवनरायन रामनरायनजी से पाया,

१) श्रीमान् बाबू बीजराज मैनसरियाजी से पाया,

---

८)

---

४८) मीज़ान कुल टोटल—

—:o:—

माई लार्ड,—

भारतमित्र सप्ताहिक पत्र का ओढ़पत्र ता० १६ जनवरी सन् १९०४ ई० का बरतमान समय कलिकाल का भयङ्कर रूप श्रीभारत के सनातन धर्म्म और मर्य्यादा पुराचीन डुबाने का नाश प्रगट करता है, सो क्या ? गत २८ वीं दिसम्बर को मुरादाबाद मे एक विधवा सम्बन्ध हुआ, बिजनौर के जमीदार सेठी शङ्करलाल के साथ नाहन निवासी पं० मूलचन्दकी विधवा लड़की की शादी हुई, महाशय श्रीमान् भारतमित्र-, बिदित हो कि यदि यह मनुष्य ब्राह्मण अथवा क्षत्री है, सो इसको यज्ञोपवीत पहिनने का अधिकार नहीं है, यदि पहिने तो उस पुरुष की बिरादरी यज्ञो पवीत तोड़ने का अधिकार रखती है, और उस पुरुषको उसकी बिरादरी से दन्ड होसक्ता है, जो ब्राह्मण और क्षत्री बाल बिधवाका गन्धर्व बिवाह करते हैं, फिर वह ब्राह्मण और क्षत्री नहीं होसक्ते हैं, बल्कि बिधवा का पुनर बिवाह शुद्रों के वास्ते उचित है, परन्तु ब्राह्मणों और क्षत्रियोंके वास्ते नहीं है, यदि जो ब्राह्मण और क्षत्री अपनी पुरानी मर्य्यादा त्याग करके बाल बिधवा का पुनर बिवाह करें, सो वह पुरुष अपनी बिरादरी मे शामिल किसी हालत से नहीं होसक्ता है।

नवां अध्याय, प्रमाण मनुस्मृतिः सं० पृष्ठ ५५२ श्लोकार्थ।

अर्यमणंनुदेवम्, इत्यादि बिवाह के मंत्रों में किसी भी वेद की शाखा मे नियोग् नहीं कहा है, और बिवाह की विधिवाले शास्त्रमें

भी फिर विधवा का बिवाह नहीं कहा है ६५॥-पृष्ठ १५३ श्लोकार्थः-, बुद्धिमान् (दान के गुण दोषों का ज्ञाता) मनुष्य किसी बरको कन्या को देकर और फिर उसी कन्या को अन्य मनुष्य को न दे, क्यों कि एक को देकर दूसरे को देता हुआ मनुष्य पुरुष के अनृत झूंठ हज़ार२ पणके दण्ड को प्राप्त होता है, यह बचन इस लिये है, कि बिवाह के समय यदि सप्त पदी न हुई हो, और दैव बश लड़का मर जाय तो उस लड़के की भार्या न होने से कन्या को किसी अन्य लड़केको न दे, किन्तु विधवाओं के धर्मों मे वह लड़की रहे-७१॥—

Sd—Baldeo Prasad Mehrotra,
Khettri 2½ Ghur-,
CALCUTTA.

मैंने एक अपूर्व यह बात नई चाल निराली बहुधा आश्चर्य को अकसर जब मै इलाहाबाद मे था, तब यह देखा करता था, सो क्या ? याने जब कोई खत्रियों मे धनाढ्य बुड्ढा मरता है, तब दशमे के दिन लोग गोल, गोल, मोतीचूर का गुप चुप लेडुवा बांटते हैं, सो इस लेड़ूवाके लालच से बिरादरीके लोग मुरदनीमे सैंकड़ों पुरुष नर व नारी एकठ्ठा होते हैं, याने मर्द और औरतें, बहुतसी घाट पर जाती हैं, यहां तक कि जिनके मुंह मे दांत नहीं है सो वह भी आठ महीने का बच्चा लेडुवा लेनेको जाता हैं, याने लेड़ुवे के लालच से अमीर और गरीब यह दोनों मुरदनी में इकट्ठा होते हैं, और जब कोई बुड्ढा या जवान मर्द या औरत गरीब का मरता है, तब लाश पड़ी २ गन्धाती और सड़ती है याने कोई लाश का

उठानेवाला बिरादरी मे, बिरादरी का मनुष्य दिखलाई नहीं पड़ता है, सो हे भाईयो लड्डू बांटनेवाले और लेनेवाले, यह दोनों को संसार मे धिक्कार है।

एक छोटा सा चुटकुला, चुटपुटे के साथ मे होली की दिल्लगी बाज़ी क्या है? एक फ़र्ज़ी नाम की मुसम्मात गोबिन्दो बीबी मेहरी अठला कर चलती है, और मटक चमक कर क्या कहती है? गिरी तो वह गिरी, मै ना गिरी, अगरचे: वह ना गिरती, पर मै गिरती, तो गिरती, याने बिजुली गिरी कुवें मे, मै ना गिरी, फिर क्या कहती है? बढ़ी तो वह बढ़ी, मै ना बढ़ी, अगरचे: वह ना बढ़ती, पर मै बढ़ती तो बढ़ती, याने नदी बढ़ी, मै ना बढ़ी, फिर क्या कहती है? मरी तो वह मरी, मै ना मरी, अगर वह ना मरती, तो मै मरती पर मरती, याने नागिन मरी, वह मरी, मै ना मरी, फिर क्या कहती है? चढ़ी तो मै चढ़ी, वह ना चढ़ी, अगर वह ना चढ़ती, तो मै चढ़ती पर चढ़ती, याने दरख़्त पर चढ़ गई, अगर वह ना चढ़ती, तो मै अदालत में पकड़ जाती।

मनेजर-भारतमित्र, महाशय, कलकत्ता सम्पादकने ता० १६-१-०४ ई० के साप्ताहिक पत्र में यह अपना विज्ञापन दिया है, सो क्या? याने दो तोले ओढ़पत्र के लिये तौल मे होने से दाम ३०) अङ्कन तीस रुपया संसार मे प्रसिद्ध मुद्रित कराई का मोल रखा है, सो यह मोल महाशय हमारी राय मे बहुत कमती है, सो हमारी राय मे क्या बात आती है? याने ३०) अङ्कन तीस रुपये पर एक सुन्न, और फिर इसके बाद एक बिन्दी, और बिन्दी के आगे एक भाल भलाता हुआ बुंदा याने सिफरभी होना चाहिये, और ३०) अङ्कन

रुपये तीस का हजार गुणा, तीस हजार रुपया दो तोले का दाम रखना चाहिये, क्योंकि हमारे कौवों के उपदेश का एक २ वचन का दाम एक २ लच्च रुपया है, और बकुले भक्तों की कथा का दाम एक २ वचन का मोल पचास हजार रुपया सब बकुले भगतों से है, क्योंकि हमारी सहादत यही है, जो कि बकुले भक्तों के कटरे में वह चीज़ बिकती है, महाशय! जब आप अपने झोढ़ पत्र का दाम दो तोले का दाम याने जब आप तीस हजार रुपया रखेंगे, तब हमारे कौवों और बकुले भक्तों की कथा का दाम भी संसार में विशेष बढ़ेगा, वरना नहीं, इस लिये आपको अपने झोढ़पत्र को बहुत इज्जत करना चाहिये।

और इस पुस्तक का ४ फर्म्मा १ पृष्ठ से परयन्त ३२ पृष्ठ मुद्रित पत्र बज़रिये डांक हाज़ा के H. H. the Maharaja of Ramnager Benares की सेवा में बज़रिये (रजिष्ट्री A. D. के द्वारा से, ता० 24-12-3 ई० को पोष्टाफिस हबड़ा से रवाना किया था, सो (No. 168) का एकनालिजमेन्ट ता० 27-12-3 ई० को पाया।

श्रीकाशि निवासी बलदेवप्रसाद मेहरोत्र अढ़ाई घरस्य वर्म्मणः महाधर्म्मः उपदेशः क्रतः।

शेर।

ऐयाशी ऐयाश जो करने को जाते हैं।
रंडिके बन्द से बहुतेरे पान खाते हैं॥
हिन्दू का नाम मात्र हैं, हिन्दू कहलाते हैं।
बलदेव प्रसाद मेहरोत्र क्या ताने उड़ाते हैं॥

दोहा ।

आया है सो जायगा, राजा राव फकीर ।
हितबानी बलदेव की, न मानो यार हकीर ॥
कांटे गाछ मे उगत है, बसहि गुलावहिं फूल ।
उपदेशक बलदेव की, लखिये नीत न भूल ॥

टेक ।

एक बात नई ख्‌वाब की सबको सुनाते हैं ।
होटल में लोग चोरी से खानेको जाते हैं ॥
हम सच्चा हाल ख्‌वाब विषय बानीगाते हैं ।
वह ख्‌वाब चाहे ग़लत होय हम कह सुनाते हैं ॥
हम ठीक ठीक सच्चा हाल मुंह पे लाते हैं ।
अधरम विषय के हाल को कुछ कह सुनाते हैं ॥
एक बात नई ख्‌वाब की सबको सुनाते हैं ।
होटल में लोग चोरी से खानेको जाते हैं ॥ १ ॥

अन्तरा ।

जात वरन वेद औ कुल को लजाते हैं ।
होटल में खोल बोतल मुंह मे चुक्का लाते हैं ॥
होटल को देख टोटल को सब भूल जाते हैं ।
होटल में खाना खाने से आराम पाते हैं ॥
एक बात नई ख्वाब की सबको सुनाते हैं ।
होटल में लोग चोरी से खानेको जाते हैं ॥ २ ॥

अन्तरा ।

सब मुफ्त ज्ञान धरम को दिल से गंवाते हैं ।
फिर घरमे आके बीबीसे लब को मिलाते हैं ॥

लाकर ब्रांडी बीबी को अपने पिलाते हैं।
डरते नहीं खोदा को न कुछ खौफ खाते हैं॥
एक बात नई ख़्वाब की सबको सुनाते हैं।
होटल में लोग चोरी से खाने को जाते हैं॥ ३ ॥

अन्तरा।

क्रश्चन के पास चाहो चुरुट पीने जाते हैं।
मय पीके पाव रोटी औ बिस्कुट उड़ाते हैं॥
होकर नशे में कौम फूल बोले जाते हैं।
हिन्दुओ मुसलमान जो क्रश्चन होजाते हैं॥
एक बात नई ख़्वाब की सबको सुनाते हैं।
होटल में लोग चोरी से खानेको जाते हैं॥ ४ ॥

अन्तरा।

उन्हों के साथ बैठ कर होटल में खाते हैं।
होटल में खाना खाके सभों से छिपाते हैं॥
पश्वों के साथ हुक्के को पीते पीलाते हैं।
गर शख़्स कोई पूछे तो शरमाय जाते हैं॥
एक बात नई ख़्वाबकी सबको सुनाते हैं।
होटल में लोग चोरी से खानेको जाते हैं॥ ५ ॥

अन्तरा।

सच यह दोनों क़ौम जो क्रश्चन होजाते हैं।
तब जेन्टिलमैनो हाथ मिलाकर गिट् पिटाते हैं॥
करते हैं नाश धरम वह दोज़ख में जाते हैं।
आप तो डूबते हैं औरोंको डूबाते हैं॥

एक बात नई ख़ाब की सबको सुनाते हैं।
होटल में लोग चोरी से खानेको जाते हैं॥ ६॥

अन्तरा।

पीकर शराब ख़ूब मज़े भी उड़ाते हैं।
कलयुग के लोग धरम नाश करते जाते हैं॥
रख कर शरम को ताक़ पर जो चाहे खाते हैं।
दुनियां में वही लोग बड़ा ज़ुल्म धाते हैं॥
एक बात नई ख़ाब की सबको सुनाते हैं।
होटल में लोग चोरी से खानेको जाते हैं॥ ७॥

अन्तरा।

ग़रीब बेगुनाहों को सभी सताते हैं।
सब खाता दौलतवालों को छिपाते जाते हैं॥
बलदेवप्रसाद काशी वासी कह सुनाते हैं।
भिहरोल खत्री वंश में हम ढाई कहाते हैं॥
एक बात नई ख़ाब की सबको सुनाते हैं।
होटल में लोग चोरी से खानेको जाते हैं॥ ८॥

विदित होकि जो यूरुपियन ख़ान्दानी महाशय अहले बिलायती लन्डन निवासी हैं, सो वह लोग यह बात नहीं चाहते हैं, कि कोई नेटिव आदमी हमारे खाने पीने मे शरीक होकर तवाज़ा अर्थात् जेवनार आनन्द टीफिन इत्यादिकों के समय मे शामिल हों, लेकिन ख़ुशामदी नेटिव अङ्गरेजीदां लोग साहब लोगों के साथ मे, खाना पीना अपनी बड़ी भारी इज्जत समझते हैं, यदि कदाचित शिफारिश से हो भी जांय तो मानो जेण्टिलमैन उनके सब पुरखे पितृ इत्यादिक लोग तर गये।

और इस छोटलके विषय का दुसरा लेख निज लेखनी से लिख करके अपने खु.द हाथ से ता॰ 4-7-3 ई॰ को हिन्दी हितवार्त्ता हालिडे ष्टीट (No 1) कलकत्ता बन्दर के मनेजर बाबू नबोकिशोर चटर्जी के हस्त दिया, और इस लेख की १ कापी अपने हाथ से लिख करके, मासिक हिन्दी सम्पादक पत्र, बाबू दूलीचन्द सेखसरिया, मनेजर, हिन्दूमित्र, साहबगञ्ज, डाकघर सकरीगली, को ता॰ 4-7 3 ई॰ को डांक के द्वार से भेजा, और चौथी इसकी नकल अपने हाथसे लिख करके ब्रङ्क आफ़ बंगाल आगरा खास आगराके खज़ांची हजरत बरतमान सन् अलूह ई॰ में जो बंकके कारपरदाज़ हैं, सो जब वह कलकत्तेमें तशरीफ लाये थे, तब मैंने उनके हवाले किया था, और पांचवी इसकी नकल अपने हाथसे लिख करके और इस पुस्तकमें जो (No. 18) की लेख उपदेश मुद्रित है, सो शार्ट इबारतके साथमें, बज़रिये डांक हाज़ा रजिष्ट्री ग्रदह No. 48 पोष्टाफिस हबड़ाके द्वारासे श्रीमहंराजा साहब बहादुर श्रीकाशी नरेश की सेवामें ता: 19—9—3 ई॰ को रवाना किया था, सो नं॰ 48 का एक नालिजमेंट पोष्टफिसका ता॰ 25—6—3 ई॰ को पाया, और छटवीं छोटल और इस पुस्तकके २१ पृष्ट (No 18) का लेख कौवोंके उपदेशके विषयका संक्षेप इस पुस्तककी इबारत चन्द अपने हाथसे लिख करके बज़रि डांक हाज़ा रजिष्ट्री ग्रदह पोष्टाफिस जनरल No G. 944 के द्वारासे, A. D. Private महंराजा साहब महंराजा अयोध्या श्रीनरेशकी सेवामें रवाना किया था, सो अभीतक No G. 944 एकनालिजमेंट पोष्टाफिसके द्वारेका रसीद नहीं कृतार्थ हुआ है, और सातवीं नकल छोटल खवाब विषयकी मैंने अपने हाथसे लिख करके और किसीको एलावह इसके नहीं दिया है, हे भाईयों, यह तो हमारा मिथ्या स्वप्न है, जिस महाशयको सच्चा स्वप्न तसदीक़ अर्थात् सही करना होय तो ता॰ 16 अगस्त सन् १९०२ ई॰ का सप्ताहिक पत्र श्रीभारतमित्र कलकत्तेके समाचारके फोटोको देखिये, और उस तसवीर को जो कि उसमें मुद्रित है, सो उस शोभायमान बलिहारी चित्र विचित्रोंके द्वारों से देख करके मेरा स्वप्न ख़्वाब को बरतमान फल सच्चा जानिये।

और मैंने इस कलिकाल समयमें महंराजा साहब बहादुर महंराजा जयपुर राजपूताना की प्रशंसा कई अख़बारोंमें पाया, सो क्या? कि आप लन्डनकी जानेके समय और आनेके समय, और वहां जाकरके और फिर भारतमें लौटती यात्रा समयमें अपने खास धर्मकी श्रीठाकुरजीकी पूजा करते हुवे जहाजमें और खास लन्डनमें अत्यन्त भली भांति रक्षा किया है, इस विषयमें आपकी संसारमें बहुतसी प्रशंसा हो रही है, सो इस धर्म्म विषयमें मैंभी महंराजा साहब श्रीमान्

महोदयजीको धर्मके पक्षपर अनेकवार धन्यवाद देकर आपकी विशेष प्रशंसा धर्म विषयमें अस्तुति करता हूं, अत: श्रीमणि मुकुट महाराजा साहिब धर्मात्मावोंके धर्मात्मा और श्रीभारतके महाराजा धर्मरक्षक अथवा परउपकारी सुरेश सोभायमान श्रीभारतके नरेशकी संसारके चारों दिसावोंमें क्या खूब जयपुरके राजपुतानाकी जय जयकार शब्द धुनी आनन्दके साथमें सोभायमान हो रही है।

श्रीवेंकटेश्वर सप्ताहिक समाचार पत्र बम्बई शुक्रवार ता० २४ मार्च सन् १८९९ ई० का यह उपदेश संसारमें प्रसिद्ध है।

—:०:—

अन्यच्च।

(१) लन्डनमें वासकर, पासकर, आवतही शङ्कर सलौने मैंन, मिस्तर कहावेंगे। बूट पतलून, औ कम्फाटर, टोपी डांट, जाकटकी पाकटमें वाचलट कावेंगे + नाविल पढ़ेंगे नये टेबिल बजाय पोर्ट, वाइन पियेंगे, मीट होटलमें खावेंगे + फारसीको छारसी उड़ाय, अंगरेजी वाज, हाय देवनागरी को धूरिमें मिलावेंगे।

(१) सन् १८९४ ई० में, जब मैं नैनीतालमें था, सो एक रोज, मैं एक बेंचपर बैठा था, और उस जगह पर कई यूरुपियन महाशय भी मौजूद थे, सो एक पहाड़ी पुरुष कोट पतलून और अंगरेजी टोपी दीये हुवे, वे इतफाक एक घोड़े को दौड़ाये हुवे चलाजाता था, सो सब यूरुपियन महाशय यह कहने लगे, कि देखो तो सही, यह काले मुंह का नेटिव बन्दर हमारी कापी उत्तारता है, सोहे भाइयो जो खास बिलायती यूरुपियन महाशय शरीफ् खानदानी हैं सो वह लोग इन बातों से बहुत चिढ़ते हैं, सो इस लिये अपनी पुरानी मर्य्यादा किसी महाशय को न त्यागना चाहिये, और न अपना सनातन धर्म्म को छोड़ना चाहिये।

Errata.

अशुद्ध।	शुद्ध।
पृष्ठ द्वितीय दो पंक्ती के बाद।	
श्रुति गावती है विनय तुम्हारी—	श्रुति गावत है विनय तुम्हारी।
पृष्ठ ८ (No. 4) पंक्ती ३ की में—	
कामवकृत—	कामकृत्—कामवक्रत्।

अशुद्ध।	शुद्ध।
पंक्ती ६ की, हरोष अर्थात्—	मेंहरोष।
हारा में, जिनसे, बेमान, दगाबाज, विश्वासघातिक, याने अपने मतलबी, जूवाचोरों से—	
पृष्ठ १२ (No 47) के प्रथम दोहे की पंक्ती मे, सूमनिर दर्द,—	सूम—निरदर्द।
पृष्ठ १७ अन्तरा २ के ३ की पंक्ती मे, मीत सनातन यो डुबाता है जमाना—	मीत सनातन यह डुबाता है जमाना।
पृष्ठ १९ अन्तरा ४ की पंक्ती में, बलदेव प्रसाद मेंहरोच चढ़ाई घर में प्रधाना—	बलदेव प्रसाद मेंहरोच चढ़ाईघर प्रधाना।
पृष्ठ २२ राग काफिया की २ पंक्ती में, धरम की बानी की लिखनी क्या शक्ति कला है जाग—	धरम की बानी लेखनी क्या शक्ति कला है जाग।
पृष्ठ २३ की शेर का (No 24) —	
पृष्ठ २७ विज्ञापन, की ३ पंक्ती मे, याट—	लाट।
पृष्ठ २८ के दोहा के (No 20) की ५ पंक्ती में, दशहिं नवम्बर जानिये, सकाल बिदित प्रचार—	दशहि नवम्बर जानिये, सकलहि बिदित प्रचार।
पृष्ठ ३० बारहवें नाम की पंक्ती के नीचे, तेरहवें नाम में, सनहीराम—	सनेहीराम।
पृष्ठ ३१की अंगरेजी चिट्ठी मे Johnston-gung—	Johnstongunj.
पृष्ठ ३४ आठ पंक्ती के बाद ९ की पंक्तीमें तबहि आई रज्जत सरकारी—	जबहि आइ इज्जत सरकारी।
रजत, अथवा रज्जत अर्थात् सोना, चांदी, इज्जी दर्शनी हुन्डी मोहब्बत की क्या है? याने प्रभु बड़े लार्ड साहब का कमप्लीमेन्ट और प्रभु छोटे लाट, साहब बंगाल की	

अशुद्ध ।	शुद्ध ।
धन्यवाद और चिट्ठियां और प्रभु छोटे लाट साहिब इलाहाबाद राजधानि के आगर की ४ चिट्ठियां हैं, सो इन सब चिट्ठियों का अभी तक भुक्तान नहीं हुआ है, सो क्यों ? याने हसद और रश्क व पश्चाताप जलन करनेवालों के. याने ज़रिये द्वारों से निरुद्ध होकर मेरे उपकार में विघ्न पड़ा है, और हिन्दूस्थान में ना इत्तफ़ाक़ी क्यों फैली ? याने हसद और रश्क के वजह से,—	
पृष्ठ ४० चार नाम के निचे, हेडिंग में मर्चेन्ट से—	मर्चेन्टों से।
पृष्ठ ४४ की होटल के विषय का (No 25) —	

उपदेश ।

इस कलिकाल मे प्रागराज के, निवासी लोग अपने को बहुत धर्म्मात्मा समझते हैं, शोच का विषय यह है कि, इस कलिकाल के प्रथम चरणने निज प्रचण्ड अबोधके बाणों से सज्जनो की बुद्धी को पलट डाला है, ब्राह्मणों के यह धर्म्म हैं, कि गौवों की रक्षा करना, और विधवाओं के धर्म्म इत्यादिकोंकी रक्षा करना, और मंत्रादिक बिद्या इत्यादिकों की शिक्षा लेना, और देना, चाहिये, और क्षत्रियों और वैश्यों के यह धर्म्म हैं कि अपने मातृ पक्ष इत्यादिकों की रक्षा करना चाहिये। खेदका कारण यह है कि एक दिन मुझ से आल्हाराम गोस्वामी उपदेशकने इलाहाबाद के गौशाला की शिकायत किया, कि, यहां की गौशाला का कुछ ठीक प्रबन्ध

नहीं है, मैंने गौवों की रक्षा के प्रबन्धके वास्ते, मैंने गौशाला स्थापित, स्थान कीट गंज मे किया, सो इस्का प्रबन्ध गड़बड़ी लोग गड़ बड़ रखते हैं, सो हे भाइयो गोस्वामीजी का इस्मे कोई दोष नहीं पाया जाता है, क्योंकि आल्हाराम गोस्वामी जीने केवल धर्म्म मार्ग दरसा करके धर्म्म उपदेश किया है, सो उस उपदेश को ग्रहण करना और प्रबन्ध रखना ब्राह्मणों व क्षत्रियों और वैश्यों के धर्म्म हैं, अतः—श्रीगोस्वामी कृत् भजन गो रक्षा उपदेश मंजरी आल्हारमाजीकी, कौन प्रेसमे पन्डित स्वामी दयाल के प्रबन्ध से मुद्रित प्रथम बार यह पोथी एक हजार, माह मई, सन् १८८२ ई० मे हुई है, जिस्का मोल)॥ आना है, यह पुस्तक देखने के क़ाबिल है, सुनते हैं, कि मुद्रा कुछ गौशाला के बाबत इकट्ठा किया गया है, सो वह रुपया किसी लाला जी के द्वारा से किसी बङ्क मे जमा है, और उसका ब्याज दिन बदिन बढ़ता जाता है, क्या खूब, एकदिन मे, जब कि प्रयागराज मे था, तब मै एकदिन, प्रथम जेष्ट संवत १९५८ के दिन मै अकसमात रमता हुआ, गौशाला को देखने के नेम से कीट गंज पहुंचा, सो मैं वहां जाकर क्या देखता हूं, कि ४ गौवें भूखी प्यासी मुख बांधे बिचर रही हैं, सो हे भाइयो, प्रयाग निवासियो, सब सज्जन महाशयों से मैं यह निवेदन करता हूं, कि प्रयाग राजकी गौशाला का प्रबन्ध कुछ ठीक तौर पर नहीं है, सो इस्का प्रबन्ध ठीक तौर से रखना, धर्म्म का नेम सब हिन्दू मात्र वंशों का है, जिस्मे गौवें बेचारी भूखी प्यासी न मरें, और मेरा गौ विषयका उपदेश संसार में प्रसिद्ध है, सो उस धर्म्म उपदेशको प्रसन्नता से स्वीकार करके धारण कीजिये, और प्रयाग आर्य्य सब निवासियों से यह प्रार्थना है, कि गौशाला का प्रबन्ध इस्का बहुत

ठीक तौर पर रखिये, और इस बारे मे श्रीमान पन्डित मदन मोहन मालवीजी बालिस्टर हाई कोर्ट इलाहाबाद को क्या करना चाहिये, याने अङ्गरेज़ी वक़ालतकी बालिस्त्री धारण करके, कुछ सनातन धर्म्म की भी, वक़ालत धर्म्मसे करना चाहिये।

कलकते की गौशाला पिंजड़ापोल का बन्दोबस्त सुनते हैं कि मारवाड़ी वैश्य इत्यादिकों के हाथों से बहुत अच्छा इस समय के अनुसार प्रबन्ध है, मैं यहां पर दोबर्ष से हूं, परन्तु अभीतक गौशाला देखनेका इत्फाक़ नहीं हुआ है, इसलिये यहां के गौशाले का हाल बेगैर देखे भाले मालुम कीये हुवे, कुछ नहीं लिख सक्ता हूं, हां! यतना मेजानता हूं, कि इन्तजाम गौशाले कलकते का बहुत अच्छा सुनाई पड़ता है।

व्याख्यान।

एक मनुष्यने मुझसे यह सवाल किया, कि जब पुरुष का पुनर-बिबाह होता है, तब फिर बाल बिधवा का भी होनाचाहिये, तब बाद इस्के मैने यह उस पुरुषको उत्तर दिया कि, जब बाल बिधवा का, याने पुनर बिबाह हुआ, सो फिर सब वृद्ध बिधवोंका भी पुनर बिबाह होना चाहिये, याने जब वृद्ध बिधवाका पुनर बिबाह हुआ, तब बाद इस्के माता पुत्र मे भी यह सम्बन्ध पुनर बिबाह का होना चाहिये, याने-जब माता पुत्रमे बिबाह हुआ, तब बाद इसके फिर पशु और मनुष्यमे क्या फरक़ रह गया, क्योंकि पूर्व जन्मके महाघोर पापोंसे लड़की बाल बिधवा होती है, सो पूर्व जन्मके अपराधों का मोच इस जन्म मे, बाल बिधवा कर्म्मानुसार होनेके बाद उपाय क्या

है? याने वृत धर्म इत्यादिकों से और सच्चिदानन्द परब्रह्म परमेश्वर मे, लौ लीन होकर केवल ध्यानरूपी चरण पादुका मे, प्रेम भक्ति से साधन रखना चाहिये, यही धर्म कर्म स्त्रीके पतिके मरने के बाद उचित है, और घृत के पकवान भोजन इत्यादिकों को त्याग करके, थोड़ासा भोजन साधन करना चाहिये, देखिये हमारी बिरादरी मे, अब तक यह रेवाज़ क़ायम है, कि जिस स्त्रीका पति मर जाता है, तब वह बिधवा बाद इसके एक साल लंघन करती है, याने केवल दिया बत्ती अर्थात् चिराग़ जलने के बाद संक्षेप साधारण थोड़ा सा भोजन करके, अपनी बसर करती है, और जो बिधवायें दूध, मलाई नित खाती हैं, सो वह स्त्री कुलतारन दोनो कुल मे धब्बा लगासकती हैं, हमारे बिरादरीके लोगोंने लंघन क्यों रखा? इसी कारण से, जिस्मे बिधवा स्त्रीका काया जले, और धर्म बचे, सोहे भाइयो यह भारत खण्ड तपो भूमि पुनीत स्थान है, हम इस बातको बहुत आश्चर्य मानते हैं, सो क्या? याने जो लोग बिधवा का पुनर बिवाह करते हैं, फिर उस बाल बिधवा को कन्यादान देनेवाला कौन पुरुष ठहरता है? याने प्रथम जिसने कन्या दान देकर अपने जमाई का चरण पूजा, फिर उस कन्याका पिता अधिकारी नीतके अनुसार अपनी कन्यापर अधिकार रखने वाला नहीं रहा, क्योंकि कन्यादान देनेसे वह कन्या दूसरेकी गोत्रमें हो गई, और न फिर उस स्त्री बिधवाको उसके ससुर जेठ देवर इत्यादिक अपने घर की स्त्री बहूपोतोहू को दूसरे पुरुषको मरने पर भी नहीं दे सक्ते हैं, सो हे भाइयो जो लोग कि बिधवा का पुनर बिवाह करते हैं, सो वह लोग किस बिधी से करते हैं?

माई लार्ड,

प्रमाण चमत्कार चिन्तामणि, हमारा तुला लग्न में जन्म है, और राज्य चतुर्थ स्थान में है, सो ऋषी मुनी का वाक्य यह प्रमाण के साथ मेरे वास्ते है, कि राज्य चतुर्थ स्थानमें होने से वह पुरुष सब पुरुषोंसे अधिक माननीय पुरुष होता है, और दूसरा प्रमाण वरतमान समयका यह है, कि जनाव आलीजाहा वाइसराय हिन्द बहादुर दाम इकबाल हू', कि और जनाब लफटिनेण्ट गवर्नर साहिब बहादुर बंगाल और मगरबी व शमाली अवध के और, महराजा साहिब बहादुर श्रीकाशी नरेश अथवा श्रीमहराजा साहिब बहादुर श्रीअयोध्यापुरीजी के श्रीनरेशने, इन सब महोदय मान्यवरोंने, इस खाकसारको मान्य इज्जत करके संसार में बुजुर्गी कृतार्थ किया है, सो सब महाशयों से मेरी यह निवेदन है, कि सब ब्राह्मण और क्षत्रियों, और वैश्य इत्यादिकों को यह बात उचित है, कि मेरे उपदेशों को ग्रहण करके मेरा सनमान करें, और इन सब महाशय, उत्तम कुल खान्दान, शरीफ अशराफों को मेरे कलमे बचनी पर खूब अच्छी तरह से ध्यान देना चाहिये, और अज्ञानता अहङ्कार को कुछ पर फेंक करके, मेरे अनुशासन बचन को ग्रहण करके इज्जत के साथ में हमारी आज्ञा को अताअत यह करना चाहिये, सो हे भाईयों हमारा उपदेश आप लोगोंके धर्म्म की रक्षा के वास्ते यह है, सो क्या? याने विधवा फन्ड क़ायम होना चाहिये, और वह रुपया हर् जिले इजलाय गवर्नमेन्ट के खजानों में जमा होना चाहिये, और ईस फन्ड का प्रबन्ध मेरे तअलुक होना चाहिये, यदि कोई पुरुष यह मेरा अनुशासन उपदेश के द्वारा कदाचित कोई न स्वीकार करे, तो जिला हाकिम को यह चाहिये, सो क्या? याने उस पुरुष से बाल विधवा के पुनर विवाह का दस्तखत कराया जावे, याने जो मनुष्य विधवा फन्ड के चन्दा देने में उजुर अथवा इनकार करके ना मनजूर करे तो उसके वास्ते यह अनुशासन हमारी मानना चाहिये।

———:o:———

(No. 26) **ग़ज़ल।**

बतावो मेहरबानो सब हिमाकत से करोगे क्या?
बहुत ईज़ा उठाया हम तकबुर से करोगे क्या?
कठिन तकलीफ को पाया धरम रक्षा के कारण हम।
मेरा कोई नहीं जगमें मेरा खाली अकेला दम॥
मेहरबानी अता होगी या होगी या नहीं होगी।
यही दम से भरोसा है मुलाकातें न फिर होगी॥

यह कहूं नेकी सभों में संग न कोई साथ देता है।
फक़त मन याद करता है श्रीभगवत नाम लेता है॥
नहीं करिये बहाना अब कबूल होवें मेरी बातें।
मुद्दत से भटकता हूं बिचारो यह सबै ज़ातें॥
नहीं खाने को बिधवो के न कपड़ा पास है उनके।
ग़रीबिन को न होना चाहिये कलयुग का डर उनके॥
मिले भारत को हक़ चन्दा बेवों की याद गारी में॥
खज़ानो में जमा होवे हर एक ज़िले सरकारी में।
बलदेव प्रसाद मेहरोत्र श्रढाई घरने क्या किया।
मनकी उमंग तरंग को जग में बिदित किया॥

No. 27

शेर।

व्याख्यान।

यह झूठी बाज़ी न खेलो साहब सुनो यह मेरा कलाम प्यारो ।
जो सत्य वादी हैं खल्क़ अन्दर वह रहते अन्दर रज़ाके यारो ।

शरीफ रईश किस्को कहते हैं? जो अपने इज़्त आबरूह के बराबर, ग़रीब इज़्तदार शरीफ खन्दानी आदमी की इज्जत आबरूह, योने अपने इज़्त आबरूह के बराबर समझे, और इन्सानियत चेः मानी दारद? याने इन्सान के माने क्या है? चूंकि, इन्सान तलफ़ुज़ का दो टूकड़ा करने से, इस लफ़्ज़का यह माने पैदा होता है, इन—सान—, अर्थातु हैवान, नातिक़,— और नातिक़ के माने क्या है? अक़िल-याने, आक़िल अर्थात् बुद्धी, और मनुष्य और पशु में क्या फरक़ है? मनुष्य में ज्ञान अर्थातु बुद्धी प्रवेश होती है, और याने पशुवोंको नहीं, सो आजकल

समय प्रतिकूल याने ज़माना कलिकाल अर्थात् सिया वक्त़ी बर खिलाफ़ से व बाजे२ रईश लोग अज्ञानता और अहङ्कार और द्रव्यके अजीरणके कारण से, इन्सानियत और अशराफ़ियत जानते नहीं हैं, कि यह शय किस चिड़िया का नाम है, याने बाज़२ रईशों को इन्सानियत ज़रा भी छू नहीं गई है, याने हम चुनी दीगर नेस्त, के क़ारण से, बाज़२ लोग पशुके तुल्य हो रहे हैं, याने अपने खु़द ग़रज़ मतलब के आगे दूसरेकी ग़रज़ को नाचीज़ समझते हैं, अगरचेः कोई शख़्स उनके खास मतलब के वास्ते, उनकी फरमाबरदारी मे जावे, तो वह लोग सीधे मुंहसे बात करते हैं, वरना नहीं गुफ़्तगूह् करते हैं।

(No. 28) क़िते:,—

यों तो दुनियां मे पेड़ लाखों हैं दौलत वाले।
उनका बन्दा हूं जो बन्दे हैं मोहब्बत वाले॥

एक छोटा सा क़िस्सा चुटकुले के साथमे निमक मिरचे से पढ़ पढ़ानेवाला और चटपटानेवाला इस समय कलिकालको क्या है?

याने किसी ज़माने से, एक अन्धा बाज़ार मे बैठा हुआ था, सो उस ज़माने मे एक बादशाह की सवारी निकली, सो बादशाह ने, उस अन्धे सूरदासजी से, क्या दरियाफ़्त फरमाया?

याने शीरीं ज़बान से यह कलमा इस्तिमाल किया, और यह मधुर शब्द उच्चारण करके क्या आप पूछते हैं? अजी सूरदासजी साहिब आप क्या बाज़ारमे बैठे हुवे करते हैं? तब बाद दरियाफ़्त फरमाने के, सूरदासजी ने यह उत्तर देकर जवाब दिया, कि यह ख़ाक सार बाज़ारमे, बैठा हुआ मखी मार रहाहै, फ़िर बाद इसके वज़ीर की एक सवारी निकली, तब वज़ीर ने यह दरियाफ़्त

फरमाया, कि अजी सूरदासजी. आप बाज़ार मे बैठे हुवे क्या कर रहे हैं ? तब सूरदासजी ने, यह जवाब दिया, कि यह खाकसार बैठा हुआ, बाज़ार मे. खाक उड़ा रहा है, फिर बाद इसके एक (सईश*) की सवारी एक घोड़ें खचर के ऊपर निकली, तब उस सईश ने ऐंठ खिंठ कर बैठासुरने, यह सूरदास जीमे फठकार करके पूछा, सो क्या ? अरे सुरवा का करत बायरे, तब सूरदासजी ने, यह जवाब देकर, यह उत्तर दिया, सो क्या ? तोहरा केरे मालुम नाहीं होत बाय, अरे रौंवां बैठल बाटी हो, फिर बाद इसके कोई साहिब दरियाफ्त करने को निकले, कि इस बाज़ार की सड़क के राह से, किसकी२ सवारी निकली थी, सो कोई बाज़ार मे नज़र नहीं आया, सिर्फ खाली एक अन्धा बज़ारमें बैठा हुआ देखलाई पड़ा, तब उस अन्धे से उसी शख्सने यह दरियाफ्त किया, कि अजी सूरदासजी, इस बाज़ार से किसकी२ सवारी निकल कर गई है, फिर बाद इसके सूरदास जीने यह जवाब देकर, यह उत्तर दिया, सो क्या ? याने. बादशाह, वज़ीर, और एक सईश, तब बाद इसके उस शख्सने फिर यह पूछा, कि तूतो अन्धा है, तुझे क्यों कर मालुम हुआ, कि कौन बादशाह है ? और कौन सईश है ? तब फिर बाद इसके सूरदास जीने यह उत्तर दिया, कि जब बादशाह की सवारी निकली, तब बादशाहने मुझसे यह दरयाफ़्त् फरमाया, कि अजी सूरदासजी साहिब आप बाज़ारमे बैठे हुवे क्या कर रहे हैं, फिर बाद इसके जब वज़ीर की सवारी निकली तब वज़ीरने मुझसे यह फरमाया,

---

(१) सईश शब्दका दो टुकड़े लफज़, शार्ट करने से यह अर्थ खुलासा होता है, स— अर्थात साज़, ईश अर्थात स्वामी, अथवा घोड़े के साज का स्वामी कौन ? याने सईश।

कि अन्धो सूरदासजी आप बाज़ार मे बैठे हुवे क्या कर रहे हैं, सो हे भाई ! मैने बादशाह और वज़ीरको इस वजह से पहिचाना कि बादशाहने मुझे साहिब का कलमा फरमाया, और वज़ीरने मुझे साहिब नहीं अपनी जवान से इस्तमाल फरमाया, खालो, जी, कह कर रह गये, और सईश गंवार को मैने इस वजह से पहिचाना कि उसने मुझे ग्रख्त् कलमा कहा, ग्ररे सुरवा बैठल का करत बायरे, तब उस ग्रख्सने यह दरयाफ्त् किया, कि अन्धे काए किस्म के होते हैं, फिरबादइसके यह जवाब दिया कि, याने एक आंखका अन्धा और दुसरा हृदयका अन्धा, सो हे भाइयों हृदमे ज्ञान न होने से सो वह मनुष्य मूर्ख अन्धे के तुल्य होता है, याने रुपया पास हुआ, और इल्म पास हुआ, और ल्याकृत न हुई तो वह ग्रख्स बिलकुल हियका अन्धा कहा जायगा ।

---

४८) मौज़ान कुल टोटल इस पुस्तकके चन्दे छपाई पृष्ठ ४० को ।

२) नरायनप्रसाद लेन सूर्य्यमलकी कोठीके (No 4) के मर्चेण्टोंसे पाया ।

१) श्रीमान् बाबू चोखचन्द कालूराम जीसे पाया । ता॰ 18—1—4 ई॰

श्रीमान् बाबू सरदारमल जैसराजजी ओशवालसे पाया, ता॰ 24—1—4 ई॰

२) कालीगोदाम अफीम का चौरस्ता (No 15) की कोठी के मर्चेण्टों से पाया ।

१) श्रीमान् बाबू बागमल बद्रीदास जीसे पाया, ता॰ 18—1—4 ई॰

१) श्रीमान् बाबू शोभाराम शिवदत्त रायजी से पाया
ता॰ 20—1—4 ई॰

१) श्रीमान् बाबू छन्नूलालजी जौहरी ढांकापट्टी
(No 41) से पाया, ता॰ 19—1—4 ई॰

३) जगत सेठका कटरा (No 47) के मर्चेण्टों से पाया।
१) श्रीमान् बाबू हरीसिंह निहालचन्द सिंघी जी से
पाया, ता॰ 23—1—4 ई॰

१) श्रीमान् बाबू जवाहिरमल प्रेमसुखजी सरावगीसे पाया

१) श्रीमान् बाबू प्रतापमल चुन्नीलालजी ओसवाल
डूगरसे पाया।

६) सूर्य्यमलकी कोठी बरतल्लाष्ट्रीट, (No 71) के मर्चेण्टों
से पाया।

४) श्रीमान् बाबू सेवाराम भीमराजजी सिकुतियाका जमा
ह॰ श्रीमान् बाबू भीमराजजी साहिब धर्म्मानुशासन
के प्रेमी महाशयजीसे पाया। ता॰ 3I—1—4 ई॰

२) श्रीमान् लच्छीराम हनुमानप्रसाद जीसे पाया।
ता॰ 28—1—4 ई॰

१) श्रीमान् बाबू हरनन्दराय फूलचन्दजीसे पाया।

१) श्रीमान् बाबू नन्दराम हरदयालजी से पाया।

१) श्रीमान् बाबू मोहनलाल ओङ्कारमल जीसे पाया।
ता॰ 4—2—4 ई॰

५) श्री अफीमके चौरस्तेके पञ्चाईतियों पञ्च सरदार
महाशयों से पाया।
नाम Private, ता॰ 10—2—4 ई॰

७०) मौज़ान कुल टोटल—

Errata.

अशुद्ध ।	शुद्ध ।
पृष्ठ ३४ की पंक्ती मे वुढाई—	बुढाई ।
पृष्ठ ५२ की ८ पंक्ती मे, आल्हारमाजी—	श्रीआल्हारामजी ।
पृष्ठ ५४ की ९ पंक्ती मे, फरती है—	करती है ।
पृष्ठ ५४ की १३ पंक्ती मे, सोहै यह भारत	
भाईयो खण्ड तपी भूमि—	सो है भाइयो यह भारत खण्ड तोपोभूमि ॥
पृष्ठ ५४ की २१ पंक्ती मे वह्‌ पोती हूं—	बहुपती हूं ।
पृष्ठ ५५ की ४ पंक्ती मे, इकवाल हूं—	इकबाल हूं ।
पृष्ठ ५५ की १५ पंक्ती मे, ईस—	इस—
पृष्ठ ५६ की शेर के नीचे की पंक्ती मे	
आक्लिल—	अक्लिल

——:o:——

माई लार्ड, *

(No 29) **दोहा ।**

कम्प्लीमेंट माथे धरो, पारस समभ्यो (१)नाथ *
पारस लोहे को करे, संगहि कञ्चन साथ *
मेरे भले से जानिये, सबको है उपकार *
भारत मे बलदेव को, रहे नाम आगार *

शेर ।

मित्र भाव का काम किया सब मिताई मेरी प्रगट भई *
धन्यबाद प्रभु लाट को भाई, अनुग्रह जगमे प्रगट भई *

(*) लार्ड,—मालिक, खोदा, अर्थात श्रीश्रीनाथजी ।

(१) नाथ,—मालिक ।

नसर ।

मिले अब मुझे जिन्दगी की बसर *
सुनो मेरी यारो न रखिये कसर *
जिगर से विचारो हम दरदी असर *
जहां मे है रोशन हमारी कदर *
इनायत मरहमत अता हो नजर *
हो जिसमे हमेशा बलदेव की गुजर *

—०:*:०—

मुबारक बादी ।

खुशी मे श्रीनाथ को है मुबारक *
मेरी खुश नसीबी को सो है मुबारक *
रहै नाम दुनिया मे रोशन मुबारक *
इबादत खोदा की मेहर है मुबारक *
अदल से यह पैदा जहां मे मुबारक *
खुशी मे मिले हक खुशी की मुबारक *
जो दुशमन मेरे उनको जिल्लत मुबारक *
हो जिसमे खुशी दिलको मेरे मुबारक *
क्या खूब छाई है जगमे मुबारक *
यह शादी मुबारक यह शादी मुबारक *
हमेशा रहै नाम होवै मुबारक *
खोदा की इबादत से मोबिद मुबारक *
बलदेव प्रसाद की क्या है मुबारक *
मैहरीष बर्मान की जग मे मुबारक *

—०:*:०—

एक छोटा सा किस्सा, सङ्गासुर रजपूत दारेका दृष्टान्त क्या है ?

याने किसी जमाने मे, कोई एक बरेठा, अर्थात् धोबी था, सोउसके पास एक गदहा याने बेशाख नदन खच्चर था, सो वह काम क्या करता था, याने कङ्कड़, पत्थर अथवा मट्टीका रोड़ा

सादा करता था, सो यह बरेठा. इसको अपने पुत्रके समान में इसकी अमु जानता था, और बड़े प्यारके साथ इसको सङ्गासुर रजपूत पुकारता था, सो यह जब सङ्गासुर रजपूत याने मौत पाकर अपनी क़ज़ा से जब मर गया, तब बाद अज़ां चूंकि इस जानवर का मालिक एक बहुत ग़म नाक होकर एक हज्जामके पास गया, और उस हज्जाम से कहा कि, तू मेरी हजामत बनादे, तब बाद इसके उस हज्जामने उस बरेठे से, यह बात दरियाफ़त् किया, सो क्या? याने यह बात आज नई क्यों? तब बाद इसके उस बरेठेने यह उत्तर दिया कि क्या तुमने यह बात सुना नहीं? याने सङ्गासुर मर गया, तब बाद इसके उस हज्जामने यह उत्तर दिया कि प्रथम मैं अपनी हजामत बनवाऊंगा, फिर बाद इसके मैं, तुम्हारी बनाऊंगा, क्यो कि सङ्गासुर का प्रथम शोक मैं मनाऊंगा, ख़ैर बाद इसके वह हज्जामने क्या किया, याने अपनी और उसकी हजामत बनाकर जब फ़ारिग़ हुआ, तब बाद इसके वह हज्जाम अपनी मोछ मुड़ाये हुये, एक बनिये बक़ाल की दूकान पर सौदा लेनेको गया, तब बाद इसके, उस बक़ालने, उस हज्जामसे पूछा कि तुमने मोछ क्यों मुड़ाया? तब बाद इसके उस हज्जामने यह उत्तर दिया, सो क्या? याने तुमने यह बात किसी शख़्ससे सुना नहीं, तब उस मनुष्य बनियेने न यह उत्तर देकर जवाब दिया कि, मैंने कुछ नहीं सुना, तब बाद इसके वह हज्जाम शोकातुर होकर एक बड़े ग़मग़ीन के साथ से यह बात धीरे से आह भरी उच्चारण किया, सो क्या? याने सङ्गासुर मर गया, तब उस बक़ालने उस हज्जाम से कहा कि तू भी मेरी मोछ मूड़ दे, फिर बाद इसके वह बक़ाल अपनी ख़ास हजामत बनवाकर अपनी दूकान पर बैठा, फिर बाद इसके एक कानिसिबिल पुलिस का आदमी, उस बनिये के दूकान पर सौदा लेने को गया, तब बाद इसके उस पुलिस के आदमीने उस बक़ालसे यह बात दरियाफ़्त किया, सो क्या? याने तुमने मोछ क्यों मुड़ाया? तब बाद इसके उस बनियेंने यह उत्तर दिया, क्या तुमने यह सुना नहीं? याने सङ्गासुर मर गया, तब उस पुलिस के आदमीने कहा कि मैं भी अपनी मोछ मुड़ा डालूं, फिर बाद इसके वह चपरासी पुलिसका अपनी मोछ मुड़ाकर कोतवाली में गया फिर बाद अज़ां इसके, कोतवाल साहिबने उस कानिसिबिल से पूछा कि तुमने मोछ क्यों मुड़ाया है, तब बाद इसके उस मातहत चपरासीने रपोर्ट देकर यह जवाब दिया कि हजूर सङ्गासुर मर गया, तब बाद इसके कोतवाल साहिबने कहा कि मैंभी अपनी डाढ़ी मोछ मुड़ा डालूं, फिर बाद इसके, कोतवाल साहिब अपनी डाढ़ी मोछ मुड़ा कर वज़ीर आज़मकी दरबार में हाज़िर हुये, तब बाद इसके वज़ीर आज़मने कोतवाल साहिब को देख कर यह जवाब तलब किया, कि तुमने मोछ डाढ़ी क्यों मुड़ाया है? तब बाद इसके कोतवाल साहिबने यह उत्तर दियाकि हज़ूर सङ्गासुर मर गया, फिर बाद इसके वज़ीर आज़मने एक हज्जाम को बुलाकर अपनी डाढ़ी मोछ सब मुड़ाकर

बादशाह सलामत के दरबार में अपनी तशरीफ लेगये, फिर बाद इसके वजीर आज़म से, यह जवाब तलब फरमाया, सो क्या ? याने तुमने डाढ़ी मोछ क्यों मुड़ाया, फिर बाद इसके वज़ीर आज़मने यह जवाब दिया कि हजूर सङ्गासुर रईश आज़म मर गया, फिर बाद इसके बादशाह भी गम से भरे हुवे डाढी मोछ मुड़ा कर अपने खास महल शरीफमें गये, फिर बाद इसके बेगमसाहिबाहने, यह दरियाफ्त फरमाया, कि आपने डाढी मोछ मुड़ाकर इसकदर गमनाक क्यों कर हुवे हैं ? तब बाद इसके बादशाहने गम की भरी हुई आह खींचकर यह जवाब दिया, सो क्या ?। याने सङ्गासुर रईश आज़म मर गया, फिर बाद इसके। बीबी बेगम साहिबह अक़िलमन्दने बादशाह सलामतसे यह दरियाफ्त फरमाया, सो क्या ? याने सङ्गासुर रईश आज़म कौन था ?

तब बाद इसके बादशाहने यह उत्तर दिया कि मुझे मालुम नहीं कि वह कौन था, फिर बाद इसके बादशाहने वज़ीर आज़म से दरियाफ्त फरमाया, तब वज़ीर आज़मने यह जवाब दिया कि हजूर मुझे भी मुतलक़ मालुम नहीं, कि सङ्गासुर कौन था, फिर बाद इसके वज़ीर आज़मने दरजे बदरजे से सभों से तहकीकात करके दरियाफ्त फरमाया, याने फिर बाद इसके अलक़िस्सा यह साबित हुआ कि सङ्गासुर रईश आज़म नहीं था, बल्कि एक धोबी का लदुवा गदहा था, फिर बाद इसके वज़ीर आज़मने यह बादशाह सलामत से रपोर्ट किया, सो क्या ? याने खता माफ़ फरमाइये, सङ्गासुर रईश आज़म नहीं था, तब बाद इसके बादशाहने पूछा कि वह कौन था ? तब वज़ीरने जवाब फरमाया, कि हजूर एक धोबीका लदुवा ख़चर पशु सङ्गासुर था, तब बाद इसके बादशाहने उस धोबी बरेठे को तलब फरमाया, फिर बाद इसके जब वह बरेठा हाज़िर हुआ, तब वह धोबी हजूर के साम्हने कबूल कीया, कि हजूर सङ्गासुर मोर मरगैल, तब बाद इसके बादशाह सलामतने रहम खाकर पूछा, सो क्या ? याने तुमने इलाज उसका क्या कुछ नहीं किया ? तब उस बरेठेने जवाब दिया

कि हुज़ूर मैने ओकार इलाज दवा बहुत कीली, तब बादशाहने कहा कि तुमने किस का इलाज किया, जो वह मर गया, तब फिर बाद इसके उस बरठेने यह उत्तर दिया कि हुज़ूर एक बड़े नामी ग्रामी हकीम का इलाज कीली, तब बाद इसके बादशाह ने यह जवाब दिया कि वह हकीम साहिब का नाम क्या था, फिर बाद इसके उस बरठेने यह उत्तर दिया कि हुज़ूर हकीम साहिब का नाम यह रहल, याने हम चुंनी दीगरनेस्त साहिब, फिर बाद इसके हम चुनी दीगरनेस्त साहिब को बादशाह सलामत ने तलब फरमाया, और यह बाद इसके जवाब तलब किया, सो क्या ? याने तुम किस मर्ज़ की दवा दी ? और तुमने कैसा इलाज किया कि, सह्रासुर रजपूत खूचर लह्‌ इस बरठे का मर गया, फिर बाद इसके हम चुंनी दीगरनेस्तने यह जवाब दिया, कि मैंने उसको बहुत अच्छा परचा इलाज का दिया था, मगर अफसोस है, कि इस नेकीवक़्त ने अपने खूचर का इलाज किया नहीं, फिर बाद इसके हकीम साहिब से उसके इलाज का परचा तलब करके वज़ीर आज़म को यह हुकुम दिया कि यह पारचा इलाज का मेरे रूह बरूह पढ़ो, फिर बाद इसके वह परचा इलाज का बादशाह को सुनाया गया, सो क्या ? याने उस पारचा मे यह मिसरा लिखा हुवा था—.

पुरा चौथा प्रमाण ।

नसर

मुलेठी सुनक्का वखतमी लसोरे ।
मिला करके मिसरीमे सब थोड़े थोड़े ॥
पियो जोश देकरके यह सुबह् शाम ।
कहां की थी खांसी कहां का ज़ोकाम ॥

फिर बाद इसके बादशाहने हकीम साहिब से जवाब तलब किया, कि क्या उसको खांसी व ज़ोकाम था, तब हकीम साहिबने जवाब दिया कि हां हजूर, उसको अकिलके अजीरणसे रोग खांसी व ज़ोकाम पैदा हुआ था, तब बादशाह ने उस बरेठे से जवाब तलब किया कि तुमने इस परचे के बमोजिब इलाज किया था नहीं किया ? फिर बाद इसके उस बरेठेने यह उत्तर दिया कि हज़ूर इस दवाके पारचेसे हमार रजपूत सङ्घासुर मरगैल, फिर बाद इसके बादशाह खफा होकर यह कहा कि अच्छा हुआ कि वह बरचोद मर गया, चुप रहो खामोश रहो, हम मुकद्दमा दायर करके इसका फैसला करेंगे, फिर बाद इसके बादशाह सलामत ने, हम चुंनो दीगरनेस्त हकीम साहिब पर पांच हज़ार ठयकनाती हुई गिन्नियां नकद जुरबाना किया, फिर बाद इसके हकीम साहिब ने उज़ुर पेश किया, मगर बादशाह ने उजुरदारी खारीज कर दिया। तब बाद इसके हकीम साहिबने पांच हज़ार रुपया दाखिल सरकार मे करके यह नोटिस संसार मे दिया, सो क्या ? याने, खोटा किस को क्या न दे ? याने हां मे हां मिलाने वालेको मुनसफी का आज़ार,—

श्रीकाशि निवासी, बलदेवप्रसाद, मेहरोत्र अढ़ाई घरस्य, बर्म्मणः श्री श्रीनाथ जीकी विनय ध्यान कृतः।

मासिक नाट्यपत्र प्रयाग राजके ता० १ अक्टूबर सन १८०१ ई० को यह लेख मुद्रित हो चुका है, सो सब महाशयोंको पुनि पुनर्वार यह लेख संसार मे प्रसिद्ध करता हूं, देखलाने को प्रमाण के साथ।

No 30) **ग़ज़ल ।**

श्रीसांवलिया मद्दं सावला मुकुन्दलाल है*
घुंघुर वाले बाल सुन्दर बाँके लाल है*
शीश मुकुट मोर मोहन तिलक भाल है*
कानन कुण्डल शोभित मणि हीरा लाल है*
गले में विराजमान अनमोल माल है*
हाथ में बंशी को लिये नन्दलाल है*
नाचत गावत आवत नित नई चाल है*
पीताम्बर की काछनी काछे कृष्ण बाल है*
रसीली बांकी चितवन मोहित कमाल है*
चरण कमल की झांकी तो खूबै जमाल है*
घन घोर घटा अङ्ग की नीलम मिसाल है*
भक्तों को दान देता है भक्ती विशाल है*
हरवक्त कृष्ण जी के चरण में खयाल है*
बलदेव काशी बासी दरश से निहाल है*

खल परिचय उपदेश ।

दोहा ।

दैत्यन मन्त्री जानिये, खल कुशील परमान ।
कह बलदेव सुशीलता, धरम मूल की खान ॥
प्रथमहिं श्रीगणेश मनाऊं । खल समाज की कथा सुनाऊं ॥
अधम खलनको लाज न होई । खलकुल की अनीति हठ सोई ॥

खल समाज का अधरम खेला। रण्डीबाजी का नित मेला॥
खल देखहिं काहू की बिपती। हिय कठोर से होवहिं कुमती॥
खल समूह के जितने भ्राता। असुर समान होत सब बाता॥
खल के बचन कुठार समाना। मुख से बोल भयङ्कर नाना॥
खल समाज की यह प्रभुताई। अपने स्वारथ करहिं मिताई॥
होहिं महाजन धनहिं चोराई। ये नहिं जानहिं पीर पराई॥
सुधहु पाय खल जग बौराई। पर उपकार होइ नहिं राई॥
लिखत लेखनी थकित बिचारी। खल नहिं होते पर उपकारी॥
बुद्धि भ्रष्ट सब खल जन केरी। सत्य बानि सुनु सज्जन मेरी॥
जितने हाकिम सब संसारा। बिनय करत हौं बारम्बारा॥
जितने राजा हैं गुणवारे। करौं प्रणाम अनेक प्रकारे॥
मैं शुभचिन्तक यह जग माहीं। मिटै दोष गुण होय अबाहीं॥

दोहा।

मैं चाहत सब को भलो, अनहित चाह न होय।
शुभचिन्तक बलदेवको, * बुरा न चेतहि कोय॥
निज माता के चरण सों, जो नर भक्ति अपार।
हिन बानी बलदेवको, सोहै मित्र हमार॥
कलियुग में लखिये सदा, अज्ञानिन की खानि।
भारत हितु बलदेवको, जानैं सकल जहान॥
शुभचिन्तक बलदेव यह, बर्मन कुल सर नाम।
बिश्वनाथ काशी पुरी, जहँ मेरो है धाम॥
मेहरोत्र कुल विदित है, सेवत प्राग निवास।
खत्रि बंश बलदेव यह, अस्म अढ़ाई खास॥

---

* मैं किसीका दिलसे बुरा नहीं चाहता हुं, फिर इलाहाबाद और कलकत्ते की खत्री आपसिने हमारी इतनी इज्जत क्यों किया ?

महाशयो !

और अब यह सुनते हैं कि, इस हिन्दूस्थान का पुनीत बादी फूट फल सब जगह जा बजा हर एक टापुवो के स्थानों में सौदागरी के हाथों से पहुंच गया है, सो क्या ? यानि वहां यह फल नहीं पैदा होता था, सो बहुत अच्छा हुवा कि यहां का प्रसाद बादी फूट फल हर एक टापुवों में जा पहुंचा है, और जा बजा फैल गया है, सो अब ख़ास कर लोग हिन्दूस्थान के फूट बादी फल को यानि पहुंच जाने से, बख़ूबी स्वाद और लज़त के साथमें खा रहे हैं, वाह ! वाह !! वाह !!! क्या लज्जतदार हमारे इस हिन्दूस्थान का बादी फूट फलकी तारीफ चारों तरफ से बज़रिये बिलायती टेली याफिकों के हाथों से सुनाई देरहा है।

इस पुस्तक के १४ पृष्ठ से जो गौके विषय में हमारा व्याख्यान हुवा है, सो जिन महाशयों को इस विषय में, बख़ूबी निर्णय करना होय, (सो यह दो * पुस्तकें,) मुरादाबाद के छापे खाने से, यानि इन्द्रमणि स्वर्ग निवासी जीके शिष्य पण्डित श्रीमान् जगन्नाथ जीके हाथसे मगालिवे,—

प्रथम पुस्तक—मोहम्मद सर जीवन चरित्र। दाम ॥)

द्वितीय पुस्तक—इन्द्रवज्र तर्जुमा यानि क़ुरान शरीफ। दाम २॥)

Errata.

अशुद्ध	शुद्ध
पृष्ठ ५७ के १० पंक्ती के बाद (No 28) को फिर पंक्ती में, यों तो दुनियां में पेड़ लाखों हैं दौलतवाले,	यों तो दुनियांमें पड़े लाखों हैं दौलतवाले
पृष्ठ ५९ के चन्दे के नीचे मीज़ान के दो पंक्तीके नीचे,	
श्रीमान् बाबू सरदारमल जैसराजजी ओश वाल से पाया,	१) श्रीमान् बाबू सरदारमल जैसराजजी ओशवाल से पाया,

---

*सो यह दोनो पुस्तकें देखने के क़ाबिल हैं।

अशुद्ध	शुद्ध
पृष्ठ ५९ की चन्दे की मीजान की ३ पङ्क्ती में कालीगोदाम अफीम का चौरस्ता (No 15)	कालो गोदाम अफीम का चौरस्ता (No 12)
पृष्ठ ६३ की १४।१५ पंक्तीमें, गमगीन के कै	गमगीनके,
और पङ्क्ती २८ में साहिबवे,	साहिबने,

ता० २० फरवरी सन् १९०४ ई० को, भारतमित्र ने अपने एक क्रोड़पत्र में, श्रीरामायण तुलसीकृत की एक चित्र उस समय का याने जिस समय मे, श्री काग भशुन्ड जीने, गरुड़, और कौवों, और बकुलो इत्यादिको को सम्वाद सुनाया था, सो उस समय का एक फोटो संसार में, मुद्रित करके अपने सप्ताहिक पत्रके द्वारों से यह प्रसिद्ध प्रमाण दिखलाया है, सो क्या? याने आपके बारीकी कलाका तात्पर्य्य यह है, कि किसी समय मे काग भशुन्ड जीने सब पक्षियो को उपदेश के द्वारो से सम्वाद किया था, सो इस कलिकाल मे, बनदेव[illegible] मिहरोत २।। घरने याने बकुलों और कौवों को इस बरतमान समय मे यह उपदेश किया है, सो क्या? याने ताक् धिनाधिन्ता,—

और यह सुनते है कि जिन जिन वैष्णव के कटरे में, अलतरोई फलिहार के वास्ते बिकती है, सो वह लोग अपनी यह सफाई देखलाते हैं, सो क्या? याने वह आमदनी खैरातें करदी जाती हैं, सो यह बात बहुत ठीक है, याने इस आमदनी को अपने मतलब मे, किसी कार्य्यके वास्ते स्वीकार तो किया, याने एक छोटा सा दृष्टान्त यह संसार मे विदित है, सो क्या? याने गुड खांय और गुलगुले का परहेज करें, बे:शक् यह कहां लिखा हुआ है, याने मुफ़्त का पैसे दान पुण्य अथवा खैरात किया जाता है, न कि पापण की आमदनि यो कमाव के हांगसे होना चाहिये।

और मैने इस अधमासुर कलयुग का इस संसार में मुहं काला और बतीसों दांत खट्टा कर दिया, और याने ज़बान को निगोड़े की चटपटो कड़वई के साथ मे, पटपटानेवाली कर दिया, सो

किस तरकीब से ? याने मिरचा सन्तोष रूपी कचुवाखा करके, और अन्याई रूपी अमली की चटनी की खटाई के हारों से याने यह किया, और मैंने इस कलिकाल कमवक़्त सियावक़्ती अफ़-लाक गरदिश के ज़माने का, अपने सबुर का इलाज इर्साज़िन्दाने बसरी सामानोमें मह्वूसका बख़ूबी इस कलकते में किया,—

चूंकि क़बल इसके कायस्थ लोग शराब पीते थे, सो इलाहाबाद के बाज़ बाज़ कायस्थ लोगोंने इसको ख़राब समझ करके बिलकुल तर्क कर दिया है, सो अब बाज़ बाज़ खत्री अमीर लोग सौहिक़या कायस्थ लोगों के मेल जोल के वजह से, जो यह क़ौम कभी ख़्वाब अथवा स्वप्न में भी कभी शराब नहीं पीती थी, सो इस क़ौमके बाज़ बाज़ लोग कस व न.कस खुलासा पीने लगे हैं, क्योंकि डरतो किसी का इस क़ौमके लोगों को रहा नहीं है, इस सबब से अब लोग मन मानी घरजानी बात करने लगे हैं, इस बात को मैंने अपने आंखों से खुद देखा, और कानों से इलाहाबाद में ख़ास करके सुना है, याने आयं वांयं सांय बकते हुवे पाया है, मैं जानता हूं कि इस बात को बहुतेरे प्रयाग निवासी लोग खुलासा जानते हैं, हमारी अनुशासन यह है, सो क्या ? याने हमारी बिरादरी मे शराब का पीना बिलकुल ना जायज़ है, याने जो शख़्स शराब पीता होवे, सो वह पुरुष बिरादरी से ख़ारिज किया जावे,—

वाज़ह होकि हमारा भी कायस्थ लोगों का और मुसलमानी लोगों का बहुत दिन तक साथ मुलाज़मी पेशों में रहा है, एक छोटा सा प्रमाण पुराचीण किसी ज़माने का दोहा यह है, सो क्या ? याने,—

दोहा ।

जो रहीम उत्तम प्रक्षत, क्या कर सके कुसङ्ग ।
मलिया गिर विष व्यापे नहीं, लपटे रहत भुजङ्ग ॥

मै केवल श्री शिवजी की बूटी यानै भङ्ग कभी कभी दोस्तों के वजह से बाज, वक़्त इतफाक़ पड़ जाने से पी लेता हूं, वरना हमेशा मामूली नशा नहीं,—

एक छोटासा दृष्टान्त कहानी के द्वारोंसे व्याख्यान क्या है ?

यानै ;किसी समय मे मैंने एक कहानी किसी की जवानी सुनाया सो क्या ? यानै जब श्रीभारतेश्वरीजी स्वर्ग वासिनीजी मिरत लोक में थीं, तब किसी समय में लन्डन टापू के ~~जंगल में हवा खा~~नै को निकल गईं, सो महरानीजीने क्या देखा ? यानै एक लकड़ीहारा सिर पर बोझ रखे हुवे दूरदराज़ से चला आता था, फिर बाद इस्कै वह अपना बोझ लकड़ी का सिर पर से उतार करकै सुस्ता रहाथा, सो श्रीदयालनीजीनै उस लकड़िहारेकी तरफ क्रपा कटाक्ष से देखा, और उससे कहा कि तू अपने लकड़ी का बोझ तू मेरी गाड़ी पर रख दे, सो श्री भारतेश्वरीजीनै, उस लकड़िहारे का बोझ अपने गाड़ी पर रखा लिया, और उस बेचारे ग़रीब को गाड़ी पर बैठा लिया, यानै जब वह लकड़िहारे का झोपड़ी के निकट आगया, तब श्रीभारतेश्वरीजीनै, उस लकड़िहारे का बोझ उसके झोपड़ी के क़रीब उतरवा दिया, और श्री भारतेश्वरीजीनै उस लकड़िहारे के उपर दया करकै उसके ग़रीबी को दूर कर दिया, सो हे भाईयो मैंने, बनारस—ईलाहाबाद—कानपुर—इत्यादिक शहरों में क्या देखा ? जहां किसी रईशनै, मिन्युसुपुल्टी का ओहदा अनरेरी मजेष्ट्रटी का पाया, सो बाज़र लोगों के पेर ज़मीन पर सीधे नहीं पड़ते हैं, और मनमानी घर जानी क्या करते हैं, यानै अक्सर ग़रीबों को सताया करते हैं, और अक्सर मैंने पुलिस के ओहदेदारों को जो लोग कि हिन्दस्थानी शरीफ खान्दानी हैं, सो वह लोग अशराफियत से रहते हैं, वरना जो लोग कि शरीफ नहीं हैं, सो वह लोग बहुत अफलातूनी के साथ मे, दुन्द मचाते हैं, फिर बाद मैंने अक्सर कई इलाक़ाय में क्या देखा, यानै जिस पुलिस के आदमीनै अन्धेर मचाया, फिर उस्का नतीजा क्या हुआ ? यानै बलन्द सितारे से मध्यम सितारा हो जाता है, सो हे भाईयों इस दृष्टान्त के द्वारा से मेरा तातपर्य्य यह है, कि जो लोग शरीफ खान्दानी हैं, सो वह लोग

अपनी अशराफियत को कभी नहीं छोड़ते हैं, यानें इस संसार में दो प्रकृत के पुरुष पैदा हैं, यानें एक उत्तम सुर प्रकृत और दूसरे असुर नकिष्ट प्रकृत के होते हैं, यानें जो श्रेष्ट धर्मात्मा पुरुष होते हैं, सो जो मनुष्य दरिया में डूबता है, सो उस्के प्राण को बचा लेते हैं, और दुष्ट जीव पुरुष कौन हैं ? यानें जो दरियाह् में न डूबता होय, सो उस पुरुष को जबरन दुष्टता के कारण से पकड धकड़, अकड़ करके डूबो देते हैं, क्यों कि उनके चित की यही प्रतिज्ञा है, जैसे कि एक छोटा सा दृष्टान्त यह है, कि जब मेरे नाना यानें लाला सदासुख टन्डन २॥ घर जो स्वर्ग निवासी जब इस मिरतलोक में थे, तब मैंनें उनकी ज़बानी यह बात सुना था, सो क्या ? यानें कोई खत्री इलाहाबाद में (M. Dass.) थे, सो वह शुरू अङ्गरेज़ी अमलदारी गदर के ज़माने में, क़सूर या बिला क़सूर से पकड़े गये, सो सरकारने उनको बागी समझ करके यानें फांसी का हुक्म दिया था, बाद इस्के दारागंज इलाहाबाद के रईस आज़म धर्मात्मा बाबू पीरूमलजी साहिब के बाबू राधारमनजी साहिबनें यानें उनको फांसीसे बचाया था, सो यह जस अब तक बाज़ २ लोग यदि जो पुराने आदमी होंगे, सो मैं यह आशा करता हूं, कि वह लोग बखूबी जानते होंगे, सो है भाईयो एसे रईसों में से हज़ार मे दो चार निकलैंगे, वरना बाकी इस संसार से एसे पर उपकारी धर्मात्मा लोग उठ गये, सो हे भाईयो ! एक रईश वह थे, जो जिन्होंने (M. Dass.) के प्राण की रक्षा किया था, अब एक रईश वह लोग बैष्णव हैं, जो कि गौ विधवायें अनाथ लावारिशान के धर्म और प्राणके रक्षा के हेतु का, यानें निज मेरे उपदेशों का निरादर करके मेरे आत्माको सताया, और बाद इस्के हमारी हतक इज्जत किया, जिन बैष्णव लोगोंने मेरे निज ज्ञात मात पक्ष उपदेश का अपमान करके. मेरा निरादरे किया, सो वह लोग बैष्णव नहीं हैं, बलकि वह लोग रुपये से मिथ्या पाखण्ड संसार में सबको देखलानेवाले हैं, यानें मैं भी एक धर्म भ्रष्टी श्री १०८ बेटीजी महराणी श्रीकाशीजीके श्रीगोपाल लालजीके मन्दिरके शिष्य विधवाका एकलौता पुत्र यानें निज माताका चरण सेवक हूं, सो इलाहाबाद और कलकत्तेकी खत्री सभापतिने, यानें उस्के चरण की सेवा में, मेरा विघ्न क्यों डाला ? सो मैं यानें दो बरससे निज माताकी सेवा से मह्रूम हूं, मेरे पिता की दो शादी हुई थी, यानें पहीली शादी लाला लालबिहारी लालजी पक्के ४ घर खन्ना एकाउन्टेन्ट पिन्सिन याफ्तह् इलाहाबाद बङ्कके सगे बहिन्दोई लाला सीतलप्रसाद टन्डन २॥ घर स्वर्ग निवासी थे, सो इनकी सगी बहिन मेरी प्रथम माता थीं, सो इनके भी एक एकलौता पुत्र था, सो यह मेरे स्वर्गनिवासी भाईके लड़केवाले श्रीकाशीजीमे रहते हैं, सो मेरे भतिजे का नाम चि० सर्जू प्रसाद है, सो वह बनारस के बंङ्क आफ बङ्गाल में काम करता है, सुना है कि उस्के एक पुत्र पैदा हुआ है, सो इश्वर उसको चीरंजीव रखे, और मेरे पिता की

दूसरी शादी लाला सदासुख टन्डन २॥ घर ज्ञानी स्वर्ग निवासी की पुत्री से हुई थी, जिस्का मैं पुत्र उपदेशक संसार मे प्रसिद्ध हूं, जब मैं एक साल भर का हुआ था, तब याने मेरे पिताजी का स्वर्ग निवास हुआ था, और मेरे खास माताजी के सगे भाईके लड़की का लड़का, जनाब राय लाला शिव प्रसादजी बहादुर रईश कानपुर के सगे भाई की सगी पोती व्याहा है, और जनाब मौसूफ राय साहिब बहादुर की सगी भतीजी मेरे सगे ताऊ के लडके को व्याही थी, और हमारे जो प्रथम माताजीके पुत्र सुखफ्का की, और खास मेरी याने हम दोनों भाई की एक घर मे शादी हुई है, याने लछीमल बिन्द्रावन कपूर २॥ घर दो हकीकी भाई मिरजापुर के निवासी थे, सो लछीमल की सगी पोती मेरी प्रथम माताजी के पुत्र को व्याही है, और लाला लछीमलके सगे भाई लाला बिन्द्रावन कपूर २॥ घरकी पोती मुझे व्याही है, और इनका एक पोता याने मेरे सगे चचिया ससुर का लडका, मेरा साला, याने राय लाला रामचरन दास बहादुर रईश कोटाधीस इलाहाबाद खत्री सभापतिके सगे बहिन्दोईके सगे दामाद की बहिनको व्याहा है, सो हे भाईयो, मेरे पिता को ३५॥ वर्ष के निकट होता है, याने स्वर्ग प्राप्त हुवे, सो जब से मेरी माताजीने अपने धर्म की रक्षा करके मुझे पाला है, याने २५ वर्ष से उसने यह अपने धर्मकी रक्षा किया है, सो क्या? यानि ३ हफ्ता अन्न को त्याग करके फल फूल रामदाना फलिहार इत्यादिकोका भोजनकरके अपनी बसर कियाहै, और एक हफ्ता अन्न भोजन संक्षेप करके अपनी बसर किया है, और वह कलके पानीसे परहेज़ रखती थी, सो मैं कुवे का पानी अपने हाथ से भर करके लाता था, तब वह पानी पवित्र को अपने खर्च मे लाती थी, सो मेरी वृद्ध माताजीके कोमल आत्माको क्यो सताया? क्योकि इलाहाबादकी जितनी बिधवायें कोटाधीश की जो हैं, सो उनलोगो से वह अपना चरण पूजानेवाली है, सो दो बरस से उस्के चरण की सेवा से मै महरूम होकर, याने इस बेसरोसामानीमे महबूस क्यो किया गया? और हमारे उपकार मे इलाहाबाद की खत्री सभापति और कलकत्ते की खत्री सभापतिने क्यो बाधा डाला? और उस्के चरण की सेवा में, क्यों हमारा विघ्न डाला? और मैं इस क़दर माननीय हूं, सो मेरी बेइज्जतीके साथ मे, मेरी हतक इज्जत क्यों किया? याने जिस बैष्णव द्रव्याधीश खत्रीने हमारे मातपक्ष उपदेश का अपमान करके हमारा निरादर किया है, सो सो वह बैष्णवलोग खत्री नहीं है बल्कि वह संसार मे बडे भारी पाखण्ड को रुपये के बल से देखलानेवाले हैं, और वह बाल बिधवावोके पुनर विवाह के बारे मे अनर्थ करनेवाले हैं,

सो हे भाइयो ! परमेश्वर से सब को डरना चाहिये, क्योंकि इस श्रृष्टिका रचनेवाला कोई परमात्मा सर्वज्ञ व्यापक ब्रह्मरूप निरङ्कार और आकार है, याने जो लोग निरङ्कार से देखते हैं, उसके लिये वह निरङ्कार है, और जो लोग आकार से देखते हैं, सो वह उनके ज्ञान बुद्धीके अनुसार वह आकार है, याने जैसे कि पुरुष खेलौना को बनाता है, और फिर वह तोड़, फोड़ डालता है, वैसेही परमेश्वर को जानना चाहिये, कि हम लोग भी देह-धारी उस परमात्मा ईश्वर के सम्पूर्ण खेलौने के मानिन्द हैं, याने जब तक उसकी इच्छा है, तब तक वह देह धारी पुरुष को इस मिरत लोक संसार में खेलता है, फिर बाद इसके ख़ाक में मिला देता है, सो हे भाइयो ! इस मिरत लोकमें बहुत अहङ्कार से उबलना और तपना अच्छा नहीं है, याने ~~अन्त में बहुत~~सा उबलना और तपना आख़िरस्त में मिट जाता हैं, जैसे याने हवाके झपेटे से चिराग़ गुल हो जाता है, और याने पानीका बुल्ला मिट जाती है।

(No. 31) पद।

प्रमाण ज्योतिष का हम सब को सुनाते हैं।
चमत्कार चिन्तामणि से फलको जनाते हैं॥
औऋषि मुनी का वाक्य जगमें लखाते हैं।
संसार को ईश्वर से भलाई मनाते हैं॥
क्यों कर नहीं हैं मानते ऋषी मुनी को लोग।
ईमान धरम छोड़के क्या करते सुख भोग॥

* याने चश्म खोरा बैठा हो चौथे अस्थान मे।
वह अधिक † माननी पुरुष पैदा जहांन मे॥
भक्तों को किया मैंने क्या हो खूब निरादर।
संसार में धिक्कार है धिक्कार बिरादर॥
नीत को मानैं नहीं सुनौं तो गौर कर।
अनीत को क्या मानते यों अहङ्कार* कर*॥
पश्चिम उत्तर अवध के प्रभु लाटने दिया।
चार चिट्ठी ‡ आनर की मुझे अता किया॥
बङ्गाल के प्रभु लाट ने मेरी इज्जत किया।
क्या क्या खूब लोगों ने कपट हसद किया॥
‡ काम्पलीमेण्ट प्रभु मेरे लार्ड ने दिया।
~~अपन्वर्न~~ मेरी भक्ती को जगमें बिदित दिया॥
सब नातेदार न मानते धरम को त्यागके।
बलदेव प्रसाद मेहरोत्र को गरीब जानके॥

---

(१) नवग्रह सितारों के नाम फुट नोट फारसी और हिन्दी में यह हैं १ शम्स अर्थात् सूर्य्य, २ कमर अर्थातु इन्दु, ३ मीरिख़ अर्थातु मङ्गल, ४ अतारिद अर्थातु बुध, ५ मुश्तरी अर्थात् गुरु, ६ ज़ोहरा, अथवा चश्मख़ोरा अर्थातु शुक्र, ७ ज़ोहल अर्थातु सनीचर, ८ रास अर्थातु राहु, ९ देम अर्थातु केतु,—

(No 32) दोहा।

जितनी निन्द्या हो सके, करिये मेरी भाय।
बलदेव को उपदेश हित, चुन चुन बेरी खाय॥

(*) प्रमाण लग्न चन्द्रिका, पृष्ठ ८३ श्लोकार्थ (८२) पुनि चन्द्रमा की दशाके अन्तर्गत शुक्र की दशा अष्टोत्तरी के हिसाब से (३५ अङ्कन पैंतिस) महीने होती है, और विंशोत्तरी के हिसाब से महादशा२० महीनेकी होती है, परन्तु फलित फल दोनो का एक समान है, सो क्या ? याने तिस में उत्तम स्त्रीयों से संयोग,सुन्दर कन्या को उत्पत्ति * और धर्मयुक्त धनकी प्राप्ति होती है, (८२) इति, सो हे भाइयो ! मेरे जन्म कुण्डलीके तुला लग्न के चतुर्थस्थान का शुक्र याने सप्तमस्थान के चन्द्रमा के अथ चन्द्र मध्येंतर दशा चक्र मे, विंशोत्तरी के हिसाब से, याने सम्वत १९६० के कन्या के प्रथम अंश ५० कला और ३८ विकला मे, प्रवेश हुआ, इस मेरी चि० कन्या श्रीभगवतीजी का प्रथम जन्म आश्विन शुक्ल पक्ष १२ को मङ्गल के दिन सम्वत् १९५५ मे ~~हुआ था~~ सो पुनर जन्म यह हुआ, याने कैसे ? ता० 25-8-3 ई० को मैंने यह सुना कि हमारी श्रीभगवती चि० कन्या मकान के तीन खण्डके ऊपर से, याने दुष्टों को दुष्टताके कारण से; ऊपर से नीचे को सड़क को श्रीठाकुरकी गलीकी गलीके अन्दर कलकत्ते मे गिर पड़ी, सो श्रीठाकुरजीने उस्के प्राणकी रक्षा बखूबी किया, लोगोंने मुझसे कहा कि तुम देख आव, सो मै देखने को इस वजह से नहीं गया, कि उस्का दुख देख करके मुझे अत्यन्त दुख पैदा होगा, और दूसरे इस कारण से देखने को नहीं गया, याने हमारे ससुर तीन सगे भाई है, जिनको हमारी ददिया सास बुढ़िया यह नाम लेकर पुकारती है, सो क्या ? याने (No. 1) काशी प्रसाद उर्फ काल्लू (No. 2) विश्वेश्वर प्रसाद उर्फ मल्लू (No. 3) वैजनाथ प्रसाद उर्फ उल्लू ।

पुराचीण प्रमाण यह है, सो क्या ?

शेर ।

क़दर क़ल्ब की मल्ल जानता है ।
हुमा की कब चोग़द पहिचानता है ॥

(No. 33) दोहा ।

निरबल धर्म्महिं जानिये, अधरम धन बलवान *
उपदेशक बलदेव को, हितकारी पहिचान *
धर्म्म की साया जानियें, सब की है ससुरार *
बलदेव के सरनाम जग, ससुर असुर नहिं यार *
अधरम से डरते नहीं, अश्याई नर ख़ूब *
हितमानी बलदेव को, क्या फ़ीकी महबूब *
कलिकाल के अधरम सों, माग्यो हाथ पसार *
यदि होता कहिं धरम युग, पूजत सारी यार *
एतबारहि मिट जात है, जो नर धोखा देत *
हितमानी बलदेव को, करिये मनसों चेत *
न्याई को लखिये सदा, नहीं अनित सोहाय *
सरसेहि मन बलदेव को, कशहि वसु छोड़ जाय *

और दुसरा प्रमाण पुराचीण यह है, सो क्या ? याने खवो पुर्व कवहुन मिलं जब मिलं जब दगिम् दगा, सो गंवाक मसल यह संसार मे प्रसिद्ध है, सो क्या ? याने ससुरार सुख की सार, जो रहे दिना दुइ चार, जो रहे मास पखवारा, सो बग़ल मे खुरपा हाथ मे खारा, सो हे भाइयो ! हमारो गति इससे बढ़ कर २।४

अङ्कन दुइ वर्ष चार महिने से हुई है, सो हे भाइयो! हमारे हाथ मे खुरपी क्या है? मानो नीत धरम की रक्षा करनेवाली लेखनी याने कलम है, सो (No. 1) व (No. 2) व (No. 3) का नाम क्या है? याने यथा नामः तथा गुणः।

जब श्री १०८ भारतेश्वरीजी मिरत लोकमे थीं तब मिनजानिब स्वर्गवासिनी जीके तरफ से प्रभु छोटे लाट साहिब पश्चिमोत्तर देशाधिकारीने मुझे चार चिट्ठी इज्जतके साथ याने (Certificate of Honour) का देकर सनमानित किया था, और श्री १०८ महोदय प्रभु सप्तम एडवर्ड भारतेश्वर कृपा सागरकी तरफ से श्री १०५ प्रभु बड़े लार्ड साहिब हिन्दने मुझे (Compliments) देकर सनमानित किया है, और प्रभु छोटे लाट साहिब बहादुर बङ्गालने मुझे दोमरतबह मुबारिक बादी और शुक्रिया याने (Thank) देकर इस संसारमे सनमानित किया है, लेहाजा अब मुझे प्रभु वाइसराय जनाब आली जाह हिन्द बहादुरके दस्तफेज़ मुबारिक अदल से और और श्री १०२ प्रभु छोटे लाट साहिब बङ्गाल से इन दोनों महाशय महोदय के कृपा कटाक्ष के द्वारासे, मुझे देहली के दरबार के बारे मे ईनाम व इकराम बहुत जल्द मरहमत होना चाहिये, ताकि मै अपनी माजी को हमराह लेकर श्रीजगदीश पुरीके दरशन करने को जाऊं, और अपना मनोरथ सिद्ध करके दिल जानसे दुवा दूं, श्री सावलिया जी के खत्रीभक्ता सुर कलकत्तेने मुझे एको दिन श्री सांवलिया जी का प्रसाद भोग उत्सवका उत्साह से नहीं कभी दिया है, सो हमारी भक्ती श्री सांवलिया जी की संसार में प्रसिद्ध है, सो अब यदि श्री सांवलिया जी खुद प्रसाद देनेको आवेंगे, तो हम उसको भूल करके

स्वीकार नहीं करेंगे, क्योंकि जितने कटरे में मीनो की हाट है, सो उनके मन्दिर का प्रसाद भोग खाने में दोष और पराच्छित है, लेकिन श्री सत्यनारायण जी के मन्दिर का प्रसाद घृत पक्का यदि प्राप्त उनके भक्तोंके द्वारोंसे होयगा, सो मैं लुंगा मै आशा करता हूं, कि श्रीमान राय राजा लाला शिवबक्सजी साहिब बहादुर हमारे श्री सत्यनारायण जीके प्रेम भक्तोंके ऊपर हमारी पूरी तौर पर सहायता करेंगे, और प्रभु बड़े लार्ड साहब वाइसराय हिन्दसे और प्रभु छोटे लाट साहिब बङ्गाल से बहुत शीघ्र ईनाम और इकराम मुझे दिला कर कृतार्थ करेंगे।

उपदेश।

(No. 54)

ग़ज़ल।

कलकत्ते की होली क्या पगड़ी उतार है।
गुलाब रङ्ग है नहीं कीचड़ की मार है॥
यह शास्त्र में लिखा नहीं करिये विचार है।
फटी पुरानी जूतियों की क्याही मार है॥
करो विचारो यारो यह हित की न प्यार है।
शरीफ लोग खेलते रङ्ग की बहार है॥
कीचड़ की मार मे कभी नफा न यार है।
बलदेव प्रसाद की कहो मानो विचार है॥

इस साल होली के तेहवार मे, खूब कीचड़, और पुराना टाट मट्टी से लपेटा हुआ, और गीले चमड़े की खाल नई उतारी हुई, और राह चलते हुवे कस व नाकसकी पगड़ियां वाहियात हर एक स्थान मे फेकी और उतारी गई।

और इस हिन्दुस्थान मे, चार तेवहार भारी होता है, याने पहिला तेवहार ब्राह्मणोका रक्षाबन्धन, अर्थात् राखी पुर्णमासी, और दूसरा तेवहार क्षत्रियों का दसहरा, और तीसरा तेवहार वैश्यों की देवाली, और चौथा तेवहार याने होली शुद्रों की अथवा कीचड़ और मट्टी इत्यादिकों से जानिये, याने जिनको अबीर गुलाब रङ्ग नहीं जुरता मिलता है, सो वह लोग कीचड़ और मट्टी फेंकते हैं, और पुराना फटा पापोश आमतौर पर कस व नाकस के ऊपर डालते हैं, सो हे भाइयों। पुराना जूता फटी पनहीं उठाना किसका काम है, याने चमारों का, बिदित हो कि यह होली का तेवहार चारों बरण के वास्ते है, याने कुमकुम् अबीर गुलाब रङ्गसे खेलने के लिये है, न कि कीचड़ और मट्टियों से है, सो हे भाइयो! इस बात का बिचार सब रईसों का करना चाहिये, और इस उपद्रव धूम को हमेशा के वास्ते रोकना चाहिये, इलाहाबाद मे मैने यह उड़ती पुड़ती खबर सुना है, जो कोई होली मे, किसीके ऊपर कीचड़ फेकता है, सो उसको छः महीने का जेहल सरकार से होता है, मै यह खास कर नहीं जानता हूं कि यह बात कहांतक ठीक हैं।

और यह सुनते है, कि राय भजनलाल जी लोहिया साहिब बहादुर रईस हरीसन रोड कलकत्ते की कोठी (No. 90) ने देहली के दरबार के बाद, कलकत्ते के आनन्द बिषय के बारेमे, आपने कलकत्ते के परेट के स्थान मैदान मे, हजारो कङ्गालों को पक्क घृत का भोजन मिठाई, लूची पूरी इत्यादिकों से भन्डार किया था, सो इस बिषय मे आपको बहुतसी नामवरी कलकत्ते में होरही है। सो मै भी आपको इस दिलावरी पर धन्यबाद देता हूं,

हर एक बच्चों के वालिद और वालदैन को यह चाहिये कि जब तक कि बच्चा ना समझ है, सो याने नाबालिग़ बच्चों को अकेले मकान मे खेलते हुवे कभी न छोड़ना चाहिये, जब तक कि वह बच्चे ना समझ हैं, सो ना समझ बच्चों की बहुत हीफ़ाज़त रखना फ़र्ज़ है, क्योंकि लापरवाही बच्चों की करने से वह ना समझ बच्चे लोग हाथ से, बेहाथ होजाते हैं, याने सन् १९०२ ई० मे, दो लड़के ना समझ कलकत्ते मे, अपने मकान से, खेलते हुवे, एक खण्ड मकान के ऊपर से अन्दर नीचे सड़क की गलीमे गिरकर अकाल मौतसे प्राप्त हुवे, याने एक बच्चा ५ वर्षका कलकत्ते की सिकधर पाड़ा ष्ट्रीट मकान (No. 36) से गिरकर क़ज़ा किया, और दूसरा शिबूठाकुर की गलीमे गिरकर वफ़ात पाया।

इस क़ितेबन्दी फ़ारसी का उलथा, इस पुस्तक की ८ पृष्ठ में (No. 14) की शेर मेरी निज ख़ास ज़ात है, याने फ़ारसी ज़बान मे यह है।

फ़ारसी की क़ितेबन्दी शेर।

क़लम गोयद् कि मनशाहे जहाँनम्।
क़लम कशरा बदौलत मीरसाँनम्॥
अगर बदबख़्त बाशद मन चे: दाँनम्।
वले इकबार बरदौलत रसाँनम्॥

शब्दार्थ।

गोयद—कहता है। मन—मैं। शाह—बादशाह। जहांन—संसार। कशरा—खींचनेवाला। बदौलत—संपतिसे। मीरसानम्—पहूंचाता हूं मै। बदबख़्त—सिया-

वक्ती, याने कलयुग का ज़माना। बाशद—होवे। चे:—क्या। दाँनम्—जानता हूं मे।
वले—लेकिन। इकबार—एकदफे:। बरदौलत—दौलतपर। रसाँनम्—पहुंचाता हूं मे।

(No 35) **उपदेश।**

दोहा।

समहिं मिताई धरम की, लखिये सबै प्रकार *
उपदेशक बलदेव की, करिये नियत बिचार *
यह उपदेश से मानिये, पर उपकार हमार *
राजनीत बलदेव की, काट सकै न गँवार *

एक छोटा सा दृष्टान्त यह है, सो क्या? याने किसी ज़माने मे एक लालाजीने, अपने पीताजी के वफात के बाद अपने बख़रे हिस्से मे, पन्द्रह लाख रुपये की जायदात पाया था, सो बाद वफात मौसूफ के याने पन्द्रह लाख रुपये बख़रे हिस्से की जायदात की बक़ाया मे बाक़ी सात लाख रुपया रह गया, और बाकी आठ लाख रुपया किस बारे मे सरफा हुआ? याने उनके लड़कोंने आयं बांयं सांयं रन्डियोके नरक की हंड़ियों मे ख़रच कर डाला, और बाक़ी खाजबीर लोगोंने लालाजी को रोजगार व्योपार मे नक़सान पहुंचाया, याने पुराने ज़माने के सीधे साधे लालाजी छल कपट को क्या जाने, सो लालाजीने खाजबीरों के फन्दे मे फंस करके याने रोज़गार पेशों मे बहुत सा नक़सान दिया था, अगरचे: एक लाख रुपया बिधवा फन्ड मे दिया जाता तो इस लोक मे युगायुग नाम रहता सो देखिये! एक छोटा सा प्रमाण वरतमान समय का यह है, सो क्या? याने लाला मनोहरदासजीने एक लाख रुपया बरुवा घाट पोख़तह् बनवाने के वास्ते दिया था, सो उनके साहिबज़ादह् इलाहाबाद के रानी के मन्डी के राय साहिब बहादुर मौसूफ बनवा रहे हैं, सो हे भाइयो यह घाट बन जाने से नाम कब तक रहैगा? याने जब तक की यह घाट की नेंह रहैगी, तब तक रहैगा।

पुराचीण प्रमाण यह है,—

सवैया।

परि पूरण पाप के वारणते, भगवन्त कथा न रुचै जिनको *
तिन एकक भारि बुलाय लये, मचवावत हैं दिनको दिनको *

मिरदङ्ग कहै धिक् है धिक् है, मञ्जीर कहै किनको किनको *
तब नारि उठाय के हाथ कहै, इनको इनको इनको इनको *

एक छोटा सा दृष्टान्त,—

जब मैं इलाहाबाद मे था, तब मैंने एक आदमी की ज़बानी एक छोटीसी कहानी सुनाथा, सो क्या? यानें किसी ज़मानें में, कोई एक पुलिस मे जमादार था, सो उसनें बहुत दयानतदारी से, घूंस अर्थात् यानें रिशवत खोरी का रुपया बहुत सी कमाई का इकठ्ठा किया था, सो उस रुपये को उसनें किसी महाजन की कोठी मे जमा कर दिया था, फिर बाद इसके जब उसनें पुलिस की मुलाज़मी को छोड़ा, फिर बाद अज़ां इसके उसने अपना रुपया जहां कि जमा किया था, सो उस सख्सनें अपना रुपया यानें तलब किया, सो यानें उस महाजन की नीयत खाम हो गई, और बड़ी भारी रक़म बीस हज़ार रुपये को हज़म कर लिया, और उस पर यह तुर्रा देकर टर्रई के साथ में टरका दिया, और यह कहा कि तूतो एक [redacted] का यानें जमादार था, तूनें रुपया इस क़दर यतना कहां से पाया, सो तूनें मेरे यहां जमा किया था, फिर वह बेवकूफ़ बेचारा लाचार होकर और मूरख बनकर और यानें उस बेमान महाजन को अशिरवाद देकर यानें अपना मुंह काला करके अपनें घर वह चला गया, फिर दोबारा उस बेमान महाजन की कोठी में लौट लपट कर नहीं आया, नमस्कार है, किनको, यानें रिश्वतखोरों के गुरुजी को,—

(No 36) दोहा।

जैसा धन है आइयां, बैसाही चलि जाय *
लखवानी बलदेव की, पानी मे बहि जाय *

फिर बाद इसके उस पुलिस के जमादार ने शङ्करराम से यह सब हाल बयान किया, तब उस शङ्कररामनें यह जवाब देकर तसल्ली दिया, सो क्या? यानें तुम घबड़ाव मत, अइयाम होलीका तेवहार क़रीब आनें दो जब मैं, इसका एवज़ उस बेमान हरामज़ादे महाजन से बसूल कर लूंगा, यानें जब अइयाम होली का आया, तब उस शङ्कररामने क्या किया, यानें बगीचे मे जाकर इत्फ़ाक़ से मुलाक़ात होने पर उसनें खूब पड़ापड़ लगाये, तब उस हराम

ज़ादे महाजनने उस शङ्करताश से कहा कि यह बात नई कैसी ? फिर बाद इसके उस शङ्करताशने यह उत्तर दिया, सो क्या ? याने चुपरहो खामाश रहो, यह होली है ! होली है !! होली है !!! याने जग अन्धा तुम्हें क्या समझाऊं * फिर बाद इसके उस महाजनने यह मिसरा पढा, सो क्या ?

(No 37) शेर ।

पड़ा पड़ इसक़दर शिर मे लगाये *
न गिन्ती मे न गिन्ती मे भी आये *

(No 38) शेर ।

ज़बां देकर पलट जाना नहीं यह है मुनासिब *
न चाहिये देना किसी मुक़ालता या जिब *

इस पुस्तक मे, जो कि पृष्ठ २७ मे चिठ्ठी बङ्गाफ बङ्गाल इलाहाबाद ~~से प्रकाशित~~ की को मुद्रित है. सो आपने मुझे बहुत सा धन्यवाद निज कार्ड के द्वारा से बज़रिये डांक हाज़ा के भेजा है, सो आप मोहम मेले मे तशरीफ लाये थे, सो मुझ से और आप से इस शहर कलकत्ते मे मुलाक़ात हुई थी, सो आपने मुझे ता० 10-1-4 ई० को अपने मुकाम मुकीपर बुलाया था, और मुझसे यह वादा किया था, कि मैं भी तुमको इस पुस्तक के छपने के बारे मे, छपाई चन्दा पत्न अवश्य दूंगा, सो उस रोज़ मैं उनके मुक़ीम मुक़ाम पर गया, सो यह मालुम हुआ कि आप ता० 9-1-4 ई० को इलाहाबाद रवाना हो गये, चे: ख़ूब, क्या मै बहुत सां धन्यवाद लेकर ओढूं या बिछाऊं या शहद लगाय कर चाटूं, सो मै भी आपको बहुत सा धन्यवाद देता हूं, सो क्या ? याने हमारी सहायता करना तो दूर किनार रहा, बल्कि इस पुस्तक के बारे मे चन्दा तक नहीं दिया, ख़ैर आप का इस में कोई दोष नहीं है, बल्कि इस कलयुग के प्रथम चरण याने मनहूस क़दम सिया बक़्ती निगोड़े का दोष है ।

श्रीतुलसी दासजी का वचन यह है, सो क्या ?

दोहा ।

नहिं विद्या नहिं बाहु बल, नहिं खरचन को दाम *
तुलसी ऐसे पतित को, तू पति राखे राम *

मै अपढ़ श्रीतुलसीदास जीके चरणारविन्दके एक रोमकी बराबरी नहीं कर सक्ता हूं, मुझे २० वर्षके निकट होता है, याने विद्याको छोड़े हुवे, जिस समय में हमने अपना लिखना पढ़ना छोड़ा है, सो उस समय में, मैने क्या किया ? याने जो कुछ मेरे पढ़नेकी किताबें फारसी और अङ्गरेज़ी हिन्दी वग़ैरह् की जो थीं, सो मैने सब लड़कों को बांट दिया, इसवास्ते कि न रहैगा बांस न बजैगी बांसुरी, जबसे मैने पढ़ना छोड़ा है, तब से मैने पढ़ी हुई विद्या को याने देखा तक नहीं,—

उपदेश ।

घोड़ा रुका क्यों ? रोटी जली क्यों ? विद्या भूली क्यों ? पान सड़ा क्यों ?

(No 39) चौपाई ।

मोहिं विद्वान न पण्डित जानों । बुधि अनुसार बचन यह मानों ॥
मै अपराधी जगत बखाना । राम नाम नहिं सुमिरण जाना ॥

दोहा ।

विद्याको लखिये सदा, बिन फिरे फिर जाय *
यह मानो बलदेव की, नहिं पाछे पछताय *
जैसे मै पछतात हौं, सुनिये मेरो भाय *
बिन विद्या बलदेव यह, जगमें गमको खाय *
अङ्गरेज़ी हिन्दी उर्दू, पढ़ी फारसी हम *
सब विद्या यह जानिये, भूल गई इक दम *
मोहिं विद्वान न जानिये, मै विद्यासे हीन *
यह बलदेव की दीनता, लखिये नम्र अधीन *
यह पोथी अनमोल है, लखिये लेख हमार *
भूल चूक बलदेव की, क्षमा करहु सब यार *

In honor of the C. H. Harrison. I. C. S. Esquire to the Post Master General Bengal जयति:—

(N040) दोहा।

राजधानि कलकत्ते की, जानै सकल जहांन *
जनरल पोस्टाफिस यह, जगमे विदित बखांन *
सी, एच, हरीसन * सुजन वर, आफिसमे सैरदार*
पोस्टाफिस बङ्गाल के, विदित सकल संसार *
पोस्टाफिस यह धरम से, करत सभन को काम *
बहुत दूर की खबर को, पहुंचावत आराम *
गवर्मेण्ट के राजमे, यह सतयुग ब्योहार *
डांक घरन में जानिये, जगत भरे को कार *
गवर्मेण्ट के राज मे, यह सरकारी कार *
उपदेशक बलदेव की, धरम कीरहै यार*

मै आपको इस बात से आगाह करता हूं, कि हमारे नाम की चिट्ठी पत्नी जहां मै रहूं, वहां पर चिट्ठीरसां मुझे खुद तलाश करके देवे, और वह वापस न जाने पावे, और दूसरा कोई हमारे नाम की चिट्ठी पत्नी खोलने और लेने न पावे, क्यों कि मैने ता॰ 25-9-3 ई॰ को एक पाकेट (Private) महांराजा साहिब महंराजा बहादुर अयोध्यापुरीजी की सेवामे रवाना किया था, सो वह पाकेट ता॰ 15-2-4 ई॰ को किसी कारणसे बवापसी डाक हाजा (No G. 944) का A. D. पाकेट रजिष्ट्री शुदह् खुला हुआ पाया, सो मैने चिट्ठीरसां फौजीराम चपरासी पिटी (No 376) से दरियाफ्त किया कि यह पाकेट फटा और खुला

* विशेष सज्जन,—

हुवा क्यों है, फिर बाद इस्के उसने यह जवाब दिया कि यह बहुत दिन का मुद्दती पाकेट होने से फट गया है, खैर कुछ मुज़ाका नहीं! इस पाकेट के अन्दर हमारी दर्शनी हुण्डी कोई नहीं थी, याने खाली इस पुस्तक के २१ पृष्ठ मे जो (No 18) की कविता इस पुस्तक में मुद्रित है, सो उस में हमारे हाथ की लेखनीके द्वारा से लिखी हुई थी, सो मैंने बजिन्सहू बवापसी डांक हाजा के वापस पाया, आइन्दह् के वास्तें मै आप से यह निवेदन करता हूं, कि हमारे नामकी चिट्ठी पत्री व पाकेट इत्यादिक कोई खोलने का अधिकारी डेड लेटर आफिसमें न किया जावें, क्योंकि डेट लेटर आफिसका कल्र्क मुझे (B. Batuk Prasad) टन्डन १२घर खत्री बनारस का बखूबी जानता है, परन्तु यह पुरुष मेरा हितैषी नहीं है।

———o———

एक रण्डी होली के तेहवार के दिन, एक ठाकुर द्वारेमे, नाचने और गाने के लिये बुलाई गई, सो वह अन्दर मन्दिर के क्या अलापती है? याने—

———o———

(No 41) **मुसल्लस धुपद् रागणी।**

मुरग़ी को मै खाती हूं, तात्थेइ—तत्थेइ ता *
ठुमक् ठुमक्के ठुमठुम् नाचूं, तात्थेइ—ततत्थेइ ता *
मुरग़ी को मै खाती हूं, तात्थेइ—तत्थेइ ता॥ १॥

अन्तरा।

मुरग़ी बोले कुकड़ूं कूं, तात्थेइ—तत्थेइ ता *
हज करके मै आई हूं, तात्थेइ—तत्थेइ ता *
मुरग़ी को मै खाती हूं, तात्थेइ—तत्थेइ ता॥ २॥

अन्तरा।

अन्दर मन्दिरके गाऊँ, तात्थेइ तत्थेइता *
बलदेव को नहिं भावे यह, तात्थेइ तत्थेइता *
मुरगो को मैं खाती हूँ, तात्थेइ तत्थेइता ॥१॥

(No. 42) दोहा।

जो कलियाको खात है, पशू कलेजाह् केर *
सांच कहत बलदेव यह, हृदय दया नहिं हेर *

एक छोटा सा चुटकुला क्या है ?

फिर बाद इसके होली की दिल्लगीबाज़ी क्या हुई ? याने एक पुराना चन्डल खन् खजूरा गोजर किड़वा खन् खन् खनानेवाला अच्छी बरस का दया रहित एक कोने में छिपा हुआ बैठा था, सो वह खन् खजूरा गोजर यह खन्ना तवायफ के लेहंगे में घुस गया, फिर बाद इसके उस पतुरिया का तात्थेइ तत्थेइता याने गाना बन्द होगया, तब वह वेश्या चक्कर खाकरके क्या कहती है ? याने तोबाह्, तोबाह्, तोबाह्, हज करके यह आई हूं, तोबाह्, तोबाह्, तोबाह्, फिर बाद इसके खन् खजूरे को एक बकुलेने पकड़ धकड़ करके उस अहङ्कारी दया रहित गोजरको समझावन से समझा दिया, फिर बाद इसके उस खन्ना गोजरके समझाने बोचके दरम्यान में ज्ञान उत्पन्न हुआ, अलकिस्सह् बाद होली का जलसा जब ख़तम होगया, तब वह बोबी अपसराने श्रीठाकुर द्वारेके मुखिया सरपंचसे अपने गाने नाचनेका मेहनताना मांगा, तब बाद इसके मुखिया सरपंचने कहा कि तुम क्या मांगती हो ? तब बोबो तवायफने यह कहा कि मैं श्रीठाकुरजी के साम्हने इस बात की क़सम खाती हूं कि मुझे कलामुल्ला की क़सम है, याने मैं हज करके आई हूं, अब मैं मुरग़ी मुरग़ा कभी न खाऊंगी, और आप भी इस बात की सौगन्द खाइये सो क्या ? याने जो वैष्णवलोगों के कटरे में मछलियां काट काट के बिकती हैं, सो वह उठवादी जावें, और बजाय इसके फूल वग़ैरह फरोख़्त होना चाहिये, फिर बाद इसके उस मुखिया सरपंच पुजारीजीने यह उत्तर दिया सो क्या ? अभी श्रीठाकुरजी के साम्हने क़सम खाने की कोई ज़रूरत नहीं है, याने कमेटी करके यह मामला दरपेश कमेटी में किया जायगा, याने जैसी राय तजवीज़ मेम्बरों की होगी, सो वैसाही किया जावेगा, देखा चाहिये कि अब मेम्बरों की राय तजवीज़ में क्या राय ठहरती है, याने रन्डियोंमें तो

छूत करके मुरगियों का खाना छोड़ दिया, सोदेखा चाहिये कि वैष्णव लोग अपने कटरों मे मछलियों का फरोखत करना बन्द करते हैं या नहीं,हमारी तो राय मे यह है, सो क्या? यानें जिनर वैष्णव लोगों के कटरे मे मछलियां बिकती हैं, सो वहां पर बजाय हाट मछलियों के, वहां पर पुष्प इत्यादिकों को हाट होना चाहिये, ताकि वैष्णव लोगों के जिनके कटरे मे मछलियां बिकती हैं, सो यह उठ जानेसे उनलोगोंके हृदयमे आपसे आप दया प्रगट हो जायगी वरना नहीं। (Sd.) Baldeo Prasad Mehrotra 2½ Ghur,

CALCUTTA.

Errata.

अशुद्ध।	शुद्ध।
पृष्ठ १५ (No. 14) की ११ पंक्ती मे, संभो,—	सभों।
पृष्ठ ६२ की २४ पंक्ती मे, रपोर्ट,—	रपोर्ट।
पृष्ठ ६५ की १५ पंक्ती मे, बाट इस्के,—	बाद इस्के।
पृष्ठ ६८ फुटनोट की प्रथम पंक्ती मे, हु,—	हूं।
पृष्ठ ६९ की १२ पंक्ती मे, तजुर्मा,—	तर्जुमा।
पृष्ठ ७० की अशुद्धा अशुद्धीके बाद १४ पंक्ती में पैस,—	पैसा।
पृष्ठ ७१ की ५ पंक्ती में, बसरी सामानी,—	बैसरी सामानी।
पृष्ठ ७२ दृष्टान्तकी ८ पंक्ती में, झोपड़ीके निकट,—	झोपड़ी निकट।
पृष्ठ ७२ की दृष्टान्तकी ११ पंक्ती में, इत्याहिक,—	इत्यादिक।
पृष्ठ ७६ की ११ पंक्ती में, कम्पलीमेन्ट प्रभु मेरे लार्डने दिया,—	यह कम्पलीमेन्ट प्रभु मेरे लार्डने दिया।
पृष्ठ ७६ की सितारों की फुटनोट की ४ पंक्ती में, अथात,—	अर्थात्।
पृष्ठ ७७ की ४ पंक्ती में, महादय,—	महादया।
पृष्ठ ७७ की १४ पंक्ती में, हमारा,—	हमारी।

अशुद्ध ।	शुद्ध ।
पृष्ठ ७७ की १६ पंक्ती मे, श्रीठाकुर की गली,—	Shiboo Thakoor's Lane.
पृष्ठ ७८ (No. 34)की ११व१२ पंक्ती में, अनित—सरलेहि,—	अनीत—सरलहि ।
पृष्ठ ७६ की ३ पंक्ती में, क़लस,—	क़लम ।
पृष्ठ ८० के ४ पंक्ती में, सो मै प्रेम से स्वीकार करूंगा और मैं यह आशा करताहूं	
पृष्ठ ८४ केपृष्ट दृष्टान्तके ११पंक्तीके नीचे, अशिरबाद,—	आशिरबाद ।
पृष्ठ ८५ (No. 38) की २ पंक्ती मे, खज़ांची की की,—	खज़ांची की जो ।
पृष्ठ ८५ के श्रीतुलसीदासजी के दोहे की दुसरी पंक्ती में, तुपतिराखि राम,—	नृपतिराखो राम ।
पृष्ठ ८७ दोहे के ॰ पंक्ती में, सो, एच,	सो, यच ।
पृष्ठ ८७ दोहेके बाद इबारत की ८ पंक्ती में, डाक,—	डांक ।
पृष्ठ ८८ के ६ पंक्ती में, डेट,—	डेढ़ ।

---

७०) नोज़ान कुल टोटल इस पुस्तक के चन्दे छपाई ६० पृष्ठको,—

३) सूतापट्टीके फत्तूद्वारेके कटरे (No 66) के मर्चेन्टो से पाया,

१) श्रीमान् बाबू रामचन्दर रामनरायण जीसे पाया,
ता॰ 11—2—4 ई॰

१) श्रीमान् बाबू किशुनदयाल मङ्गतूलाल जीसे पाया,
ता॰ 14—2—4 ई॰

१) श्रीमान् बाबू गुरमुखराय मदनगोपाल जीसे पाया,
ता॰ 13—2—4 ई॰

८) नरायणप्रसाद लेन मु० अफीमका चौरास्ता सूर्य्यमलकी कोठी (No. 5) के मर्चेन्टों से पाया,

१) श्रीमान् बाबू भीमराज, फूलचन्द खेतान जीसे पाया ता० 19—2—4 ई०

१) श्रीमान् बाबू गुलाबराय, रामेश्वर पोद्दार जीसे पाया, ता० 19—2—4 ई०

१) श्रीमान् बाबू रामप्रसाद, सूर्य्यमल नेवटिया जीसेपाया,

१) श्रीमान् बाबू श्रीलाल छोकमल, महेसरी पेड़ीवालजी से पाया, ता० 19—2—4 ई०

१) श्रीमान् बाबू चोखराज, रामविलासजी झुंझुनवाले, से पाया, ता० 20—2—4 ई०

१) श्रीमान् बाबू सूर्य्यमल, सागरमल खितानजी से पाया, ता० 20—2—4 ई०

१) श्रीमान् बाबू सूर्य्यमल, सोनीराम पोद्दारजी से पाया, ता० 23—2—4 ई०

१) श्रीमान् बाबू गौरीदत्त, लक्ष्मीनरायणजीसे पाया, ता० 23—2—4 ई०

१) श्रीमान् बाबू बलदेव दास, जगन्नाथजी झुनझुन् वालेसे पाया, ता० 17—2—4 ई० यानें सूर्य्यमलकी कोठी (नं० ७१) बरतल्ला ष्ट्रीटसे पाया,

२) कालीगोदाम अफीमका चौरस्ता (No.12)के मर्चेन्टोंसे पाया,

१) श्रीमान् बाबू तनसुखराय, रामनाथ सराफ जीसे पाया, ता० 21—2—4 ई०

१) श्रीमान् बाबू बलदेव दास, युगुलकिशोर बिड़ला जीसे पाया ता० 23—2—4 ई०

२) मन्दराम मन्धी सूरजवालों की कोठी बरतल्ला ष्ट्रीट,
(No 73) के मर्चेण्टो से पाया,

१) श्रीमान् बाबू हरमुखराय, गोबिन्दराम जीसे पाया,
ता० 21—2—4 ई०

१) श्रीमान् बाबू सनेहीराम, सेढ़मलजी से पाया,
ता० 24—2—4 ई०

१) श्रीमान् बाबू हीरालाल, गुलाबसिंह जी जौहरीसे पाया,
ता० 21—2—4 ई० मु० अफीमका चौरस्ता नरायण प्रसाद लेन। (No. 7)

१) श्रीमान् बाबू सेवाराम, रिखदासजी से पाया,
ता० २२—२—४ ई० मु० अफीम का चौरस्ता चूड़ीवाल की कोठी (नं० १७)

१) श्रीमान् बाबू मङ्गलचन्द, चुन्नीलाल महेसरीजी से पाया,
ता० 23—2—4 ई० यानि आसाराम झांवर की कोठी (No. 41) से,

५) नन्दराम मन्धी बरतल्ला ष्ट्रीट कोठी (No. 74 व 75) के मर्चेन्टों से पाया,

१) श्रीमान् बाबू चतुरभुज, जगन्नाथ जीसे पाया,
ता० 4—3—4 ई०

१) श्रीमान् बाबू भारामल, फतेचन्द जीसे पाया,
ता० 4—3—4 ई०

१) श्रीमान् बाबू बालकिशुन दास, शिवबक्स जीसे पाया, ता० 6—3—4 ई०

१) श्रीमान् बाबू गिरधारीलाल, गनपतराय जीसे पाया,
ता० 6—3—4 ई०

१) श्रीमान् बाबू जोखीराम, बालाबकस जीसे पाया, ता० 7—3—4 ई०

४) जगमोहन मलिक लेन बड़ जी की कोठी के (No. 9) के मर्चेण्टों से पाया,

१) श्रीमान् बाबू साधोराम, तुलाराम गोनकाजी से पाया, ता० 8--3—4 ई०

१) श्रीमान् बाबू टोरमल, दिलसुख राय खेमका जीसे पाया, ता० 8—3—4 ई०

१) श्रीमान् बाबू राधाकिशुन, शिवदत्तरायजी से पाया, ता० 8—3—4 ई०

१) श्रीमान् बाबू फूलचन्द, पदुमराजजी से पाया, ता० 9—3—4 ई०

१) श्रीमान् बाबू सीतलप्रसाद, खड़गप्रसादजी अगरवाला बांसतल्ला ष्ट्रीट (No. 30)के मर्चेन्टसे पाया ता०13—3—4ई०

॥) श्रीमान् बाबू जानकीदास, गनपतराय बरतल्लाष्ट्रीट, (No 22) से पाया,

७॥) हरीसन रोड, No. 95 के मर्चेण्टों असद्दावके पंचायतियो पंचोसे पाया,

१) श्रीमान् राय बाबू बनसीलाल, अमीरचन्दजी बहादुर से पाया, ता० 14—3—4 ई० हरीसनरोड, (न० ८५)

१) श्रीमान् बाबू सगुनचन्द, बैजनाथ जीसे पाया, ता० १४—३—४ ई० हरीसनरोड न० ८५

१) श्रीमान् बाबू मुलतानचन्द, नरसिंहदासजी से पाया, श्यामाबाद की गली (न०१०) ता० १४—३—४ ई०

१) श्रीमान् बाबू सुखदेव दास, रिखबदास जीसे पाया,
श्यामाबाईकी गली (न० १०) ता० १४—३—४ ई०

॥) श्रीमान् बाबू गोकुलचन्द, हरकचन्दजी से पाया,
ता० १४—३—४ ई० हरीसनरोड (न० ९५)

१) श्रीमान् बाबू मुलतानचन्द, डागा जीसे पाया,
कोठी मोहनलाल हीरानन्द (न० २०३) हरीसन
रोडसे पाया ता० १६—३—४ ई०

१) श्रीमान् बाबू हरसुखदास, छोकमलजी से पाया,
बरतलाष्ट्रीट (न० २२) ता० १४-३-४ ई०

॥) श्रीमान् बाबू छोगमल, रामदासजी से पाया,
आरमनी ष्ट्रीट, (न० ३२) ता० १४-३-४ ई०

॥) श्रीमान् बाबू रामकिशुन डागादासजी, से पाया,
पारककी कोठी (न० ११) ता० १४-३-४ ई०

१) श्रीमान् बाबू राधावल्लभ दासदुमाणीजी से पाया,
(न० १०) श्यामा बाई की गली की कोठी मे से
ता० १०-३-४ ई० को पाया,

७०) मीज़ान कुल टोटल पृष्ठ ६० की याने ६२ पुरुषों से पाया,
३८) मीज़ान पृष्ठ (९१) से लगायत परयन्त (९५) ताईं
याने ४० पुरुषों से पाया,

---

१०८) मीज़ान कुल टोटल रुपया की, याने १०२ पुरुषों से पाया,

ता० २३ सितम्बर सन् १८९९ ई० को मैंने यह लिख करके
अपने हाथसे जनाब Rai Lálá Shiwa Prasad
Jee Sahib Bahadur कानपुर रईश आज़म
के हवाले किया था, सो क्या ? याने,—

(No 43) क़सीदा।

अय खुश इक़बाल वय (१ खिजिस्तह् (२ निहाद *
नाम तेरा है लाला शिव परसाद *
तेरी हिम्मत तेरी (३ सख़ावत) पर *
देता है हातिम अपने हाथसे (४ साद *
ख़त्म है तुझपह् (५ हिज़्म) हम दर्दी *
उसह् है इल्म (६ वफ़न) व ज़ेहन (७ वक़ाद *
खास व नाखस से झुक के मिलता है *
रखता है दुश्मन से नहीं है (८ इनाद *
है ख़ोदा से यही दुवा मेरी *
रहै दुनियां मे ताअबद आबाद *
कोइकार मुश्किल अत्ता करिये *
दिलसे मेरे न भूल जाइये याद *
अबतलक जावजा फिरा महरूम *
अब मुझे होता है क्या इरशाद *

उपदेश।

पुराचीण प्रमाण,—

कवित।

हीराके फूटे कनो बिकाय जात, हाट हाट कोई घाट कोईबाढ़, सबे मोल लिगयो * भभीषण जो फूटे राजा रामचन्द्र से आए मिले, रावन को मार के, स्वर्ग मे पठयो दियो * दुर्योधन से छत्रधारी, कमठाके टूटत गुमान, उनहुं को नय गयो * नहके मारे उठ जात बाजी चौपड़ को, आपुस के फूटे, कहो कौन को भलो भयो *

(१ मुबारिकज़ात (२ उमदह् (३ फैयाज़ी (४ सही (५ सावधानी (६ अच्छा) (७ उमदह् (८ दुश्मनागी

(No 44) दोहा ।

यह दुनियां को जानिये, लखिये नीत प्रमान *
अस्थल, बायू, अग्नि, जल, चार समुद्र बखांन *
मक्खी चीटे चीटीयां, हवासे होत पवित्र*
सुनहु नीत बलदेवकी, मेरे प्यारो मित्र *
बुद्धिमान शत्रू भला, बुरा है मित्र नदान *
लखहु नीत बलदेवकी, ज्ञानी चतुर सुजान *

हमारे बिरादरी के L. मङ्गूमल उर्फ बलदेव दास, मेहरोत्रा २॥ घर वैष्णव आप (No. 79) Cross Street Calcutta के रईस आज़म लखपती धनी हैं, सुनते हैं कि आपने अपने बहि-न्होई के वफ़ातमिलकियत कुल रक़म रुपये इस्टेट की जाय-दात के मालिक हुवे हैं, और आप खुशनसीब के चार साहिबजादे फरज़न्द भी हैं, याने (No. 1) B. गोविन्ददास (No. 2) B. निक्के मल उर्फ नारायन दास, (No. 3) B. बांसदेव दास उर्फ बासू (No. 4) B. हरी दास—याने (No.2) हमारे मामू सीतल प्रसाद टन्डन २॥ घर स्वर्ग निवासी के लड़की बाबू नरायन दास की लड़की का जमाई है, सो हमारा और इन लोगों का रिश्ता नातामें भी घंघरी का है, सो याने इन लोगों को जब से मैं कलकत्ते में आया हूं तब से इन लोगों को मैंने अपना हितैषी और खैरख्वाह याने सहायक नहीं पाया है, क्योंकि यह लोग यह बात चाहते हैं। कि वैष्णव लोगोंके कटरों में खूब मछलियां काट काटके धड़ा धड़ फरोख्त होकर बिकरी जारी रहे, क्योंकि यह लोग भी परम वैष्णव श्री सांवलियाजी के पूजारी

है, और आपके दौलत खाने बाड़ी मे भी श्री सांवलियाजी का ठाकुर द्वारा है,—

अतः—और हमारा और राय रामचरन दास बहादुर रईस कोटाधीश इलाहाबाद के रानी के मन्डी के महाजन से पगड़ी का रिश्ता है, सो क्या? याने आप धर्म नीत प्रमाण से, इनसे जो हमारा रिश्ता नाता है, सो बेवरे वार बेवरा इस्का इस पुस्तक के ७४ पृष्ठ की १० पंक्ती मे तफसील वार मुद्रित है, सो यह हमारे जन्म कुण्डली मे लग्नेश और अष्ट मेश का याने तुला लग्न का स्वामी जो चतुर्थ स्थान मे बैठा हुवा है, सो उस्का यह प्रताप है, और यह हमारे पूर्व जन्म का और इस जन्मका यह तपो बल है, याने जो लग्न का स्वामी, यदि चतुर्थ स्थान मे बैठा हुवा होवे, सो उस्का सार्टिफिकट इस पुस्तकके प्रथम टायटिल पेज से, ता० 12 th. May 1903 ई० की चिट्ठी अङ्गरेजीमे महँराजा साहिब बहादुर श्रीअयोध्यापुरी नरेशजी की मुद्रित है, और दूसरी चिट्ठी इस पुस्तक के १८ पृष्ट में, महँराजा साहिब बहादुर श्री काशी नरेश जी की ता० २२ Jauly 1901ई०की मुद्रित है (प्रमाण श्रीरणवीर ज्योतिष महानिबन्धः) और जिसके जन्म मे लग्नेश चतुर्थ भाव मे स्थित होता है, सो वह राजा का प्यारा और बढ़िया जीविकावाला और पितासे श्रेष्ट लाभवाला और पिता माता का भक्त और थोड़ा भोजन करनेवाला होता है, सो मैं महँराजा श्री अयोध्यापुरी श्री नरेश जी का और श्री काशी नरेश जी का प्यारा याने श्रीद्विजराज जीका सेवक प्रजा धर्मके अनुसार संसारमें प्रसिद्ध हूं, और लग्नेश का फल यह नकिष्ट मैंने पाया, सो क्या? याने जबसे मैंने संसारके ऊपर कलम उठाया है, याने तबसे इलाहाबाद-

को खत्री सभापति को और कलकत्ते की खत्री सभापति को अपना सहायक मैंने नहीं पाया है, याने ता॰ 30 March सन् 1898 ई॰ से कलयुग से मै घोर संग्राम कर रहा हूं, लेकिन इस निगोड़े का मुंहँ काला इस मिरत लोके मे मैंने कर दिया है, सो क्या ? याने,—

(No. 45) दोहा।

भीख मे भीख जो देत है, तीन लोक से जीत*
उपदेशक बलदेव को, लखिये यारो मीत *

प्रमाण ज्योतिष लग्नचन्द्रिका पृष्ठ ७१।

चौथे शुक्र मे सुखी, जाननेवाला, बहुत स्त्रीवाला, बहुत धनी, गांवका स्वामी, यशी, और (* विवेकी) होय,—

इलाहाबाद और कलकत्ते की खत्री सभापतिने अपने स्वामी की हदक इज्जत क्यों किया ? और हाकिम हुक्काम लोगों की चिट्ठियों की अताअत क्यों नहीं किया ?

* स्वामीजी को केवल विवेक सिर्फ इस बात का है, सो क्या ? याने जो कि वैष्णव लोगों के काटरे मे मछलियां काट काट के फरोखत होकर बिकरी की जाती हैं।

और कलकत्ते मे मैंने, एक बात यह अपूर्व देखा सो क्या ? याने जिस मकान मे खटमल—अर्थात्—उड़ुस याने खट किड़वा रहता है, सो उस मकान मे, टन्डन याने चिरचिट्टा किड़वा नहीं रहता है, और जिस मकान मे टन्डन याने चिरचिट्टा किड़वा रहता है, सो उस मकाम मे खटमल अर्थात् उड़ुस किड़वा नहीं रहता है,—

प्रमाण श्रीरणवीर ज्योतिष महानिबन्धः—

और जिसके चतुर्थ भावमे शुक्र स्थित होवे, सो मित्रोंका और भूमिका और, ग्रामों का, और श्रेष्ठ बाहनों का, अनेक प्रकारों के सुख को भोगनेवाला, और देवता की बन्दना करनेवाला और नित्य प्रति आनन्द करके युक्त सो मनुष्य होता है ॥ ४ ॥

याने जबतककि इस प्रमाणका, हमारा न्याय प्रभु वाइसराय व प्रभु छोटेलाट साहिब बङ्गाल और पश्चिमउत्तर देशाधिकारीके यहां से अथवा श्री महाराजा श्री काशी नरेशके यहां से न होवे तबतक कि हमारे रहने और खाने पीने का प्रबन्ध अच्छी तरह से रहना चाहिये, और हमारे ऊपर कोई शत्रुवों की वारदात न होने पावे, क्योंकि मै दो बरससे बाजार के हलवाई की कढ़ैइये की याने गङ्गा यमुना के धारा की जले घृत की पूरियां खा करके अपनी बसर करता हूं, क्योंकि मैं किसी के हाथ की रोटी बनाई हुई याने नहीं खाता हूं, ख्वाह ब्राह्मण हो या कोई कुलीन खत्री क्यों न होवे, यह प्रबन्ध किस्को करना चाहिये, याने जो हमारे परम हितैषी हैं। जैसे कि राजा राय शिवबक्स जी साहिब बहादुर बागला, और हमारे नजदीक, राय बद्रीदास जी साहिब मुकीम बहादुर भी राजा के तुल्य हैं, सो इन दोनो महाशयों को पूरी तौर पर हमारी सहायता करना चाहिये, याने जबतक की हमारा प्रभु बड़े लार्ड और प्रभु छोटेलाट साहिबके यहांसे इनसाफ न हो,—और हमारे बिरादरीके रईश लोगोंने जिस मुवाफिक हमारी सहायता किया है, सो यह बात कलकत्ते मे पटना से आलातक कस व नाकस लोग बखूबी जानते हैं, सो बेवरेवार बेवरा लिखने की हमारी कुछ ज़रूरत नहीं है।

(No. 46) नसर।

सबका साहिब*आफताब है प्यारा*
शक्ती चलती उसी की तनमे धारा*
इन्दुलोक मे हम तुम सब बस्ते हैं*
बलदेवप्रसाद मेहरोत्र यही कहते हैं*

(* मुसलमान लोगों के मज़हब मे, याने सात फलक है, सो हमारे दीन मज़हब मे भी सात लोक कहते हैं, याने जैसे कि (१ भूरलोक (२ भुवरलीक (३ स्वरलोक (४ महर-लोक (५ जनलोक (६ तपलोक (७ सतलोक, अत:—वरुण जलका स्वामी है, जैसे महानद समुद्र इत्यादिकों को जानिये, क्योंकि जल इत्यादिकों मे भी, परमेश्वर की सृष्टि उत्पन्न हैं, और अमरलोक को पाताललोक कहते हैं, सो इस पताल पुरी में, श्रीहनुमानजीने त्रेतायुग मे अपने पुत्र मकरध्वज को राज्य दिया था, और अमरलोक का अप:भ्रंश क्या है ? याने अमरी का टापू, और यही सात लोक के नाम से, सात सितारों का नाम है, जैसे कि (१ सूर्य्य (२ इन्दु (३ मङ्गल (५ बुध (५ बृहस्पति (६ शुक्र (७ शनि और यही सातें सितारों के नाम से, इस संसार मे सात दिन का एक हफ्ता कहा जाता है, (* इन्द तप लोकका अप:भ्रंश क्या है ? हिन्दुस्थान युनानी ज़बानमे, स्थान शब्दका अर्थ यह है, समूह जैसे क़बरस्तान याने जहां पर बहुतसी क़ब्रें हों, और हिन्दी मे स्थान शब्द का साधारण अर्थ यह है, याने स्थान जगह यह इन्दुस्थान अप:भ्रंश हिन्दुस्थान (अर्थात् तीन वरणसे तप रखनेका स्थान तपोभूमि, और इन्दु नाम चन्द्रमा का हैं, सो इसी नाम से इन्दुस्थान संसारमे यह प्रसिद्ध चारों दिशाओंमे जानिये और हिन्द स्थान का अप:भ्रंस अङ्गरेजी ज़बानमें इण्डिया है

—······*······—

उपदेश।

पुराचीण प्रमाण फारसी ज़बांनका यह है सो क्या ? याने,—

(बैत)

न हर मरदो मरदो न हर ज़न ज़नस्त*
खोदा पञ्ज अङ्गुश्त इकसां न करद*

चौपाई।

कारकी अंगुली एक समाना * छोटी बड़ी को लखहु प्रमाना *
तीन गोर दुइ कार न होई * सब जन परखहु कार में सोई *

दोहा।

† हाथ की अंगुली जानिये, लखिये नीत प्रमान*
छोटी बड़ी को देखिये, रङ्गहि एक समान*
श्रीतुलसी दासजी का वचन यह है, सो क्या ? याने,—

दोहा।

लक्ष्मी को सुत चार है, धर्म्म अग्नि नृप चोर*
(* जेठे के अपमान से, तीन करहिं घर फोर*
*जेठा कौन पुत्र है ? याने धर्म्म,—

सोरठा।

जो,—कारै धरम अपमान, (* अढ़ाई घर) नहिं जानिये।
जिह्न,—नहिं कीन्हों सनमान, उपदेशक बलदेव को।

† इस विषयके बारे में, हमारी जो इस राय में यह बात पैदा होती है, सो क्या ? याने कोई कि नर स्याह अर्थात् काला होवे, ख्वाह स्वेत अर्थात् सफेद होवे, और मादह बलवान हो तो याने रङ्ग जो साकि मादह का है, सो उसी रङ्ग का बच्चा उत्पन्न होता है, और इसी प्रकार से नर का भी जानिये, और बाज़ २ पण्डित लोग यह बात कहते हैं, सो क्या ? याने जो स्त्री रजस सुलाह से होती है, सो बाद स्नान के जिस पुरुषका मुख देखेगी, सो उसी रङ्ग ढङ्ग का बालक पैदा होवेगा, सो यह प्रमाण शास्त्र के अनुसार, कुछ ठीक नहीं है, क्योंकि युरुपियन लोग गोरे होते है, सो इन लोगो के काली औलाद क्यों नही होती है ? क्या यह प्रमाण इन लोगो के वास्ते नहीं है ? और बाज, २ पण्डित लोग यह बात कहते हैं, सो क्या ? याने जो पुरुष बलवान होता है, तो उसके बालक पैदा होता है, और जो स्त्री बलवान होती है, सो उसके कन्या पैदा होती है, सो हे भाइयो यह माया इश्वर की प्रबल है, परन्तु लखने और परखने मे नही आती है, इस से साफ स्पष्ट होता है कि, कोई पुरुष इस सृष्टिका पैदा करने वाला सिरजनहार है, इस लिये सब लोगो चाहिये कि दया विचारो और अपने २ अपराधों से

उस परमात्मा परब्रम्ह ईश्वर से, क्षमा मांगो, ताकि परलोक सब का सुधरे, हिंसा करना दोष है, याने जैसे अपना आत्मा जीव समझो, वैसेही पशुवों का भी समझना चाहिये,——

(* खत्री बंश की ज़ात का बेवरा यह है, सो क्या ? याने (No. 1— आढाई घर श्रेष्ठ कुलीन) और अढाई घर से (No. 2,—चार घर मध्यम) और चार घरसे (No. 3,—बारह घर मध्यम) और बारह घर से (No. 4,—बावन घर मध्यम) और सुरैतवाल और सरीन खत्रियों का इन चार नम्बरों से सम्बन्ध नहीं है, और अढाई घर क्यों कर हुये, याने मेहरे और कपूर, कोदो खाने, और लक्ष्मी का आधा खन्ना, याने यह तीनो मिल करके अढाई घर श्रेष्ठ कुलीन हुवे, क्योंकि आपति काल के किसी समय गदर के ज़माने मे इन तीनोंने अपने धर्मों को बचाया है, और रक्षा किया है, जिस जमानेमे याने नानक पन्थी जब मतथा, ओं श्रीगुरुवे नमः, सो श्रीगुरु नानक शाह भी (बहोरे) खत्री थे, श्रीनानक शाहके ज़माने मे टोपी और पगड़ीओं की, म्लेच्छ लोगोंने बहुत बेइज्जती किया है, तबसे बहुत से लोगोंने पगडी और टोपियों को पहिनना छोड दिया है, सो वह चिन्ह अभी तकै प्रतक्ष फल बरतमान देखलाई पड़ता है, सो क्या ? याने बहुत से लोग अब तक टोपी और पगड़ियों को नहीं धारण करते हैं, जबसे अङ्गरेजी धरम राज हुवा है, तब से अभय होकर बहुतेरे प्रजा लोग टोपी और पगड़ी धारण करने लगे हैं, और क़नौज के मेहरे और पिहानी, और मुरादाबाद के टन्डन ४ घर बोले जाते हैं, और बाकी सम्बन्धका ब्योरा सम्बन्धके अनुसार है, जैसेकि टन्डन, कपूर, मेहरे, और खन्ना, जिनका ४घरसे मेल है, सो चार घरमें हैं, जिनका बार घर से मेल है, सो बाहर घरमे है और जिनका ५२ घर से मेल है सो बावन घर मे हैं,——

—o—

और मैंने इलाहाबाद मे, इस्कृदर पत्रोंके द्वारों से, शिक्षा लोगों को दिया था, सो उस्का बेवरा तफसीलवार ज़ेल तशरीह के साथ यह है, सो क्या याने,—

१००० पत्र * B. चि० मन्नूलाल खज़ांची हाईकोरट के पिता के

* और इनका बिरादर खु,र्द हक़ीक़ी अर्थात् सगा लघु भ्राता चि० B, मदनलाल इलाहाबाद के, मिन्यूंसिपुल्टी आबकी मोहक में दफ़ातरमें, कालर्क है ।

स्वर्ग बास विषय मे, अपना दुःख शोक के साथ मे प्रकाश किया था, सो आप की बूवा मेरे चचाजी अनन्तराम स्वर्ग निवासीजी के साले को ब्याही थी, सो इनकी सगी बूवा यह भी हमारी रिश्ते से मामीजी होती हैं, इस पत्रको मैंने सोधा नहीं था, क्यों कि मैं उस समय बहुत मुफलशी व तकलीफ की वेहोशीकी हालत मे था, और मैं आशा करता हूं की एकक चौपाईके माने दो तथा तीन२ मतलब जाहिर होसक्ता है, यह पत्र मैंने प्रथम जनवरी सन् १८९९ ई० मे मुद्रित किया था।

१००० पत्रB.चि०नन्टूलालजी खजांची मिन्युसुपुलटी मोहकमें आब दफ्तर इलाहाबाद के नाना पिनसिन् याफ्तह खजांची कोरेन्सी के स्वर्गवास विषयमे अपना दुःख प्रकाश ता० २३ मार्च सन् १८९९ ई० मे किया था, सो इन के खान्दान से और हमारे ननिहाल का भी, रिश्ता है।

१५०० पत्र प्रथम जनवरी सन् १९०० ई० मे श्रीभारतेश्वरीजी को कोरत और संसारके वास्ते महाधर्म गौवों के विषय का उद्देश्य मुद्रित किया था।

१०००० पत्र ता० ८ अगस्त सन् १९०० ई० मे श्रीभारतेश्वरीजी को कोरती, और विधवावों के प्राण धर्म की रक्षाके हेतू शिक्षा करके, उपदेश मुद्रित किया था, और उस में राम बाग की और इलाहाबा के, रानी के मण्डी के, कोठीके लालाजी की सीफत बयांन मुद्रित किया था।

१०००० पत्र ता० प्रथम माह दिसम्बर सन् १९०० ई० को श्रीभारतेश्वरीजी की अस्तुति और श्रीरामलीला प्रागराजके बारेमे मुद्रित किया था, और उसमें प्रभु बड़े लार्ड साहिब और प्रभु

छोटे लाट साहिब की भी धर्म्मनीत के अनुसार संसार में प्रशंसा प्रकाशित किया था।

और हमारा लेख ता० २८ जून सन् १९००ई० के ४ (खण्ड १९ नम्बर २६) मे प्रयाग राजके साप्ताहिक पत्रमें यह मुद्रित हुवा है, याने मु० रामप्रसाद जी हाईकोर्ट के स्वर्गवास बिषयमें अपना दुःख संसारमे प्रकाश किया था, याने बाद मृत्युके शोक कौन पुरुष प्रकाश करता है, याने मित्र या शत्रु? सो हे भाइयों शोक मित्र प्रकाशित करता है, क्योंकि दुःखमे मित्र साथ देकर शरीक होता है, परन्तु शत्रु नहीं, सो देखिये हमारी यह मित्रता संसार में प्रसिद्ध है।

ॐ और इस पुस्तक मे जो पृष्ठ ६६ व ६७ मे (No. 30) की जो कविता मुद्रित है, सो यह संसार में मासिक पत्रके द्वारासे प्रकाशित हो चुका है, यह पत्र ता० १ अक्तुबर सन् १९०१ ई० को याने प्रयाग राजमे प्रसिद्ध हुवा है।

और पत्र ता० ६-११-१९०१ ई० मे प्रभु छोटे लाट साहिब पश्चिम उत्तर देशाधिकारी के लण्डन के जानेके समय मे, एक उपदेश श्रीदेवनागरी के रक्षा के बारे मे मुद्रित किया था, सो उसमें धर्म्मनीतके अनुसार प्रशंसा श्रीमान् पण्डित मदनमोहन माल्वी हाईकोर्ट वकील की देवनागरी के विषय मे तारीफ किया था।

२००० और कलकत्ते मे जो मैने पत्र मुद्रित किया है, सो इस पुस्तकके २७ पृष्ट मे बेवरेवार बेवरा विज्ञापन में मुद्रित है।

१००० पत्र यह अब सन् १९०४ ई० को संसार मे मुद्रित प्रमाणो के साथ मे प्रकाशित किया जाता है।

ता० २८ मार्च सन १८०४ ई० को कलकत्ते के मिन्युसुपुलटी इन्कमटेक्स के मोहकमे मे, दो घूँस खोर गिरफ्तार होकर माकूफ हुवे, याने जगन्नाथ जालान और असेसर लखूलाल सिरकार सत्ता-दत्त नोटिस श्रीमान् बाबू रामकुमार जैठमल जीके द्वारासे मालुम हुवा।

कृस्चन लोग दूसरे का धर्म्म नाश करनेके लिये, उपदेश संसार मे करते हैं, सो उनकी सरकार उनको तलब और खूब खर्च देती है, सो हे भाइयो हमारे उपदेशके द्वारों से हर एक मनुष्य उपदेश दूसरोंके धर्म को रक्षाके वास्ते संसार में कर सक्ता है, सो देखिये धर्म्मके विरोधी लोगोंने हमारी मेहनत पर कुछ भी ख्याल न किया, क्या यह अन्याय इलाहाबाद और कलकत्ते को खर्ची सभापति का नहीं है, हमारो सहायता करना तो दरकिनार रहा, परन्तु हमको रहने के लिये जगह तक नहीं दिया।

Errata.

अशुद्ध।	शुद्ध।
पृष्ठ ८ (No. 13) की १ पंक्तीकी फुट नोट मे, याने बिल्ल अर्थात् चूहा खानेवाली बिल्ली,—	याने बिल्ल अर्थात् घूंस खानेवाली बिल्ली
पृष्ठ १४ की २० पंक्ती मे— एक भैरवीचक्र स्थापित किया,	याने (भैरवजी का चक्र नाम मार्गी स्थापित किया।)
पृष्ठ ४४ ऊपरकी दूसरी पंक्ती मे, रन्डि—	रन्डी।
पृष्ठ ६८ के चौपाई के बाद दोहे की ४ पंक्ती मे, हितमानो बलदेव की सोहै मित हमार *—	यह मानो बलदेव की, सोहै मित हमार।
पृष्ठ ७१ की ८ पंक्ती में, सौकिया,—	शौकिया।
ऐजन १८ पंक्ती मे—बिरादरीमे,—	बिरादरी में।

अशुद्ध।	शुद्ध।
पृष्ठ ७४ की १३ पंक्ती मे, याने ३५॥ वर्ष से उसने यह अपने धर्मकी रचाकी है,—	याने ३५॥ अर्थात् साढ़े पैंतिस वर्ष से उसने अपने धर्म की यह रचा किया है, सो क्या? हमारी माताजी हमारी भावजें और मेरी स्त्री के हाथ की बनाई हुई रोटी नहीं खाती हैं, और हमारे बिरादरी मे, यह दस्तूर रेवाज़ है, याने बहू बेटी के हाथ की बनाई दाल भात रोटी को सास ससुर नहीं खाते हैं, और हमारी माताजी का यह बिचार नेम है, कि याने मजूरिन का बरतन मला धुवा हुवा को, अपने हाथ से दोबारह पवित्र पानी से मल धो करके तब उस पवित्र बरतन मे, अपने हाथ की बनाके रोटी को खाती है, बरना किसी दूसरे का बिश्वास याने इतबार नहीं, सुनते हैं कि राय लाला रामचरन दासजी साहिब बहादुर रईस इलाहाबादके गुज़र के वास्ते बिधवा फन्डमे से हमारी निज बड़ माताजी को कुछ खरच माहवारी प्रयाग राज मे देते हैं।
पृष्ठ ७८ की दोहेकी ९ पंक्तीमे, एतबारहि	इतबारहि।
पृष्ठ ७९ की ३ पंक्ती मे, क़लस,—	क़लम अथवा ख़ुरद क़लस याने दावात।
पृष्ठ ८५ की (No, 38) के शेर की दूसरी पंक्तीमें। न चाहिये देना किसी मुक़ाबलतावाजिब	न चाहिये देना किसीको मुक़ाबला वाजिब
पृष्ठ ९१ की फ़ुट नोटके बाद प्रथम पंक्ती मे, नौजाम,—	नौजान।
पृष्ठ ९६ की (No. 43) के क़सीदे के ९ पंक्ती मे, सैरि,—	सैरी।

अशुद्ध ।	शुद्ध ।
पृष्ठ ९८ की १६ पंक्ती मे, होता मे,—	होता है ।
पृष्ठ १०१ की नसर के बाद ५ पंक्ती मे, अमर लोग,—	अमर लोक ।
औ जुन १२ पंक्ती मे, अर्थात् हीन बरण से पृथ रखने का स्थान तपो भूमि,—	हिन्दुस्थान अर्थात् हीनं नीच वर्णम् दूषयन्ति येते हिन्द्वः तेषां स्थानं हिन्दुस्थान,—इस हिन्दुस्थान मे हीन बरण कौन हैं ? याने जङ्गली कंजड़ पासी इत्यादिक लोगो को जानिये, क्यों कि यह लोग जोकी प्रातःकाल मे खेत की सफाई करता है, सो उस जानवर पशु को यह हीन बरण लोग कोई देवी को बलदान करके भक्षण करते हैं, इन से हीन बरण कोई मनुष्य संसार मे नहीं है ।
पृष्ठ १०२ की चौपाई और सोरठा का (No. 47) व (No. 48),—	
पृष्ठ १०३ की १७ व १८ की पंक्ती मे, बार—बाहर,—	बारह ।

—···*···—

और मैंने ६ बरस कई जिले गवर्मेन्ट ख़ज़ानोंमे, काम ख़ज़ाञ्चगरीका किया है, सो उस्का सार्टिफिकिट इस पुस्तक के पृष्ठ ३७ में, चिट्ठी जनाब राय लाला शिवप्रसादजी साहिब बहादुर की मुद्रित है, और इलावह इसके मैंने ४ बरस इलाहाबाद बङ्कमें ख़ज़ाञ्चगरी का काम किया, याने २ वर्ष नैनीताल ब्रेञ्च में, हेड केशियरी का और २ साल याने कलकत्ता ब्रेञ्चमें जानिये, सो इस्का सार्टिफिकिट मिनजानिब राय लाला रामचरन दासजी साहिब बहादुर रईस

इलाहाबादका मेरे पास बज़रिये डांक हाजाके द्वारासे आना चाहिये, नैनीताल ब्रेञ्च में, जो मैने दो बरस काम किया था, सो उसका सार्टिफिकट मैने नैनीताल के ब्रेञ्चके अजिएटसे पाया था, लेकिन इलाहाबाद कलकत्ते ब्रेञ्चके पण्डितजी ने मांगने से नहीं दिया,—

उपदेश ।

(No. 49) कबित ।

पराई बहू बेटी (१दुर्जन निकालें, करें भृष्ट विधवा को रण्डी बनावें, (२ कमेटीके पञ्चों मे न्याय न भाई * पतुरिया के लड़के को घरमें जिलावें, मुण्डन जनेऊ को रीत चलावें, निरलज्ज कुलीनें को लाज न आई * बाज़ार में जाय करें मुंह न काला, एकसे एक लखो रन्डि लाला, क्यों न बिगाड़ें बहिन निज माई * अपनहिं आबरुह खूब बनावें, दुसरे की इज्जत खाक मिलावें, बलदेव सुनायके ज्ञान लखाई *

दोहा ।

बसुधा से बुद्धी बड़ी, लखिये ज्ञान निधान *
उपदेशक बलदेव को, करहिं सुजन सनमान *

(१ सज्जनों के क्या लक्षण है ? याने पतिव्रतावों और बिधवावों स्त्रियोंके धर्म्मों की रक्षाके हेतू इन सब स्त्रियों को धर्म्म-रक्षक लोग उपदेश सुनाते हैं, और इन सभों को उपदेशों के द्वारों से इन सब स्त्रियों को शिक्षा देते हैं, और सज्जन लोग जैसे अपनी मां—बहिन—बेटी—बहू समझते हैं, सो वैसेही पराई को अपने समान समझते हैं, और दुर्ज्जन कण्टक पुरुषों के क्या लक्षण हैं ?

प्रमाण मनुस्मृति पृष्ठ ५२८) अध्याय ८का श्लोकार्थ यह है, सो क्या ? याने—जिस राजाके राज्यमें (१ चोर (२पर स्त्रीगामी (३ * कठोरवादी (४ घर गांवके जलानेवाले (५ मारपीट करनेवाले नहीं रहते वह राजा इन्द्रलोक को प्राप्त होता है ॥ ३८६ ॥ जो राजा इन पाँचों अपराधियों से अपने राज्यको शुद्ध कर देता है सो वह अपने तुल्य बड़े २ महाराजाओं के बीच तथा संसार मे यश पाता है ॥ ३८७ ॥ ऐसाही वचन याज्ञवल्क्य ऋषीने लिखा है, जिसकी मिताक्षरा टीका जगद्विख्यात है। अतः—याने जो स्त्री अपने धर्म्मकी रक्षा करती है, सो उसके धर्म्मको कण्टक पापी लोग बिगाड़ कर नष्ट भ्रष्ट कर डालते हैं, याने कहांर अहीर इत्यादिक जो शुद्र बरण हैं, सो इन लोगों में, यह दस्तूर है, याने जब स्त्रीका पति मर जाता है, तब बाद इस्के उस स्त्री को उस्के जातका दूसरा पुरुष बैठा लेता है, सो अब इस कलिकाल बरतमान में, याने खानदानी शरीफ अशराफ कौम कुलीनों के घरों में यह बात पैदा होने लग गई है, याने जो नीच शुद्र बरण लोग कर्म्म अधम का करते थे, सो अब खास कर के ऊंच घरके लोग, यह बरतमान समय में, नीच कर्म्म करने लगे हैं, यह बात नवाबीमें थी, कि एक दूसरे की बहू बेटियों को खल लोग बिगाड़ डालते थे, सो आगे पहिले इसके यह बात अङ्गरेजी राज्यमें न थी, और न कभी सुनाई देती थी, सो अब यह बात आंखोंसे देखलाई पड़ती है, याने जिस बिधवा स्त्रीने, अपना धर्म्म कर्म्मको त्याग करके, उस कुलीन बिधवाने, दूसरे पुरुष को अपने बिरादरी का पुरुष कुलीन बरणको शुद्र बरण की तरह से बैठा लिया होय, और

(*) कठोरवादी कौन पुरुष कहलाते हैं ? याने जो लोग की दूसरे एक की मां बहिन की गाली देते हैं,—

उस विधवा स्त्रीके लड़का पैदा हुवा होवे, सो उस नाइनजार बरण शङ्कर लड़के का मुण्डन और यज्ञोपवीत देवताके निकट प्रोहित लोग, याने कुल पूज्य देवीके निकट कोई देवकार्य्य नहीं करा सक्ते हैं, याने जिस विधिसे उसने बालक बरण शङ्कर पैदा किया है, सो उसी रीतसे उस स्त्री और उस पुरुष को मुण्डन और यज्ञोपवीत अथवा बिबाह इत्यादिक करना चाहिये,

(२ कमेटी धर्म्मकी सभा का क्या नेम है ? याने धर्म्म और नीत की रक्षा करना चाहिये, और पापको प्रगट करके पापियों को नीत से दण्ड देना चाहिये, अब आज कलके ज़माने में, धर्म्म सभामें क्या न्याय होता है ? याने पापको छिपाते हैं, और नीत न्याय धर्म्मको त्यागते हैं, और नामवरीके वास्ते अनीत की रक्षा करके और अन्याय अहङ्कार के बस होकर फज़ूल बहुत सा द्रब्य ब्यय करते हैं।

—:*:—

(No. 50) **हासा तमाशा।**

रामकचौड़ी किसने खाया ?
*ददिया हमारी सास गई स्वर्ग धाममें *
हमिरा है मेरा नाम जो रोशन जहाँनमें*
राम कचौड़ी किसने खाया ?

(टेक।)

जीता है यमके दूतको कठिन संग्राम में *
सौ बरस के निकट होके पहुंची धाममें *
राम कचौड़ी किसने खाया ?

---

* हमारे ससुर की अमी मझवारीका दस मिरत लोकमें बुढ़िया का याने मृत्यु प्राप्त हुवा।

अन्तरा ।

बैसाख शुक्ल अष्टमी को प्रातकाल में *
सम्बत उनीस सौ की इकसठ के साल में *
राम कचौड़ी किसने खाया ?

अन्तरा ।

बैकुंठ लोक में गई बुढ़िया कयाम में *
बलदेव प्रसाद मिश्रीत यह गाते हैं तान में *
राम कचौड़ी किसने खाया ?

—•••✻•••—

हमारे खु.सुर असहाब लोगों का क्या नाम है ? सो हे भाईयो इन लोगों के नाम से मुझसे नफरत है, सो जिन महाशयों की नाम तफसील बेवरे वार मालुम करना होवे, सो इस पुस्तक के पृष्ठ ७७ की २२ पंक्तीमें नाम मजकुरों का देखने से हस्बुल ऊँल साबित होसक्ता है, और जिन महाशयों को इन लोगों का दरशन करना होवे, सो यह लोग (Shiboo Thakoors Lane No. 19) के मकान में रहते हैं, सो इन लोगों का दरशन करने से मनुष्य कृतार्थ होसक्ता है, इन लोगों से और मुझ से बोला चाली नहीं है, याने कब से।

दोहा ।

पौष शुक्ल की पञ्चमी, खिचड़वार दिन जान ।
उनीस सौ अट्ठावनो, यह विक्रम परमान ॥

जब से मैंने श्रीभारतेश्वरीजी के स्वर्गवास विषय का पत्र मुद्रित करके संसार में अर्पण किया है, तबसे यह लोग हमारे बलवान द्रव्याधीश धर्मके द्रोहियों से मिल करके मुझसे लड़ाई मोल लिया, सो हे भाइयो, मुझे भी लड़ाई आन को बहुत प्यारी मालुम होती है, सो क्या ? याने इन लोगोंने जब अपने लड़की की शादी मुझ से किया था, तब इन लोगों ने पांच हजार रुपये का मकान अपना खोद बेच करके किया था, सो हे भाइयो ! मकान खोद बेच करके शादी करने की क्या जरूरत थी, यदि चार घर में यह लोग अपनी लड़की को देते तो

इन को दस हज़ार रुपया मिलता, और अगरचे: बारह घर में अपनी कन्या को देते, तो बीस हज़ार रुपया कहीं से मिलता, यदि बावन घर में अपनी कन्या को देते तो बहुत सा गांव और रुपया मिलता, यानें जैसा कि महाराज बरद्वानकी रियासत है, अढ़ाई घरमें शादी करने की क्या ज़रूरत थी? हमारा शाला (नं० ३) का लड़का कई मरतबह घरकी रक़म लेकर भाग गया, सो उसको इन लोगों ने इज्जत दिया, और मैंने इस क़दर संसार में अपना नाम पैदा इज्जतकेसाथमें किया, सो हमारे शत्रु लोगोंने इर्षाके कारणसे, इन लोगोंसे हमारी हतक इज्जत कराया, खैर कुछ मुज़ाका नहीं, और मैं अपनी कन्या का कन्यादान लेने का अधिकारी नहीं हूं, क्योंकि मुझे इस संसारमें किसीका ससुर ज़नवरके रहना मनज़ूर नहीं है, हमारी कन्याका कन्या दान उसका नाना नानी लेने का अधिकारी है, अभी हमारे पास एक फूटी कौड़ी नहीं है, जब मुझे प्रभु बड़ेलाट साहिब और प्रभु छोटे लाट साहिब से इनाम व इकराम देहली के खुशीके बारे में, हमारी मेहनत का मेहनताना प्राप्त होयगा, तब मैं जो कुछ मुनासिब समझूंगा, सो मैं निज कन्या के विवाह का हक़ इलाहेदह कहीं जमा कर दूंगा, और मैंने अपनी स्त्री को दिल से त्याग किया, आगे जैसी राय सलाह और आज्ञा हमारी माताजी की होयगी सो वैसाही मैं करूंगा, हमारे निज लघु बुद्धी से न्याय को ब्रम्हा विष्णु महेश भी नहीं काट सकते हैं, पुरुष की क्या गिन्ती है, और हमारे मामले में कोई मुख्स दखल देने का मजाल नहीं है, सो हे भाइयो विचार करने की बात है, सो क्या? लोगोंने मुझसे कहा कि तुम्हारी ददिया सास बिमार है, सो व तुमको रोज़ मेरा याद करती है, सो उसको देख आना चाहिये, खैर सो एक रोज मैंने इरादा जाने का किया, सो हमारे चचिया ससुर (No. 2) ने एक बड़े जजबह् के साथ में गीदड़ भभकी देखलाया, और क्रोध करके कहा कि कोई ज़रूरत देखने की नहीं है, और जब यानें बुढ़िया मर गई, तब मुझे किसीने बुलाया तक नहीं, सो मुझे क्या ज़रूरत थी, सो मैं मुरदनी में जाता, इस लिये मैं भी खामोश होरहा, लेहाजा अब मुझे इन लोगों के घर का अन्न जल ग्रहण करना इस जिन्दगीमें मनज़ूर नहीं है, अगरचे यह लोग अब मुझे पूछें तो इन लोगोंको परवानगी नहीं दी जाती है।

उपदेश।

(No. 51) **शेर।**

* मालो मता कुछ रहा पास में *

फक़त शिवकी माला रखूं हाथ में *

चौपाई।

खल पछते हैं औसर बीते * सिरधुनि मरिहैं जीते जीते।
निरलज्जन को लाज न आवे * अपकीरत से अपजस गावे॥

साँपको मार डालना और बच्चे को छोड़ देना, और आगको बुझा देना, और चिनगारी को छोड़ देना, यह काम अक़िलमन्दों के नहीं हैं *

दोहा।

चिनगारी को छोड़िये, आगहि देहु बुझाय *
साँपको मारके फेंकिये, बच्चा लेहु बचाय *
बुद्धिमान छोड़े नहीं, चिनगी सांपहि बाल *
सुनहु मीत बलदेवकी, मारके डारे काल *

—···*···—

अतः—Jorasanko Calcutta Shib Kristo Daw's Lane No 2 के मकान में, L. बटुक नाथ, व B. बुधनाथजी पंजा ज्ञाती खत्री अढ़तिया रहते हैं * सो यह लोग हमारे (ससुर No 1)के परम मित्र हैं, सो इन लोगों ने मुझे ताना मारा, और यह मुझ से कहा कि तुम्हारी ददिया सास का सतरहां ता० 6—5—4 ई० को था, सो उस रोज़ बिरादरी को जेवनार राम कचौड़ी मिठाई इत्यादिकों की थी, सो हम भी जेवने को गये थे, और तुम्हारे ससुर के सगे भाई के लड़के का ब्याह था, सो ता० 10-5—4 ई० को सगाई हुई सो तुम्हारे ससुर लोगों ने ग़मी और ख़ुश ख़ुरमी में तुमको काट करके रद्द कर दिया, फिर बाद इसके मैंने यह उत्तर दिया कि यह काम बहुत बहादुरी का किया, जोकि मेरा अपमान किया, सो मुझे इस बात का कुछ मलाल नहीं है, क्योंकि हमारे जन्म कुण्डली में केतु अष्टम् स्थान में उदय है, सो इसका फल ज्योतिष सार ज्योतिष रत्न के अनुसार यह है, सो क्या? याने केतु ग्रह अष्टम् स्थान जन्म कुण्डली में उदय होने से शत्रुवों का मान्य पूज्यनीय होता है, और शुक्र चतुर्थ स्थानमें मकर राशिका उदय है, सो उसका फल यह है कि हमारे सज्जन लोग बहुत से मित्र होंय, और बारहवें स्थान में कन्या का राहु उदय है सो उसका फल प्रमाण चमत्कार चिन्तामणि के अनुसार यह है, सो क्या? याने खलों से मित्रता होय, सो हे भाईयो हमारे दो प्रकारके मित्र हैं, एकतो सज्जन महाशय लोग और दूसरे खल लोग, याने सज्जन लोग अपनी भलाई से बाज नहीं आते हैं, अथवा यह लोग

हमारी भलाई चाहते हैं, और खल दुष्ट लोग अपनी दुष्टताई से बाज़ नहीं आते हैं, याने इन लोगों का ईर्षा और दुष्टता रखने का सुभाव है, सो प्रतक्ष फल शुरू का देखिये सो क्या? ता० 11—5—4 ई० को श्रीमान् बाबु परसोतम दासजी खन्ना पगहिया पट्टी क्राथ मर्चेन्ट के यहां जेवनार थी सो इन महाशयने मुझे बहुत आगत स्वागत के साथ मे, भोजन का निमन्त्रन दिया, और राहु का प्रतक्ष फल यह है कि (No, 1) हमारे ससुर के यहां जेवनार थी सो हमारा निरादर किया, और क्या किया याने इनके सगे भाई (No, 2) के लड़की की सगाई ता० 10—5—4 ई० को B, चि० मन्नूलाल मेहरोत्रा २॥ घर खज़ान्ची हाई कोर्ट वकील इलाहाबाद के सगे फूफा के सगे बहिन्दोई के लड़की के लड़की से हुई, सो हमारे ससुरालवालोंने मुझे फड पर से काट दिया सो हे भाइयों, मुझे इस बात मे बहुत आनन्द प्राप्त हुवा, याने जब हमारी ददिया सास इस मिरत लोक मे थी, तब उसने मुझसे एक दिन एक छोटीसी वार्त्तालाप याने अपने लड़कों की स पूती बयांन किया, सो क्या ? याने इन लोगों के सगे बहिन्दोई बेकारी के हालत मे, मेरे घर मे आकर ठहरे सो इन लोगों मे अपने बहिन्दोई को बड़ी भारी बेइज्जती किया, तब वह बेकारी के हालत में अपने घर जाकर न मालुम क्या खाकर मर गये, सो हे भाइयो, यह मिरज़ापुर के शोरह पुरुष लोग अपने बहिन्दोई और नगद जमाई को नहीं मानते हैं, देवता लोग अपने जमाई को इज्जत करके अमीरी अथवा ग़रीबी में चरण पूजते हैं, और गँवार लोग पनहीं उठाते हैं मारने के लिये, सो हे भाइयो अङ्गरेज़ी धरम राज्य है, इस कारण से मैंने अपने प्राण को रक्षा पाया, नहीं तो खल और असुर शत्रु लोग मुझे चटनी करके भक्षण कर जाते, फिर मेरा नाम निशान भी इस संसार में न रहता, और (No. 1) हम से लड़ाई लड़के अपना कल्याण चाहता है, सो बहुत अच्छी बात है, सो क्या ? याने सब से यह कहता फिरता है, कि हमारी लड़की विधवा होगई है, सो बहुत ठीक बात है, याने अब (No. 1) को हमेशा के वास्ते अब सबूरी करना चाहिये, और हमेशा अपने दिल में यही समझना चाहिये * और सुनते हैं कि (No. 2) के लड़के की शादी में हमारे सगे भाई के खुसुर

साहिब और हमारे तइया ससुर लाला बचनलालजी भी अपने चचा जात भाइयों के, अकिल के दुश्मनी के वजह से गमी और शादी मे शामिल नहीं हुवे, सो हे भाइयो मै इस संसार में अपना आत्म घात करनेवाला नहीं हूँ, बल्कि इस संसार में, मैने औतार लिया है, याने दुष्टों कि दुष्टता दूर करने के लिये, और निज लेखनी के हारों से अज्ञानता का मुख भञ्जन करने के लिये, इस संसार में जन्म लेकर आया हूँ, और मैं सत्यवादी हूँ, और (No. 1) व (No. 2) व (No. 3) यह तीनो महाशय पेशा दलाली का करते हैं, सो हे भाइयो! एक छोटा सा प्रमाण यह है, सो क्या? याने हजार में सौ रोजगारी और दलाली पेशेवाले सत्यवादी निकलेंगे, और बाकी असत्य मिथ्या सौगन्ध खानेवाले अधर्मी झुठे निकलेंगे, क्यों कि अगरचे: यह लोग झूठ न बोलें, और मिथ्या सौगन्ध न खायें तावक्ते कि इन लोगोंको रोजगार और दलाली पेशों मे नफा न होय, और न फिर अदालत से भी सफाई रहै, चूंकि अब मैं अपना यह फैसला लिखता हूँ, सो क्या? याने अगरचे: (No. 1) व (No. 2) व (No. 3) अब यह लोग मुझे निज मुख जबान से जमाई कहैं और जमाई का नाता मानें, तो इन लोगों को दो हजार ठनाठन ठनठनाता हुवा डन्ड पर डन्ड किया जायगा, और इन तीनोंके लड़के लोग यदि मुझे अपना जीजा करके पुकारें और मुझसे यदि बहिन्दोई का नाता रखेंगे, तो इन लोगोंको इस्का निस्फ डन्ड पर डन्ड किया जायगा और (No. 1) शव्रू की लड़की जोकि मुझे ब्याही है, सो यदि मुझ से यह अपने स्वामी पति का नाता रिश्ता रखेगी सो इस्को भी इसी मुवाफिक् निस्फा निस्फी डन्ड पर डन्ड दिया जायगा, और इस्को खाने पीने की कुछ कमती नहीं है, क्योंकि इस अकिल के दुश्मन की लड़की

का पिता और दो चाचा और ४ भाई परवरिश करनेवाले मौजूद हैं, और जब हमारे पास कुछ द्रव्य होयगा, तब मैं भी गुज़ारे के वास्ते जो कुछ मुनासिब समझूंगा सो देदूंगा, और जब यह (No. 1) की लड़की जब हमारे पास रही, तब यह हमारा रोज़ चरण धोकर पीती रही, अब यह सुनते हैं कि दो बरस से यह अपने महतारी और चाची का चरण धोकर पीती है, सो अब मेरा चरण धोकर के पीनेके लिये इसको इस ज़िन्दगी मे नसीब न होयगा,—

(No. 2) व (No. 3) से हल्फ़िया बज़रिये तहरीर के जवाब तलब किया जाता हैं, सो क्या ? याने मैं (No, 1) का नगद जमाई हूँ, या नहीं ? और (No. 1) की सगी लड़की याने इन लोगों के सगे भाई भौजाई से भतीजी याने है या नहीं ? प्रथम मेरी सगाई एक बड़े भारी तअ़ल्लुक़ेदार बिना तिलक के राजा पक्के चार घर में होती थी, और यह सबंन्ध पक्का होगया था, क्यों कि अढ़ाई घरवाले पक्के ४ घर की लड़की को ले लेते हैं, परन्तु अपने लड़की को देते नहीं हैं, फिर बाद इस्के (No. 1) और इनकी महतारी जो कि अपने पुत्र पौत्रादिक यम के दूतों से हमारे वास्ते संग्राम करके इस बारे में स्वर्ग लोग को पधारी है, सो (No. 1) हमारे ताऊजी के चरण पर जाय करके गिरा और यह बात कहा कि हमारा आप उद्धार कीजिये, फिर बाद इस्के हमारे ताऊ साहिबने साफ़ यह जवाब दे दिया कि हम एक सबंन्ध तुम्हारे यहां करके पहुत पछताते हैं, सो हमको ओरह पुश्तों की लड़की लेना मनज़ूर नहीं है, फिर बाद इस्के (No. 1) से (No. 3) तक की बुढ़िया महतारीने क्या किया ? याने हमारी माताजी के चरण मे गिर कर बहुत रोई, फिर बाद इस्के हमारी ताई और महतारी व चाचीजीने यह सबंन्ध को स्वीकार कर

लिया, और तअल्लुकेदार बिना तिलक के राजा का सबंन्ध को वापस कर दिया, सो हे भाइयो मुझ से मिर्ज़ापुरनि की धुर्त्ताई न चलैगी, सो क्या ? याने यह कपूर के बेचनेवाले कपूर के सुभग कपूर में हम शिवजी के निकट दियासलाई लगानेवाले हैं, क्योंकि शिवजी के लिङ्ग का इस संसार में बहुत भारी महातम है, याने सभी लोग शिवजी के लिङ्ग को पूजते हैं, और श्रीशङ्कराचार्यजी के लिङ्गाष्टक कृत का लोग सदैव नित शिवजी के लिङ्ग के निकट पाट करते हैं, और मैं यह सुनता हूं की हमारे शिवजी के लिङ्ग को पूजन (No. 2) से परयन्त (No. 3) के लड़के लोग ख़ूब प्रेम के साथ मे, पाट और पूजा करते हैं *

—०—

श्री तुलसी कृत रामायण का प्रमाण यह है, सो क्या ? याने—चौपाई—शूद्र गँवार ढोल पशु नारी * यह सब ताड़न के अधिकारी * नारि बिबस नर सकल गोसाईं * नाचहिं नर मरकट किय नाईं * एक रोज़ मैं एक गली के सड़क मे चला जाता था, सो मैंने क्या देखा ? याने पांच चार लड़के लोग खेल मे यह कह रहे हैं, सो क्या ? याने साहिब ग़ुलाम, तेरी बीबी सलाम * यह बात सुन करके मुझे बहुत हँसी आई, सो हे भाइयो मै अपने निज माता का इकलौता पुत्र हूँ, मुझे बैरी के लड़कों से मोहब्बत नहीं है, बल्कि मुझे निज वृद्ध माताके चरण से स्नेह है, ग़ैर शख़्स लोगोंने मेरा सनमान किया, और अपने खास लोगोंने मेरा अपमान किया, और हमारे साथ में, अधर्मी सम्बन्धियों ने जो कुछ की बरताव किया है, सो कस व नाकस इस बातको जानता है, और मै यह नहीं जानता हूं

कि हमारी वृद्ध माताजी के साथ मे, प्रयाग राज मे अधर्मी सम्ब-न्धियों नाते दारोंने कैसा बरताव रखाहै, इलाहाबाद से मैने अपने मित्रों को चिट्ठी रवाना किया, सो एक साल का अरसा होता है सो इन लोगोंने मेरे चिट्ठी का उत्तर तक नहीं दिया, सो मेरे पास बज़रिये डांक हाज़ाके जवाब आना चाहिये, तफसील ज़ैल गुन्दरज बेवरेवार नामवर मित्र महाशयों से यह है सो क्या? याने एक बड़े दुःखके साथ मे, शख़्त जवाब तलब किया जाता है, सो क्या? याने ऐसे विद्वान बुद्धिमान होकर के हमारे चिट्ठी पत्रों का जवाब क्यों नहीं दिया, नाम बेवरेवार इन सब महाशयों को शिघ्र उत्तर देकर, डांक के द्वारा से हमारे पास भेजना चाहिये, श्रीमान् P. मदनमोहन माल्वी वकील हाईकोर्ट इलाहाबाद श्रीमान् चि० B. अमीर बहादुर श्री वास्तव कायस्थ A. M. वकील हाईकोर्ट—व चि० B. नवाब बहादुर A. F. श्रीमान् L. जय जय राम टण्डन २॥ घर सीनियर क्लर्क टेलिग्राफ आफिस इस्टेशन इलाहाबाद—श्रीमान् चि० B. रामकिशुन टन्डन २॥ घर क्लर्क इलाहाबाद बङ्क यह मेरे सगे ताऊ के साले का लड़का हैं, सो इन लोगोंने हमारा अपमान क्यों किया? और हमारे चिट्ठी का उत्तर क्यों नहीं दिया? जब मैं अङ्गरेजी पढ़ता था तब एक रोज़ हमारे ताऊ हरी राम स्वर्ग निवासीजी जब इस मिरत लोक में थे, सो एक रोज़ हमारी ताई साहिबह से खफा हुवे, और यह कहने लगे कि तुम इनको अङ्गरेजी पढ़ाती हो, सो मैं यह कहता हूं कि इस्की बुद्धी भ्रंष्ट हो जायगी, सो हे भाइयों यह बात मुझे याद आई सो क्या? याने अङ्गरेजोदां लोग मुरौवत मे काला वस्त्र लगाते हैं * और मैं अपढ़ मीडिल भी पास नहीं हूँ, परन्तु मैंने निज लघु बुद्धी के अनुसार से याने लण्डन पासवाले महाशयों से मैंने धन्यवाद ले

करके इस संसार मे छोड़ दिया, यह प्रताप हमारे जन्म कुण्डली के चतुर्थ स्थान में शुक्र ग्रह का फल है ॥

—※—

विदित हो कि जब (No. 1) व (No. 2) व (No. 3) से और हम से झगड़ा हुवा, तब हम अपनी सहायता के वास्ते श्रीमान् L. दामोदर दासजी साहिब कलकत्तिया टन्डन उर्फ राजा बाबू कलकत्ते की खत्री सभापति के पास हाजिर हुवे, तब इनका मुसाहिब B. बटुकप्रसाद टन्डन १२ घर क्लर्क डेडलेटर आफिसने दरवान से मना कर दिया, कि इनको न आने देना एक रोज़ मैं आपको मुलाकात के वास्ते आपके दौलत खाने (No. 55) बड़ा बाज़ार को कोठी में गये, सो दरवान लोगोंने मुझे नहीं जाने दिया, और फिर बाद इस्के मैंने बज़रिये डांक द्वारा के चिठ्ठी में यह समाचार भेजा, सो हमारे पास जवाब नहीं आया, सो क्यों ? याने मेहरबानी में कुछ ताकृत अगरचे होती तब मेरे पास जवाब आता, इस लिये हमारे जवाब को L. मौसूक साहिब खा बैठे, राम २ राम यह रईसों और शरीफों के धर्म्म नहीं हैं, और इलावह इस्के क्या है ? याने B. B. प्रसाद को और हमारो नातेदारो यह है, सो क्या ? याने श्रीमान् B. गोपाल कृष्ण मेहरोत्रा कबे अढ़ाईघर लख पती खत्री B. B. प्रसाद के सगे बूवा के पोते हैं, और इनको सगो भांजी हमारे सगे भतीजे को ब्याही है, सो हे भाइयो ईश्वरने हमारा यतना ऊंचा दरजा किया है, सो यह लोग द्रव्य के अहङ्कार से हमारा ऊंचा दरजा मेटा चाहते हैं, और B. B. प्रसाद के साथ में, मैंने यह नेंकी किया था, सो क्या ? याने इनकी पहिली शादी मैंने मुज़फरपुरमे करा दिया था, और दूसरी

शादी मैने इलाहाबाद मे करा दिया है, इस बात को श्रीमान् बाबू सांवलदास टन्डन मिरजापुरिया पक्के ४घर लाका इलाहाबाद बङ्क के बखूबी जानते हैं, सो B. B. प्रसाद टन्डन बनरसियाने इस कलि-काल वरतमान में, हमारी नेकीमें, लात मारकर फरामोश क्यों होते हैं, ? और जरा भी मुरौवत छु नहीं गई है, और कच्चे अढ़ाई घर साहिब मौसूफ बनारस के कलकत्ते में आयेथे, सो मैंने इनसे इस पुस्तक के बारेमे छपाई का चन्दा मांगा, सो आपने नहीं दिया, सो हमारी सहायता करना तो दर किनार रहा, याने चन्दा तक नहीं दिया, सो क्यों ? हमारी विरादरी से मुरौवत उठ गई है, अथवा संक्षेप कहीं २ साधारण है, सो मै आशा करता हूं कि कुछ दिन मे यह भी मिट जायगी,—

एक छोटा सा चुटकुला निमक मिरचें से पड़ पड़नेवाला क्या है ? याने जिन बैष्णव लोगों के कटरों में मछलियां काट २ करके बिकरी होती हैं, सो उस आमदनी के खरच में से, दस्तूरी लेनेवाले दस्तूर खोर लोग कौन २ हैं ? याने—B. B. Prasad मुशाहिब इत्यादिक लोगों को जानिये, और दस्तूर खोर लोगोंके पास रुपया आमदनीका विशेष इकट्ठा होजाने से, १२ घर और बांवन घरवाले, कुलीन २॥ घर बनना चाहते हैं, सो यह बात बहुत मुशकिल है, सो क्यों ? याने जैसे रुपये से तांबे पर मुलमा करने से, सोना नहीं होसक्ता हैं, वैसेही रुपये से बारह घरवाले, और बांवन घर-वाले, अढ़ाई घर नहीं बन सक्ते हैं, और दस्तूर खोर लोगोंको मछलियों के मुनाफों के खरचों में से दस्तूरियां लेते २ बुद्धियां अत्यन्त सुन्दर और पवित्र होगई हैं, सो क्यों कर ? याने दस्तूरखोर लोग अपने मतलब स्वारथ में प्रसन्न होकर मग्न होते हैं, और

पर स्वारथ उपकार में पश्चाताप करके नाना प्रकार के बिघ्न छोड़ते हैं, सो क्यों कर ? याने क्रपण लोग अपनाही भला चाहते हैं, परन्तु दूसरों का नहीं, और जिन २ वैष्णव लोगोंके कटरों में मछलियां काट २ परोख़त् होती हैं, सो उस ठाकुरद्वारे के आमदनियों के ख़रच में से, दस्तूर ख़ोर लोग दस्तूरी का मुनाफा इकट्ठा करनेवाले अबोधी लोग इस संसार में हमारी लेखनी नीतका साम्हना रुपये के अहङ्कार से नहीं कर सक्ते हैं, व्यय खरच में से आध आना रुपया दस्तूरी लेना, याने जिन २ बैष्णव लोगोंके कटरों में मछलियां काट २ बिकरी होती हैं, सो क्या आमदनी के ख़रच में से टका रुपया दस्तूरी लेना क्या मालिक को घाटा नहीं है ? अलबत्तह आमदनी के खरच में से आध-आना रुपया घाटा दस्तूरी लेनेमें पड़ता है, सो हमारी-रायमें यह है, सो क्या ? याने मछलियों की आमदनियोंके श्रीठाकुरद्वारोंके ख़रचों में से जो लोग टका रुपया दस्तूरख़ोर लोगोंके दस्तरियोंकी आमदनियां बंधी हुईहैं, सो मुनाफः में जमा होना चाहिये, ताकि दस्तूर ख़ोर लोगों कि बुद्धियां सुन्दर हो जावें, अत:—एक छोटा सा प्रमाण यह है, सो क्या ? याने बहुतेरे शुद्रों के यहां क्या रसूम यह है, याने बिवाह के समय में जब कच्ची रसोइयां की जेवनार बिरादरी की होती हैं, तब यह लोग अङ्गरेजी बूट और पांचो कपड़ा पहिन कर तीन बजे रात्रिको कच्ची रसोइँयां की पंगति पर भोजन करने को बैठते हैं, शास्त्र का प्रमाण यह है सो क्या ? याने ब्राह्मण और क्षत्री को ११ बजे उपरान्त रात में भोजन न करना चाहिये, और मदिरा मांस इत्यादिकों को भक्षण करके आँय-बाँय-साँय-शोर गु.ल मचाकर पत्तलों पर दुर्गन्ध करते हैं, और जब पिता की श्राद्ध होती है, तब एक पैसे का यज्ञो पवीत कलयुग के ठग

ब्राह्मण लोग इन शूद्रों को पहिना कर प्रतिष्टा के साथ तर्पण श्राध इत्यादिकों की प्रतिष्ठा कराते हैं, और यज्ञो पवीत पहिन कर यह अहङ्कार मारते हैं, कि मैं चत्रिय बंश मे हूं, सो बहुत ठीक बात है, सो क्या ? याने जो लोग कि बिवाह के समय अथवा तर्पण श्राद्ध इत्यादिको में यज्ञो पवीत पहिन कर चत्री बनने का दवा रखते हैं, सो यह लोग चत्री रुपये और बिद्या के बल से शुद्र से चत्री नहीं बन सक्ते हैं, जैसे कोई मुसलमान से हिन्दू नहीं होसक्ता है, देखिये जैसेकि ब्राह्मणों के मुन्डन यज्ञो पवीत शास्त्र के अनुसार से होता है, वेसाही हम सब खत्रियों के आठ व नव बरस की उमर में होता है* और जो लोग कि यज्ञो पवीत पहिनने के अधिकारी नहीं हैं, सो वह लोग इस कलिकाल बरतमान समय में यज्ञो पबीत पहिन कर शास्त्र पुराण इत्यादिकों को इस संसार में बहुतेरे आर्य्य समाजी लोग निन्द्या करते हैं *—

—०—

अत:—और कलकत्ते के मुरादाबादी टन्डन २॥ घर हमारे ससुरावालों के नातेदार हैं, सो यह लोग चारो भाई हमारे बिपत्त हैं, सो यह लोग श्रीतारा सुन्दरी देवीजी के निकटके क़रीब मकान (No. 53)मे रहते हैं, (No. 1)L. गौरी शङ्कर. (No 2) L. ठाकुर दास (No. 3) L. मुन्नीलाल (No. 4) L. श्यामदास याने यह लोग भी हमारे हितैषी नहीं हैं, क्यों कर नहीं हैं ? याने हमारे जन्म कुन्डली मे बुध मीन राशि पर षष्टम् स्थान में उदय है, सो इसका बरतमान फल समय प्रतिकूल से यह मिलता है, सो क्या ? याने प्रमाण लग्न चन्द्रिका पृष्ट ५५ श्लोकार्थ ५० का भाषार्थ यह है, सो क्या ? याने चुद्र भाइयों का बैरी हो * चुद्र कौन हैं ? जो लोग कि हमारे मात्र पत्त उपदेशों के बिरोधी और हमारे द्रोही होकर हमारा निरादर किया है, सो वही लोग इस संसार में शुद्र की समान हैं, *

(No. 52) **पद।**

गर्भ करो ना प्यारे तनको यह सरांय दुनियां जानों।
पर उपकार हृदय से राखो यह मेरा कहना मानों॥
ईर्षा हिंसा ताप को त्यागो अन्त समय का डर जानों।
लाख करोड़ बानबे स्वांसा पानी का बुल्ला जानों॥
ना घर मेरा ना घर तेरा सब माया सपना जानों।
बलदेव रामको भजले मन मे ना कोई अपना मानों॥

—०:०—

(No. 53) **(नसर।)**

अनीत को लखिये काली मे पड़ी।
यह दुनियां धरम नीत से है खड़ी॥
क्या? माया सताती है यारो बड़ी।
चलैगी हमेशा न दिल की घड़ी॥
रखो यारो नेकी सभों से बड़ी।
लखो नीत बलदेव की क्या कड़ी॥

—※—

जिन महाशयों को विशेष द्रव्यकी गर्मी दिमाग़में पहुंचो होय, सो दिमाग़ की गर्मी को शान्ति करनेवाली हमारी यह दवाइयां एक हफ़्ता इलाज सेवन करने से, याने दिमाग़ को मुकौवी तर बतर पहुंचानेवाली, है, सो क्या? याने मगज़ कद्दू, मगज़ पेंटा, मगज, बादाम यह चारों एक तोला और दस दांना स्याह मिर्च और एक माशे काहू और आध पाव बनारसी चीनी और आध सेर कच्चा गौ के दूध मे कपड़छान करके रोज़ पीनेसे दिमाग़ के अशान्तता की गर्मी शान्ति होजायगी, और दिमाग़ को हमारी यह दवाइयां आज, मूदह विशेष फ़ायदा मुफ़ीद होयगी।

—※—

महाशयों—

बाज़ह होकि जब कि वृष्टी कलकत्ते मे बहुत भारी होती है, तब मछुआ बाज़ार के सड़क इत्यादिकों मे नाव, अर्थात् किश्तियों की ज़रूरत पड़ती है, सो हे भाइयो मिनु-

सुपुल्टी किस मर्ज़ की दवा है, यदि पानी का निकास मिन्युसुपल्टी कलकत्ते की सड़कों में नहीं कर सक्ती है, तो मिन्युसुपल्टी को क्या करना चाहिये ? याने दरिया के नाव किश्तीयों का प्रबन्ध सड़कों में रखना चाहिये, कहां पर याने जिस सड़कों में पानी का निकास न होय

उपदेश।

(No, 54)

दोहा।

(* कन्या छोटी व्याहिये, अठहिं बरस परमान *
नवहिं बरस की उमर में, बालक नीत बखान *
रजस्वुला से होत है, कन्या दसवें साल *
यह नीत बलदेव की, सुनिये सबै क्रपाल *

(ग़ज़ल।)

कहीं जगमें देखा है दुलहा बड़ा है।
क्या॰बुढ़े से कन्या का व्याह पड़ा है॥
कहीं यह भी देखा है दुलहिन बड़ी है।
जयमाल छोटे लड़के को पड़ी है॥
बिचारो यह यारो सुनो ग़ौर कर।
प्रमाण को लखिये मेरे प्यारो सर॥
क्या ? दुनियां के फन्दे में जाल पड़ी है।
लखो नीत बलदेव की क्या कड़ी है॥

(* याने बहुतेरे बुढ़े लोग कन्या मोल लेकर के बिवाह करते हैं, सो हे भाइयो जो लोग कि कन्या ख़रीद करके बिवाह करते हैं, सो वह कन्या निज कन्या के तुल्य होगई, सो हे भाइयो ! कन्या मोल लेकर बिवाह करना याने बेचनेवाले को और ख़रीदनेवाले को इन दोनो को नर्क प्राप्त होता है, और कन्या को अपने से जो कुलीन हो सो उस्को अच्छा बर और अच्छा घर देख करके देना चाहिये, क्योंकि कन्या और गौ दोनो एक समान जानना चाहिये, याने गौ को जिस खूंटे में बांधी जायगी, सो वह उसी खूंटे में बँधी रहैगी, सो इसी प्रकार से कन्या का प्रमाण भी जानिये *

इस पुस्तक की पृष्ठ ९७ (No. 44) की जो दोहे का प्रमाण (मनुस्मृतिः स० पृष्ट ३३३) अथ पञ्चमोऽध्यायः—भा० ज्ञान तप अग्नि, अहार मिट्टी, मन वारि (जल) लेपन वायु, कर्म सूर्य काल ये देह धारियों की शुद्धि के कारण हैं—१०५—अन्वय पन्थामाश्च विशुद्धयंति सोम सूर्यांशु मरुतैः ॥ ज्ञान आदि शुद्धि के कारण है, तिन मे ब्रमह्ज्ञान बुद्धिरूप अंतः करण की शुद्धि का साधन है, सोई आगे कहेंगे, कि बुद्धी ज्ञान से शुद्ध होती है, तप जैसे तप से बेदके ज्ञाता अग्नि जैसे फिर पाक से मिट्टी का पात्र अहार (भोजन) हवि की यवागू (लपसी) मिट्टी और जल, मनः (जैसे मनको जो पवित्र दीखे सो करे) संकल्प बिकल्प रूपमन हैं, और निश्चय रूप बुद्धी यही मन बुद्धी का भेद है, और उपाजन अनुलेपन मर्जन से घर कर्म जैसे अश्व मेध यज्ञ, अर्क सूर्य जैसे अशुद्ध के देखने से, सूर्य के दर्शन से शुद्धि काल (समय) जैसे ब्राह्मण दशदिन मे, यद्यपि वायु की शुद्धि का हेतु मनुने नहीं कहा, तथापि इस विषय के बचनानुसार मानने योग्य हैं, कि चन्द्रमा सूर्य की किरण और पवन से मार्ग शुद्ध होते हैं—१०५—

—*—

ॐ ब्रह्मणे नमो नमः नमो नमः ब्रह्मणे ।

श्रीमद्भगवद्गीताष्टादशोध्यायः ॥ १८ ॥

श्लोकार्थः ।

सत्व गुण जिनके मुख्य हैं, ऐसे को ब्राह्मण कहिये, और जिनके सत्वगुण लिये, राजसो गुण मुख्य हैं, ते क्षत्री कहिये, और जिनके तमोगुण लिये, राजसोगुण मुख्य हैं, ते वैश्य कहिये, और जिन के रजोगुण लिये, तमो गुण मुख्य हैं, ते शूद्र कहिये, तहां ब्राह्मण के जो स्वभाव के कर्म्म हैं, सो यह कहते हैं, हे अर्जुन:—

दोहा ।

शम अरु दम तप शौच पुनि, क्षमा नम्रता भाव।
आस्तिक ज्ञान विज्ञान यह, ब्रह्मज कर्म्म स्वभाव ॥४२॥

अर्थात्—

अर्थ:—याने शमको कहते हैं, मनका निग्रह, और दमको कहते हैं, इन्द्रियन का निग्रह, और तपको कहते हैं, पूर्वोक्त शरीर का तप, और शौच को कहते हैं, अंतः करण की पवित्रता, और बाहिर शरीर का तप, और चान्ति को कहते हैं, चमा, और आर्जव को कहते हैं, नम्रता, और ज्ञानको कहते हैं, शास्त्र ज्ञान, और विज्ञान को कहते हैं, अनुभव, और अस्तिक्य को कहते हैं, शास्त्र पुराण और परलोक, यह सब याने सत्य हैं, ऐसी जिस्की बुद्धी होवे सो यही सब कर्म ब्राह्मण के स्वभाव लचण सेउपजते हैं ॥ ४२ ॥

श्रीकाशी निवासी बलदेव प्रसाद मेहरोत्र अढ़ाई घरस्य बर्म्मणा: ब्राह्मण विषय उपदेश: कृत:,—

(No. 55) —* चौपाई *—

ब्राह्मण को है जगमे नीका * उत्तम बुद्धी कोमल जीका *
चारों बेद उचारहिं गीता * दया धरम अरु जानहिं नीता *
ब्राह्मण वही जो ब्रह्म को जानै * तीन काल की संध्या ठानै *
ब्राह्मण नित्य जो तर्पण करें * पार ब्रह्मको हिय बिच धरें *
नित बलि बैश्य बिप्रके धर्म्मा * श्रीद्विजबर के यह सब कर्म्मा *
सकल शास्त्र को खूब बखानै * तनि को मन से लोभ न मानै *
कथा पुराण आदि गुण गावैं * धरम नीत उपदेश सुनावैं *
पढ़े बिप्र की सङ्गत कीजै * धरम शास्त्र से मन्त्र को लीजै *

दोहा ।

श्रीद्विजबर को पूजिये, (*जुगुलहि जोरे हाथ ।
उपदेशक बलदेव यह, शीश नवावै माथ ॥

---

* दोनो ।

प्रमाण,—

प्रमाण:—मनुस्मृति: अथ तृतीयोऽध्याय: (पृष्ट १३०) श्लोकार्थ स० (पृष्ट१८४) अत:-भावार्थ:-यह है, सो क्या ? याने निंदित हैं आचरण जिनका और सज्जनोंके सङ्ग मे, एक पंक्ति भोजन करने की अयोग्य, हैं, इन नीच ब्राम्हणों (पूर्वोक्त काना आदि) को शास्त्र का ज्ञातादि जातियों में श्रेष्ट (ब्राम्हण) देव और पितरों के कर्म्म मे बर्ज दे, अर्थात् पूर्व्व जन्म के संचित पाप से प्राप्त हुवा काना आदि स्वरूप जिनका होय, और रोगी वा जिनके अङ्ग में, दाद, खाज, गर्मी, सुजाक, मिर्गी आदि रोग, विद्यमान हों, वा पूर्व मे हो चुके हों, और अङ्ग हीन हों, जैसे काने, लूले, व लङ्गड़े, और कुष्टी आदि, ऐसे ब्राम्हण देवता और पितरों के कर्म्म मे अयोग्य हैं, अथ्वा ऐसे ब्राम्हणों को गुप्त श्रद्धानुसार द्रव्य देना धर्म्मार्थ है, और एक साथ पङ्गति में, न खिलाना चाहिये, क्यों कि कुष्टी आदि को पङ्गति मे, जेवावने से पङ्गतिवालों को घृणा प्राप्त होयगी, अत:—कर्म्मण (भेंगा) जन्म का भाग्यवान होता है, परन्तु धर्म्मण जनम का (भेंगा) भाग्यशाली नहीं जानिये, १६७—

—o—

उपदेश।

(No. 56)

चौपाई।

लङ्गड़े कुबड़े टेढ़े कान्धे * कुष्टित बर्जित ब्राम्हण गन्धे।
काने अन्ध बधिर तिरभङ्गे * ऋत्विज जापक विप्र कुढङ्गे॥
चक चौंधि अरु रोग सताये * जापक दाद खाज खजुलाये।
जे चाबहिं दुइ सेर चबैंना * घुट पुट घुट किन बोलहिं बैंना॥
यह सब शास्त्र बिरुद्धहि काजा * जानहिं द्विज अरु सुजन समाजा।
द्विजनहिं की गुण पुराण गाई * करहु बिचार नीत से भाई॥

दोहा।

मनुस्मृती पुस्तक लखो, सुनियें सबै सुजान।
उपदेशक बलदेव की, लखियें नीत प्रमान॥

••••••o••••••

(No. 57) **चौपाई ।**

जो ब्राह्मण हल जोते बोई * करहु प्रणाम दूरसे सोई ।
जो ब्राह्मण अति करै ठगाई * करहु दन्डवत दूरसे भाई ॥
ब्राह्मण पढ़े न विद्या थोड़ा * कबहुं न मारहु भूलहि कोड़ा ।
कर्म्महिं नीच न उनसे लेना * जो कुछ बने धरम लखि देना ॥
जो ब्राह्मण को होय न बोधा * कबहुंन करिये रिस भरि क्रोधा ।
दीन वचन से करहु प्रणामा * विप्र पधारहु निज तुम धामा ॥
ब्राह्मण करै जो कर्म्म कसाई * डण्डहि देहु नीत से भाई ।
मूढ़ विप्र से रहिये दूरी * कटुक वचन नहिं कहिये क्रूरी ॥

दोहा ।

अपढ़ विप्र को किजिये, दूरहि से परणाम ।
बलदेव को उपदेश यह, पूजहि ब्राह्मण नाम ॥

अपढ़ ब्राह्मणों के यह लक्षणादि हैं,—

(No. 58) **पद,—**

ब्राह्मण होकर ब्रह्म न जांना प्रोहितजी कहलाते हैं *
संध्या तर्पण अपढ़ न करते द्विज ठग देव पूजाते हैं *
सारसुत ब्राह्मण होकर मुख से गाली भयानक लाते हैं *
प्रोहित होकर जिजमानों पर सोंटा लेकर धाते हैं *
गांजा पीते चोरी करते जेहलखांने को जाते हैं *
कलयुग के हैं ठग परोहित बिरथा पांव पूजाते हैं *
खत्रीका अन्न पानी खाकर इधर उधर अठलाते हैं *
वेद शास्त्र नहिं लिखते पढ़ते बिरथा जन्म गंवाते हैं *

बचे रहो ऐसे प्रोहित से जग में कथा सुनाते हैं *
यह सब बातें मतलब की बलदेव हित लखाते हैं *

—— * ——

और इस (No. 58) का निज कृत पद उपदेश अपने हस्ताक्षर द्वारा से लिख करके एक नकल इसकी मैंने प्रभु छोटे लाट साहिब पश्चिम उत्तराधिकारी की सेवा में भेजा था, जिसकी पहुंच इस पुस्तक के पृष्ट ३१ में ता० १५ सितम्बर सन् १९०० ई० की रसीद चिट्ठी मुद्रित है, और इस लेखकी दूसरी नकल अपने हाथ से लिख करके जनाब चौधरी महादेव प्रसादजी साहिब श्रीवास्तव कायस्थ रईस आज़म तअल्लुक़ेदार नानपुर ज़िला मुज़फ़्फ़र पुरके हवाले किया था, आप की कोठी इलाहाबाद स्थान अहियापुर में क़ाबिल दीद दरशन के योग्य है, आप किसी शख़्स की शिफ़ारिश नहीं करते हैं, आपने हमारे ऊपर मेहरबानी करके एक चिट्ठी शिफ़ारशी महीना जौलाई सन् १९०० ई० में, अपने क़लम फ़ैज़ मुबारिक अदल से लिख करके इलाहाबाद के रानी के मन्डी के, राय साहिब बहादुर मौसूफ़ के नाम से मुझको दिया था, सो क्या ? याने लाला बलदेव प्रसाद माननीय पुरुष का अपमान अथवा निरादर न करना चाहिये, और इन पर आपकी हमेशा के वास्ते मेहरबानी रहना चाहिये, क्योंकि जो कुछ सलूक आप इनके साथ करेंगे, सो वह अहसान हमारे ऊपर होयगा, , और इन पर निगाह परवरिश की रखना चाहिये, सो है भाइयो। मैंने यह चिट्ठी जनाब चौधरी साहिब मौसूफ़ की अपने हाथसे ख़ास राय साहिब मौसूफ़ बहादुर इलाहाबाद के रानी की मन्डीवाले के हाथ में हवाले किया था, फिर बाद इसके क्या हुआ ? याने राय साहिब बहादुर मौसूफ़ने इस शिफ़ारशी चिट्ठी को तिरिस्कार करके एक बड़े जज़बे के साथ में, कूड़े पर फेंक दिया, सो क्यों ? याने इस कलिकाल ज़माने में, जिसके पास एक सौ रुपया होता है, सो उसको एक बोतल का नशा होता है, सुनते हैं कि आपने अपने पिता के वफ़ात के बाद याने लाखों रुपये हिस्से बख़रे में बहुतसी जायदात इस्टेट वग़ैरह को पाया है, इस सबब से आप अपनी दौलत के नशे में अथाह हैं, सो मैं यह आशा करता हूं कि हमारे सब सज्जन मित्र महाशय लोग इस अथाह तथा अज्ञान नशेको ज्ञानी से शिक्षा देकरके बख़ूबी इस सिरत लोक में, अमृत पान करेंगे और द्रव्यके अहङ्कार बलसे अबोधी लोग हमारी अनहित क्यों विचार करते हैं? क्योंकि? अङ्गरेज़ी धरम राज्य है, क्या हमारी नम्रता इस संसार में प्रसिद्ध नहीं है ? और हमारी नीत लेखनी के कारण से कोई अबोधी की दुष्टता तथा अज्ञानता मुझ से इस संसार में, न चलेगी, द्रव्य के अहङ्कार बल से कोई धूर्त हमारी मेहनत को इस संसार में नहीं मेट सक्ता है,

जैसे रावण को राम के नाम से बिरोध था, वैसेही हमारे माव पच उपदेशों से हमारे द्रोही लोगों की सेना दल को बिरोध है, क्योंकि देवता लोगों के हृदय में, सदा ज्ञान और नीत बास करती है, परन्तु असुर और खल लोगों के हृदय में, इससे उलटी बीपरीत की अज्ञानता जानिये, नीत से बलवान कौन ? जो महाशय इस संसार में न्यायधीश लोग न्याय को पसन्द करनेवाले हैं, क्योंकि मैंने दुसह दुःख सह करके इस संसार में, धर्म्म का सनमान किया है, यह बात हमारे उपदेशों के द्वारों से क्या संसार में, प्रसिद्ध नहीं है ?

(No. 59) **दोहा।**

सदा न बसुधा थिर रहै, सदा न जीवै प्रान *
नेकी बदी को जानिये. जगमे रहै सुजान *
मिथ्या सपना जानिये, थिरत लोक परमान *
उपदेशक बलदेव की, बानी अमृत जान *

....

इस पुस्तक के १२७ के (No. 55) के शब्दार्थ का निर्णय यह है, (शीश नवावै माथ) अर्थात् शीश—चांद याने खोपड़ी के ऊपर के भागको कहते हैं, और माथ—पेशानी अर्थात् मस्तक को कहते हैं।

प्रमाण,—

इस पुस्तक के पृष्ट १२५ के उपदेश (No. 54) का प्रमाण शिघ्रबोध प्रथम प्रकर्ण ज्योतिर्विंद्काशिनाथेन बिरचित के अनुसार यह है—(प्र० १ भा० टी० पृष्ट १७)।

मूल।

गौरी अष्टाब्द कावापि नव बर्षाच रोहिणी *
दश बर्षा भवेत्कन्या पत ऊर्द्ध रजस्वला ॥ ५२ ॥

भाषार्थ,—

अष्ट बर्ष में गौरी की संज्ञा जानिये, और नव बर्ष में रोहणी, दश बर्ष में कन्या संज्ञा जानिये, ताके उपरान्त रजस्वला कहते है * ५२ *

——:*:——

Errata.

अशुद्ध।	शुद्ध।
पृष्ट ७ की हेडिङ्ग (No. 11) अवैया—	सवैया—
पृष्ट ५६ की ग़ज़ल की (No. 26) की ७ पंक्तीमें, यह कह्ने की सभों मे सङ्ग—	यह कह्नेकी सभों के सङ्ग।
पृष्ट ६७ No, 30 के ४ पंक्ती में, मणि—	मणी।
पृष्ट ७५ No. 31 के ३ पंक्ती में. श्रीऋषि—	श्रीऋषी।
पृष्ट ७६ की प्रथम पंक्ती में, याने चश्म ख़ोरा—	याने,—चश्म ख़ोरा।
पृष्ट १०३ की १० पंक्ती में, श्रीगुरु नानक शाह भी वहोरे खत्री थे—	यानेश्री गुरु नानक शाह यह भुजाई बेदी ५२ घर मे खत्री थे।
पृष्ट ११३ की १७ प्रंक्तीमें, व तुमको—	वह तुमको।
पृष्ट ११९ कीर पंक्ती में, इलाहाबाद से—	इलाहाबाद को।
अैज़न ६ पंक्ती मे महाशयों से—	महाशयों के।
अैज़न १८ पंक्ती में, नहीं—	नहीं।
पृष्ट १२२ की १४ पंक्तीमें, दस्तरियों की—	दस्तूरियों की।
पृष्ट १२४ नसर के बाद प्रथम पंक्ति में, गर्म्मोंकी—	गर्म्मों की।
पृष्ट १२६ के ५ व ८ व ११की पंक्तियों में हौती, श्रीर उपाजन, सूय—	होती, और, उपार्जन, सूर्य।
पृष्ट १२८ की ७ व ९ की पंक्तियों में, आमहत्य-जीवनाने—	आमहत्य-जेंवावने।

(No.60) **ग़ज़ल ।**

श्रीमन राम मेरा क्या वह सबको याद रखता है *
परखते लोग दिल से हैं अदल से न्याय करता है *
वह हर इक शख़्स के दिलको बख़ूबी जान लेता है *
नहीं चलती किसी की है भले का साथ देता है *
ज़माने को हुवा है क्या जो नेकी नेक खोदेते *
जो बोते हैं मुझे काँटा उसे हम फूल बोदेते *
हमारी याद रखता है न उस्की याद हम रखते *
लखा बलदेवने माया जो उस्के ध्यान में कहते *

इस पुस्तक को पृष्ट ३३ से परयन्त मुद्रित पृष्ट १०४ ताईं यह लेख प्रभु वाइसराय की सेवा मे, ता० 12—4 ई० को (पोष्टाफिस खेंगड़ा पट्टी, कलकत्ते) के (A. D.) रजीष्टी (No. 157) के द्वारा से रवाना किया था, सो जिस्का इकनालिजमेन्ट मैंने बज़रिये चिट्ठी (No. 12445) के साथ मे, हवाले ता० 31—5—4 ई० के बमोजिब लेटर (Presidency Post Master Sahib Calcutta) के द्वारा से (No. 157) का इकनालिजमेन्ट की नकल पोष्टाफिस का कृतार्थ किया, मै इस बात से पोष्टाफिसको आगाह करता हूं, सो क्या ? याने मेरे जन्म कुण्डली के समय का सूर्य्य पञ्चम स्थान कुम्भराशि से चलित होकर षष्टम् ग्रह के स्थान मे मीन राशि पर उदय होगया है, जिस्का फल चमत्कार चिन्ता मणि ज्योतिष के अनुसार यह पाया जाता है, सो क्या ? याने कलयुग के अन्याई अधर्मी भिन्न ठग लोग हमारे फायदे के बारे में, ठगई और चोरी करें, और यह अङ्गरेज़ी धरम राज्य इस कलिकाल की दुनियां में बरतमान बिख्यात है, सो मै इस बात से पोष्टाफिस को बख़ूबी

प्रसिद्ध करता हूं, की हमारे नाम की चिट्ठी पत्री इत्यादिक इस कलयुग बरतमान समय प्रतिकूल में, गोलमाल न होनें पावे, क्यों कि? अङ्गरेजी राज्य सतयुगके समय का है, और मेरा यह नित नेम है, सो क्या? याने मैं रोजमर्रा चिट्ठी रसावों से दरियाफ्त कर लेता हूँ, कि हमारे नाम को कोई चिट्ठी पत्री इत्यादिक तो नहीं है, क्या कारण है? कि हमारा यह पाकेट ता॰12—4—4ई॰ को रजिष्टर्ड (A. D. No. 157) का ता॰ 14—4—4 ई॰ को जनाब वाइसराय आलीजाह के खिद्मत शरीफ मे डिलिव्री हुवा, सो इस्का एकनालिजमेन्ट असली नहीं, बल्कि असली का नकली ता॰ 31—5—4 ई॰ को मुद्दत कै बाद मुझे हासिल हुवा।

---

१०८) मीजान कुल टोटल इस पुस्तक के चन्दे छपाई ९५ पृष्ट को १०२ पुरुषों के बाबत को,—

॥) श्रीमान् बाबू चेतराम, रामबिलास अग्रवाला मल्लिक ष्ट्रीट No. 28 के मर्चेन्ट से ता॰ 18—3—4 ई॰ को पाया।

६) हरीसन रोड खेलमोहन देव मल्लिक को कोठो (No. 180) व (No. 90/3) के मर्चेन्ट आढ़तियों से पाया।

१) श्रीमान् बाबू कालूराम, सागरमलजी से पाया, ता॰ 18—3—4 ई॰।

॥) श्रीमान् बाबू घनश्याम दास, रामेश्वरजी से पाया ता॰ 14—5—4 ई॰।

॥) श्रीमान् बाबू कस्तूरीमल, गौरीदत्तजी से पाया, ता॰ 14—5—4 ई॰।

१) श्रीमान् बाबू उदयराम, मन्नालाल सूतापट्टी (No. 90/3) से पाया ता॰ 12—5—4 ई॰

१) श्रीमान् बाबू हरसुख राय, रामचन्द्र बागला जी से पाया, ता० 17—5—4 ई० ।

१) श्रीमान् बाबू भीमराज, मुरलीधर बागलाजी से पाया, ता० 17—5—4 ई० ।

१) श्रीमान् बाबू जीवनराम, शिवबक्सजी से पाया, ता० 22—5—4 ई० ।

॥) श्रीमान् बाबू रामनरायन, जयलाल मर्चेन्ट तूलापट्टी (No. 76) से ता० 21—3—4 ई० को पाया ।

॥) श्रीमान् बाबू भीखनचन्द राठी मर्चेन्ट सूतापट्टी गनेश भक्तके कटरा से ता० 21—3—4 ई० को पाया ।

॥) श्रीमान् बाबू घनश्याम दास जालान ब्रोकर चांदी बाजार के हरीसन रोड से ता० 24—3—4 ई० को पाया ।

१) श्रीमान् बाबू तेगासिंह पटने के हर मन्दिरवाले से पाया, अपर चीत्पुर रोड (No. 385) ता० 27—3—4 ई० ।

२) कोठी शिवबक्स बागला तूलापट्टी (No. 132) के मर्चेन्ट अढ़तियों से पाया ।

१) श्रीमान् बाबू हरदेव दास, जानकी दासजी से ता० 28—3—4 ई० को पाया ।

१) श्रीमान् बाबू भागीरथ दास, फूलचन्दजी से ता० 1—4—4 ई० को पाया ।

१) श्रीमान् बाबू जादोसिंह भूमिहार ब्राह्मण कन्ट्राक्टर मिन्यु-सुपुल्टी कलकत्ता से ता० 28—3—4 ई० को पाया, मलङ्गा लेन (No. 31) कलकत्ता, निवासी मौज़े भगवान पुर ज़िला मुज़फरपुर ।

१) श्रीमान् बाबू हरसुख दास, दूलीचन्दजी से ता० 29—3—4

ई० को पाया, कालो गोदाम मुल्लिक अफीम का चौरस्ता (No. 12).

१) श्रीमान् बाबू चैनरूपजी, संपतिराम श्ररमनी ष्ट्रीट (No. 9) से ता० 29—3—4 ई० को पाया।

२) सूतापट्टी के स्नाथ मर्चेन्टों से पाया।

१) श्रीमान् बाबू सुखदेव दास, रामप्रसादजी से ता० 30—3—4 ई० को पाया, (No. 76).

१) श्रीमान् बाबू गङ्गाप्रसाद, कन्हैयालालजी से ता० 10—5—4 ई० को पाया, (No. 56).

२) श्रीमान् राय बद्रीदासजी साहिब बहादुर मुकीम जौहरी रईस आज़म से ता० 30—3—4 ई० को पाया, हरीसन रोड कोठी (No. 152) कलकत्ता।

४) हरीसनरोड सदासुखका कटरा (No. 201)के स्नाथ मर्चेन्टोंसे पाया।

१) श्रीमान् बाबू नागरमल के जड़ीवाल से ता० 4—4—4 ई० को पाया, (No. 49).

१) श्रीमान् बाबू नरायन दास, बैजनाथ प्रसादजी से ता० 6—4—4 ई० को पाया, (No. 30).

१) श्रीमान् बाबू शिवदत्त राय, छोटे लालजी से ता० 6—4—4 ई० को पाया, (No. 104).

१) श्रीमान् बाबू पन्नालाल पेड़ी वालजी से ता० 12—4—4 ई० को पाया (No. 75).

१) श्रीमान् बाबू गोबिन्दराम रामेश्वरजी से ता० 12—4—4 ई० को पाया, (No. 103).

१) श्रीमान् बाबू बनसीधर, सागर मलजी से

ता० 16—4—4 ई० को पाया। (No. 63)

१) श्रीमान् बाबू भगवान दास, रामजी दास से ता० 24—4—4 ई० को पाया (No. 62).

१) श्रीमान् बाबू हज़ारीमल, दौलतरामजी से ता० 24—4—4 ई० को पाया, (No. 369),

अशुद्ध दूकान (No.30) शुद्ध दूकान (No. 65 व 66) अशुद्ध कै-जड़ीवाल—पेड़ी वाल। शुद्ध—कैजड़ीवाल-पेड़ीवाल और सूतापट्टी की दूकान (No. 76) की यानि यह सूतके मर्चेन्ट की जानिये।

१) जगमोहनलेन (No. 9) बड़जीकी कोठीके गद्दीदारोंसे पाया।

१) श्रीमान् बाबू मह्ताब राय, नानक रामजी से ता० २८—५—४ ई० को पाया।

१) श्रीमान् बाबू माधोराम, हरदेव दास दिल्लीवाले अढ़तियाजी से ता० २८—५—४ ई० को पाया।

२) बहिरापट्टी (No. 3) लालचन्द बलदेव दासँ की कोठी के गद्दीदारों से पाया।

१) श्रीमान् बाबू रूपलाल, ज्वाहिरमलजी से ता० २७—३—४ ई० को पाया।

॥) श्रीमान् बाबू लालचन्द, बलदेव दासजी से ता० ३१—३—४ ई० को पाया।

॥) श्रीमान् बाबू हरदेव दास, रामरिखजी से ता० ३०—५—४ ई० को पाया।

१) श्रीमान् बाबू रामप्रसाद, ईश्वरदासजी से ता० २५—५—४ ई० को पाया।

२) मल्लिक की कोठी सूतापट्टी (No. 90) से पाया,

१) श्रीमान् बाबू खेतसीदास, बीजराज क्लाथ मर्चेन्ट जी से ता० १४—४—४ ई० को पाया,

१) श्रीमान् बाबू मखनलाल, बजरङ्गलाल गद्दी-दार जीसे ता० 7—6—4 ई० को पाया,

॥) श्रीमान् बाबू सीतावचन्द ढाढ़ेवालजी से ता० २८—४—४ ई० को पाया, पचागली मुखिल अरमनीष्ट्रीट (No. 65/2)

१।) अरमनी ष्ट्रीट (No. 7/1) के क्लाथ मर्चेन्ट गद्दीदारोंसे पाया।

॥) श्रीमान् बाबू भीमराज, कस्तूरचन्द जीसे ता० 25—4—4 ई० को पाया।

॥।) श्रीमान् बाबू रुकमानन्द, बिरधीचन्द जीसे ता० 7—6—4 ई० को पाया।

१॥) अरमनी ष्ट्रीट (No. 42) के क्लाथ मर्चेन्ट गद्दीदारोंसे पाया।

१) श्रीमान् बाबू राउतमल, ताजमलजीसे ता० 18—4—4 ई० को पाया।

॥) श्रीमान् बाबू उदयचन्द, पन्नालाल जीसे ता० 16—5—4 ई० को पाया, हरीसन रोड, (No. 203)

१॥) अरमनी ष्ट्रीट (No. 33) के क्लाथ मर्चेन्ट गद्दीदारों से पाया।

१) श्रीमान् बाबू जैसराज, गिरधारीलाल जी ओसवाल से ता० 15—6—4 ई० को पाया,

॥) श्रीमान् बाबू पन्नाचन्द, बख्शीराम ओसवाल जीसे ता० 21—6—4 ई० को पाया।

१॥) मलिकष्ट्रीट (No. 16) मुखिल अफीमका चौरस्ता के गद्दीदारों से पाया।

१) श्रीमान् बाबू शिवदास, लाभचन्द जीसे ता॰ 18—4—4 ई॰ को पाया।

॥) श्रीमान् बाबू शिवदास, सगुनचन्द जीसे ता॰ 18—4—4 ई॰ को पाया।

॥) श्रीमान् बाबू थानसिंह, करमचन्द गद्दीदार ओसवाल जीसे ता॰2—5—4 ई॰ को पाया, पचागली कोठी 65/3 मुत्सिल अरमनी ष्ट्रीट।

॥) श्रीमान् बाबू रामकिशुनदास, किशुनगोपाल क्लाथ मर्चेन्ट जीसे ता॰ 15—4—4 ई॰ को पाया खेंगड़ा पट्टी (No. 105)

२॥) पगड़िया पट्टी के क्लाथ मर्चेन्टों से पाया।

१) श्रीमान् बाबू हजारीमल, मदनगोपाल गद्दीदार जीसे ता॰ 17—4—4 ई॰ को पाया, (No. 7)

१) श्रीमान् बाबू भीखमचन्द, सुजानमल जीसे ता॰ 18—5—4 ई॰ को पाया (No, 11)।

॥) श्रीमान् बाबू गनपतराय खेमका जीसे ता॰ 24—6—4 ई॰ को पाया (No. 11)।

१) श्रीमान् बाबू केदारनाथ, तनसुखराय गद्दीदार जीसे ता॰ 24—4—4 ई॰ को पाया, अरमनी ष्ट्रीट (No. 12)

१५१॥।) मीज़ान कुल टोटल रुपये को, याने १५२ पुरुषों से चन्दा वसूल पाया।

श्री १०८ कृपा सागर श्रीमान् महोदय सर्वोपरि विराजमान्
भारतेश्वर प्रभु सप्तम एडवर्ड सम्राट् अभिनन्दन
प्रतापमान् जयतिः,—

(No, 61) **क़ाफ़िया ।**

दुनियां को आफताब है रोशन अफलाक पर *
लिखूं सिफत बयान शाहके शान पाक पर *
भारतके शाह आली की मोहबत जहांन पर *
धरम से राज करते हैं भारत माहांन पर *
पीते हैं पानी शेर बकरी एक घाट पर *
अदल हमारे शाह को है राज पाट पर *
इकबाल खुशनसीब है दुनियां के सिरे पर *
यह गातेहैं बलदेवप्रसाद (१मिहरोत्र (२ अढ़ाइघर *

———*———

(१ अमर कोषस्य प्रथमं काण्डम् (दिग्वर्गः) श्लोक—२९—
भास्वद्विवस्वत्सप्ताश्वहरि दश्वोष्णरश्मयः ।
विकर्त्तनार्कमार्तण्डमिहिरारुणपूषणः ॥ २९ ॥

मिहरोत्र अन्वयः—अत मिहरोताहं,—अहं अत मिहरा = अर्थात्—सूर्य्यवंशी—
खत्री शब्द का अपभ्रंश खत्री जैसे. खेत, चेत,,—अङ्गरक्षा—अङ्गरखा—

(२और मैं मिहरोत्र अढ़ाई घर नथखोल ललुवाना खत्री हूं, नथखोल से तात्पर्य्य यह है, सो क्या ? याने हमारे कुल में जब स्त्री के लड़का पैदा होता है, या लड़की पैदा हुई, तब फिर बाद इसके वह औरत नांक में नथुनी नहीं पहिंनती है, और कन्या दान देनेके समय में, याने कन्याको नाकमें नथुनी नहीं दी जाती है, क्योंकि हमारे नथखोल कुलमें यह सती का आन है, और ललुवानेसे मतलब यह है कि, याने किसी शाही जमानेमें, लछूमल,जगद्धर, भीम, बली-सरहिन्दके निवासी, यह चार भाई मिहरोत्र बंशके सगे भ्राता थे,सो उस जमानेमे बहुतसे खत्री लोग फौज में नौकर थे, फिर बाद इसके बहुत से खत्री लोग जबकि लड़ाई में मारे गये,

तब फिर बाद इसके उस ज़माने के बादशाहने मुलफा खत्रियांन लोगों की लावारिशान नौवजवान खत्रानियों के वास्ते पुनर विवाह का हुक्म ज़ालिम सादिर किया गया था, सो लल्लूमल और बल्लीसरहिन्दके उस समयमें इनलावारिशान विधवावों के प्राण और धर्मकी रक्षा किया था, और बादशाह के मख्सूत हुक्म जारी को नीत प्रमाण से रोका था, सो हे भाइयो! मैं लल्लूमल की बंशावली की शाखा मे उत्पन्न हूं, और इस संसार में यह मैं बलदेव प्रसाद मिहरोत्र २॥ घर विधवावों के प्राण धर्मका रक्षक नीत से उपदेशुक इस मिरतलोक में, विख्यात हूं, और उस ज़माने में, लल्लूमल और बल्लीसरहिन्दकेने विधवा के पुनर विवाह पर दसखत नहीं किया था, इस कारण से लल्लूमलजी और बल्लीसरहिन्दजीकी बंशावलीकी शाखा मिहरोत्र २॥ घर कुलीन कुलमें बोले जाते हैं, और भीम और जगद्धर इनदोनों भाइयोंने विधवा के पुनर विवाह पर दसखत कार दिया था, सो इन दोनों की वंशावली ४ घरमें बोली जाती है, याने जगद्धर की बंशावली कनौज के मिहरे पक्के ४ घर में बोले जाते हैं, और भीम की बंशावली पक्के ४ घरके शनीचरहे मिहरे बोले जाते हैं, और हमारे प्रपितामह अर्थात् पर बाबा हकीकी दो भाई सगे थे, सो यह दोनों भाई याने लाला हरकिशुनशाह व लाला जैकिशुन शाह लाहौर से आनकर श्रीकाशीजी में अपना श्रीकाशी निवास किया था, सो अपने प्रपितामह अर्थात् परदादा लाला हरकिशुनशाह स्वर्ग निवासीजी की वंशावली की शाखा मे, याने मैं उत्पन्न श्रीकाशी निवासी बलदेव प्रसाद मिहरोत्र २॥ घर निज जन्म कुण्डली के तुला लग्न से चतुर्थ स्थान में शुक्र ग्रह उदय प्राप्त स्थिर होनेसे, प्रमाण चमत्कार चिन्तामणि ज्योतिष के बरतमान फल के अनुसार मैं सब पुरुषों से अधिक माननीय पुरुष इस मिरतलोक में, शरीर धारण करके चारों दिशाओं मे प्रसिद्ध हूं,—

——※——

पुराचीन प्रमाण नवीन संग्रह की कविता पुस्तक का यह है, सो क्या? याने—

कवित।

झूठे क्यों तू? जन जान मनमे, विकार सबै जात पात झूठे दुख दाइये। झूठे राव राना, सबै जाना वही ठौर होमे, झूठे जो परोसी ताहि मनमे न लाइये॥ झूठे परिवार यार, सारा संसार, औकवीर

† सरहिन्दका अपभ्रंश शिवनन्द।

शूर पण्डित रविदत्त नासकाइये। ये ते सब रूठे आय, चूमैंगे अंगूठो मेरो, एहो रघुनाथ एकतैं न रूठा चाहिये॥

पुरा चीण प्रमाण यह है, सो क्या ? याने—

ग़ज़ल।

ज़रसे गुले काग़ज़ गुले तर हो नहीं जाता *
हरकत्रये नाचीज़ गौहर हो नहीं जाता *
मिस पर जो मुलम्मा होतो ज़र हो नहीं जाता *
सैक़ल से कुछ आयना भी क़मर हो नहीं जाता *
जिस हाथ असा हो उसे मूसा नहीं कहते *
हर हाथको आक़िल इदे बैज़ा नहीं कहते *
गर फ़क़्र हो आलो नसबीं पर नहीं जाती *
दौलत नहीं इनसान की कुछ क़द्र बढ़ाती *
अक़िल का दुश्मन रुतबह् से आलो नहीं होता *
इज़्त व ख़ज़ाना है कि ख़ाली नहीं होता *

—:*:—

श्रीकाशीनिवासी बलदेवप्रसाद मिहरोत्र २॥ घर बर्म्मशास्त्र उपदेशम् क्रतम् अर्थात्—

(No. 62) दोहा।

रुपये से होता नहीं, फूलहि असिल गुलाब।
तरो न उतरै काग़ज़ पर, जैसी क़ुदरत आब॥१॥
मेहँ झरी कितनौं पड़ै, बहे धराधर खेत।
स्वातिक बूंद गिरै जब, सीपहि मोती देत॥२॥
ताँबहि सोन न होत है, होय मुलम्मा ख़ूब *
असली है सो असिल है, नक़ली बनै अजूब॥३॥

क़लई करने से लखो, होत न दरपण इन्दु *
उपदेशक बलदेव को, जानत हैं सब हिन्दु ॥४॥
हज़रत मूसा होय नहीं, चेतो यारो फेर।
जो राखे निज हाथ में, आसा बल्लभ टेर ॥५॥
रोशन कबहुँ न जानिये, अन्धा रवी समान।
बलदेव की कर लेखनी, जस उपदेश बखांन ॥६॥
ख़ानदानि शरीफ मन, जो नर होय फकीर।
लखबांनी बलदेव की, इज्जत नहीं हकीर ॥७॥
धनी यही धनवान है, जो नर होय गँवार।
कहते हैं बलदेव यह, इज्जत दार न यार ॥८॥
कतबहि से साहिब नहीं, निरबुद्धी दैवान।
उपदेशक बलदेव की, (१ इज्जत विदित जहांन ॥९॥
रन्डी पुत्रन को लखो, सुन्दर होते खूब।
यह सुनीत बलदेव की, परखहु सब महबूब ॥१०॥
आदम से यह जानिये, सृष्टी है संसार।
श्रीराम बलदेव भजो, निरमल ज्ञान बिचार ॥११॥

धन्यवाद इस बरतमान समय के श्रेष्ट पुरुषोंको मेरी यह है,—

सो क्या ? याने—श्रीमान् सर्व पूजनीय गोबिन्दनरायणजी उर्फ मानिक लालजी मिश्र आप सारस्वत ब्राह्मण हैं, और जामदग्न्य, वत्सगोत्रमे उत्पन्नहैं,और आप शुद्ध चितजीके विद्वान और बुद्धिवान और धर्म्मवान हमारे कुल पूज्य और लहोरिये खत्रियोंके प्रोहित हैं,

(१ प्रमाण इस पुस्तक के ७४ पृष्ट की १० पंक्ती को पढ़ कर लखिये।

और आप नित नेम धर्म्मसे सन्ध्या तर्पण बलिवैश्य इत्यादिकोंको स्वीकार किये हुवेहैं, और आप कर्म्म काण्डमें बिशेष् निपुणहैं, और आप एक पुस्तक ब्राह्मणों की उत्पत्ति विषयकी सारस्वत सर्वस्व तैयार कर रहे हैं, सो मै यह आशा करताहूँ कि यह पुस्तक जबकि तैयार होकर मुद्रित संसार में प्रकाशित होजायगी, सो यह पुस्तक सर्वत्र प्रशंसनीय प्रमाण से विख्यात होयगी, और आपका शुभस्थान सूतापट्टी क्रास ष्ट्रीट, (No. 65) के निज खास मकान में विराजमान होकर सोभायमान हो रहे हैं, सो मैं ऐसे श्रेष्ट ब्राह्मणों को प्रमाण नित नेम प्रेम से करता हूँ।

———

और हमारे खास कुलपूज्य प्रोहित गुरू श्रीमान् मकुन्दीजी जैतली सारस्वत ब्राह्मण चारों वेद के वक्ता थे, और आपका हमेशा दिन पूजन पाट इत्यादिकों में व्यतीत होता था, और आप यजुर्वेद अपने पाठकों को निज खास मकान में श्रीकाशीजीके श्रीत्रीलोचन महाँदेवजी के मन्दिर के साम्हने विराजमान होकर पढ़ाते थे, और आपकी अवस्था सौ वर्ष के निकट थी, सो हमारे गुरुजी का पार-साल श्रीकाशीजी में स्वर्गबास प्राप्त हुवा, और आप अपने चितजी से बहुत विशेष प्रशंसनीय शुद्धसारस्वत ब्राह्मण थे, और आपका ब्रह्म और सन्यास ज्ञान था,—

(No. 63) **दोहा।**

शुद्ध जैतली गेह बिच, बिदित मकुन्दी लाल *
काशी में तन छोड़ के, पहुँचे स्वर्ग दयाल *

———

श्रीमान् गोपीनाथजी झिंगरन सारस्वत ब्राह्मण जन्म भूमि लखना पुरी और मिरज़ापुर निवासी आप भी इस समय के

अनुसार पूजन पाट निज कर्म्म में, श्रेष्ट हैं, और आप बरतमान इस समय में, श्री प्रयाग राज्य की चौक की कोतवाली के निकट स्थान रानी की मन्डीके निज खास मकान में बिराजमान हैं, और आपकी अवस्था निकट ७० बरस के होती है, और आपके सनुज पुत्र आज्ञाकारी श्रीमान् पण्डित कुञ्जविहारी लाल उर्फ टिन्डल क्लर्क रैलवे इलाहाबाद के माल गुदाम के काम पर हैं, और श्रीगोपीनाथ प्रोहितजीने, मुझे बचपन में अपने खास गोदी में खेलाया है, और जब मैं इलाहाबाद में था, तब यह पिता और पुत्र यह दोनो महाशय मुझे बहुत मानते थे, परन्तु मेरे समय प्रतिकूल के कारण से, आप लोगोंने भी, मेरी चिट्ठी का उत्तर मेरे पास डाँकके द्वारा से नहीं भेजा, सो क्या कारण है ?

श्रीमन्त् सर्व्व पूजनीय श्रीयुत बेनीमाधो चौबे ओंकार कम्पनी पेपर न्यू चीना बाजार कलकत्ते के श्रीपिता श्रीयुक्त मान् रामगोपालजी आप शुद्ध चितजीके ब्राह्मण धर्म्म रक्षक सर्व्व पूजनीय मथुरिया घरबारी धौमगोत्र में उत्पन्न ज्ञानी पण्डित बिद्वान हैं, और आपका जन्मस्थान मौज़ा कमतरी तहसील व् ज़िला आगरा है, और आप बरतमान कलकत्ते के सिकुधर पाड़ा ष्ट्रीट (No. 40) के मकान में, श्रीकाली तारासुन्दरीजी के मन्दिरके निकट शोभायमान हैं, और आपका जन्म संबत १६०० बिक्रमी मे हुआ है, और आप अपने कर्म्म काण्ड मे बिशेष शुद्ध और निपुण हैं, और आप इस वृद्ध अवस्था में, सदैव श्रीगङ्गाजीका स्नान ध्यान दो बजे रात के समय मे, बारहों मास का व्रत धारण करने वाले हैं, फिर बाद

इस पुस्तक के १४० पृष्ट की (No. 61) की क़ाफ़िया के ८ पंक्ती में अशुद्ध—यह गाते हैं, । शुद्ध—यह कहते हैं ।

इस्के दो बजे रात्र से परयन्त—१२—तथा १ बजे दिन तक आपका निज पूजन पाट इत्यादिकों में, ध्यान रहता है, फिर बाद इस्के आप भोजन करके २ घण्टा आराम तलब करते हैं, फिर बाद इस्के सायम् कालकी सन्ध्या पूजन प्रारंभ करते हैं, सो मैं ऐसे महासज्जन्, धर्म्मिष्ट बड़े महँराज श्रीयुक्त रामगोपालजी को प्रणाम बार २ इस मृत्युलोक को संसार में करता हूं,—

—:o:—

विदित हो कि मैंने निज पुस्तक पृष्ट १२५ के (No. 54) की कविता का उपदेश अपने हस्थ से लिख करके श्रीमान् कलकत्ता हिन्दी भाषा सम्पादक वैश्योपकारक मासिक पत्र को ता० २०-५-४ ई० को दिया था, सो आपने प्राप्ती स्वीकार मेरे नाम से अपने मासिक जेष्ट संवत् १९६१ के पत्र में, प्रकाशित किया है, सो मैं आपको स्वीकार पत्र पर धन्यवाद देता हूं, और मैंन्यह आशा करता हूं, कि आपका मासिक पत्र दिन बदिन उन्नत् करता जायगा, और यह पत्र श्रीमान् बाबू रामलाल, नेमाणीजी के, राम प्रेसके मनेजर काटन ष्ट्रीट (No. 59) प्रबन्ध के द्वारा से संसार में, प्रकाशित होता है *

—:o:—

* Pandit Amulya Charan Ghosh Vidyà bhushan.
Principal. Edward Institution. No. 58,
Cornwallis Street Calcutta.

(No. 64) **दोहा।**

श्रीअमूल्यहि चरन जू, प्रेमी घोस हमार *
उपदेशक बलदेव के, विद्या (२भूषण यार *

*मुन्शी(२) अङ्गरेजी विद्या समूह है, और हमारी हिन्दी भाषा मादरी विद्या बुद्धीको देनेवाली

अङ्गरेजी में निपुण हैं, पण्डित बँगला केर *
वर्ण बौ विद्या जानिते, भाषा को बहुतेर *
विद्या बुद्धी नीत से, पूजनीय संसार *
बहुत लेख बलदेव को, जग में काव्य प्रचार *

महासागर है, इस कलयुगमें एक लघु बेकदरी भाषा विद्याको श्रीदेवनागरी जानिये, और विद्या भूषणजीको कोई अच्छी पोष्ट ब्रटिश गवर्मेन्ट आफ इन्डिया से प्राप्त होना चाहिये।

---

* Pandit Dina Nath Deva's Post Office Bally *
District Hawrah :— * *

(No. 65) दोहा।

बरदवान का जानिये, कटरा विदित बखान *
मास्टर दीनानाथ जहँ, कलकत्ते दरम्यान *
(१)मास्टर दीनानाथ जू, सज्जन नेक बखान *
निपुणहिँ विद्यामें गुणी, शोभित विदित जहाँन *

---

* सुन्शी (१) आपकी बनाई हुई "शिक्षामणि" हिन्दुस्थानी परसियन ग्रामर इत्यादिक अनेक प्रकार की पुस्तकें विद्यार्थियों के सहायता के लिये संसार में प्रकाशित हैं॥

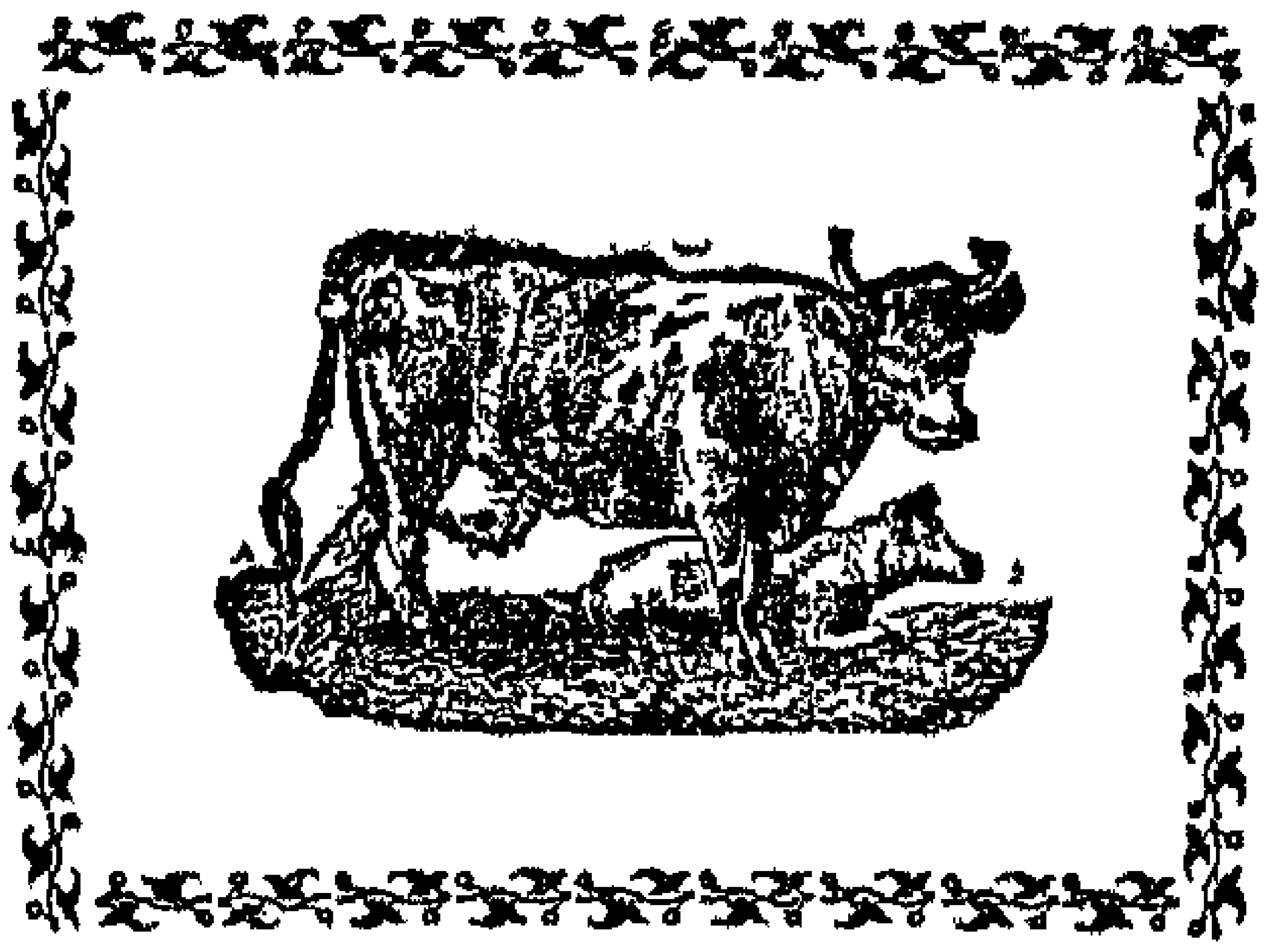

अथ बलदेव प्रसाद मेहरोत्र २॥वर को
कृत्त वचन श्रीगौके विषय मे,

उपदेश ।

कजरी ।

(No. 66) राग ढुन् सुनियाँ ।

(१ चरवाहे सब गौवें चरावें चारा खिलावेंना *
अमृत थन से दूध के लेते बच्छा पिलावेंना *
चरवाहे सब गौवें चरावें चारा खिलावेंना ॥१॥

अन्तरा ।

दूध मलाई खूब बिकाती छाछ बजावेंना *
दुनिया रखे भार उठावें रच्चा पावेंना *
चरवाहे सब गौवें चरावें चारा खिलावेंना ॥२॥

अन्तरा ।

कलीकाल में मारी जातीं कोई बिचारैना *
खँजड़ी का मिरदङ्ग चमड़ा क्या धिक्कारैना *
चरवाहे सब गौवें चरावें चारा खिलावेंना ॥३॥

अन्तरा ।

सब पशुवन पर दया हमारी कोई हमारैना *
उपदेशक बलदेव बमीन अख्याइन के प्यारैना *
चरवाहे सब गौवें चरावें चारा खिलावें ना ॥४॥

(१ चरवाहे लोग गौवों को मैदान मे अच्छी तरह से चारा नहीं खिलाते हैं, अथवा जो गौवें मैदान की चराई से चाराचर कर आती हैं, सो वह लोग खूंटेमें बांध देते हैं, फिर दुबारा भूसा तृण खरीको सानी इत्यादिक नहीं खिलाते हैं, अकसर बाजर चरवाहों के घरोंमें देखनेमें आया है ।

विज्ञापन बिभिचार विषय का क्या है, याने—

(No. 67) दोहा ।

सब पापिन के पाप को, भक्षण करूं मै अब ।
चितवानी बलदेव की, सज्जन पढ़ेंगे जब ॥१॥
कांटक को मम लेखनी, चुभैगी* कांट समान ।
उपदेशक बलदेव की, पढ़के मौत प्रमान ॥२॥
खल दुर्जन के पाप को, करौं भस्म चहुं ओर ।
मौत से बलदेव यह, लिखे फैसला घोर ॥३॥
सुख में भाई बन्धु सब, होते बहुत रफीक ।
दुखमें कबहु न जानिये, कोई न यार शरीक ॥४॥
मौत जगत में जानिये, जो दुख आवे काम ।
उपदेशक बलदेव की, रक्षा करते राम ॥५॥

---

* कैसे ? जैसे बिच्छु का डङ्क ।

जो नर जगमें श्रेष्ठ हैं, सो यह करें विचार।
हित वचन बलदेव को, विदित सकल संसार ॥६॥

कलिकाल वरतमान समयका फल।

सब महाशयों से मेरी यह प्रार्थना है, सो क्या? याने इस मिरत लोकके संसार में, जो अपनी बिरादरीका पुरुष अपराध करे सो क्या करना चाहिये, याने उस अपराधी के अपराध को, आम और खास तौर पर अपनी२ हर एक कौम को चाहिये कि, गुनहगारके गुनाह को, दयानतदारी के साथ में, नोटिस के द्वारों से, इस संसार में, प्रकाशीत करके पबलिक प्रगट कर देना चाहिये, इस लिये कि फिर कोई पुरुष अपराध न करने का इरादा रखे, याने पाप करने में पापी लोग रुकेंगे, और अपने बिरादरी के जातके अपराध को छिपा करके न रखना चाहिये, याने अपराधी के अपराध को एक हजार नोटिस के द्वारों से खूब अच्छी तरह से प्रगट कर देना मुनासिब धरम जानिये, याने अपराधको छिपाकर रखनेवाले पक्ष सरपञ्चो लोग नीतसे दोषी कहलाते हैं, क्यों कि पापीयों के पापको प्रगट करने में, यह फायदा है, सो क्या? याने दुर्जन लोग अपराध करने को डरेंगे,—

—*—

सावधान! सावधान!! सावधान!!!

और बिधवा फन्ड न कायम होने से क्या क्या खराबियां पैदा होती हैं? याने बहुतेरे शरीफ कौम गुर्बावों की बिधवायें, नावारिशें, छुधा के पिड़ित से, अपने धर्म को त्याग करके एक दूसरे पुरुष का सङ्ग स्वीकार करके रन्डी होजाती हैं।

—*—

प्रमाण पृष्ठ ७१५ अथ दशमोध्याय मनुस्मृति स० पृष्ठ ७४१ श्लोकार्थ १०८ का यह है, सो क्या? याने,—

भा० ता० ॥ क्षुधा से पीड़ित धर्म्म और अधर्म्म का ज्ञाता विश्वामित्र ऋषि चण्डाल के हाथ से ग्रहण करके कुत्ते की जंघाके मांस के भक्षण करने को उद्यत होते भये ॥ १०८ ॥

देखिये हमारी बिरादरी में कई बिधवायें क्षुधा से पीड़ित होकर रन्डी होगई हैं, हे भाइयो! बिचार करने की बात है, सो क्या? याने बड़े महात्मा ब्रह्म ऋषि विश्वामित्रजी क्षुधा से पीड़ित होकर श्वान के मांस को भक्षण करना स्वीकार किया सो हे भाइयो! इसी प्रकारसे जानना चाहिये कि अनेक बिधवायें हर एक जात की क्षुधा से पीड़ित होकर हर एक शहरों के बाजार में, अनेक रन्डियां कसब करातीं हैं *

सो हे भाइयो! मैं अत्यन्त शोकातुर होकर याने अपनी बिरादरियों की बदनामी सुनकर एक बड़े दुःख के साथ में, सब महाशयों को प्रमाण बरतमान फल को इस संसार में प्रगट करके दरसाता हूं, सो क्या? याने,—दृष्टान्तके साथमें प्रमाण जानिये—

(No. 68) **चौपाई।**

कौन बिप्र बङ्गाल में भाई? जो खत्री की रखी लुगाई *
कलकत्ते में सारसुत कोई, इक बिधवा सङ्ग कांटा बोई *
जो खत्री की हरी लुगाई, मात पक्ष से कीन्ह खोटाई *
प्रोहित की माता सम नारी, कपूरहि बंश कुलीन बिगारी *
कौन बिप्र धनी धनवन्ता? नीच परोहित पाप न गनता *

दोहा ।

निरमल नदको जानिये, मीन करै जलगन्ध *
यह नीतहि बलदेव की, पढ़िये हियके अन्ध *

तात्पर्य्य ।

विदित हो कि ३० बर्ष का अरसा होता है कि कोई सारस्वुत तिवर्ख ब्राम्हण लखपती धनी असामी रुपये की दौलत की गरमी में आय कर एक अपने जिजमान कपूर २॥ घर खत्री कुलीन की स्त्री बिधवा का धर्म्म नष्ट कर डाला था, जिजमान की स्त्री प्रोहित लोगों के माता के तुल्य होती हैं, और प्रोहित का ऊंचा पद है, सो हे भाईयो ! इस बिधवा औरत के प्रोहितजी के वीर्य्य से दो पुत्र सुनते हैं कि पैदा हुये, याने एक लड़का और एक लड़की सो लड़का सुनते हैं कि २० बर्षका प्रोहितजी के मकान में मौजूद है, और प्रोहितजीने अपने सुख्म वीर्य्य की कन्याका बिबाह कोई ताडवाल बावन जाती खत्रीके सङ्गमें कर दिया था, सो प्रोहितजीने अपने सुरैतिनकी लड़की का बिबाह ब्राम्हण कुल मे क्यों नहीं किया था ? याने खत्री कुलमें यह सम्बन्ध किस नीत रीतसे किया था, और यह बात सुनते हैं कि यह प्रोहितजी शास्त्रकी रीत और नीतके अनुसार बरसोतक बिरादरीमे खारिजथे, याने जब इनके पिता मरने लगे तब बाद इस्के ब्राम्हण और खत्रियों के सरपञ्च चौधरीयों के शरणागतमे प्राप्त हुवे, तब बाद इस्के दोषाभागी सरपञ्च लोगोंने प्रोहित अपराधीजी को अपने जात में मिला लिया पे:स्व ब सब दोषाभागी सरपञ्चों को चाहिये कि दोचार अजाती ब्राम्हनों को भी जात मे मिलालेना चाहियें, क्या ऐसा हुवा नहीं है ? अलबत: हुवा है, याने जब हमारे नाना सदासुख स्वर्ग निवासी इस मिरतलोक में थे, तब वह मुझ से यह कहते थे, सो क्या ? याने किसी ज़माने इलाहाबाद मे, किसी के बाप दादे एक ब्राम्हन कौमकी रन्डी को रखे हुवे थे, सो वह क्या खान्दान भ्रष्ट इलाहाबाद मे, सब जातियो मे शामिल नहीं है ? यदि यह कुकरम कोई ग़रीब करता तो उस्के घरका कोई हिन्दू मात्र पानी तक न पीता, एक छोटा सा दृष्टान्त यह है सो क्या ? याने एक मछली सारा जल गन्धा करती है, याने जो लोग की भ्रष्ट हैं, सो वह लोग दूसरे के धर्म्म और इमान को क्या रक्षा करेंगे ?

(No. 69) शेर ।

(१ खल कलयुग अन्याय करै फरियाद इस्की हम करैं *
इन्साफ मेरा वह करै जो ब्रह्मको सुमिरण करैं *

(१) कर्म्म खोटे अनेक प्रकारके विशेष करैं—और कलयुग निगोड़ेको लोग दोष धरैं सो इसका क्या दोष है?—याने करैं तो कुकरम और कहैं कि यह कलयुग है यह कलयुग नहीं है, यह अङ्गरेज़ी राज्य सतयुगके समयका है, घोर कलयुग कब था? याने जब नवाबी थी,—जुवाचोरी करना, रिश्वत खाके दग़ाबाज़ी और विश्वासघात करना, नीत धर्म्मको न मानना, यह कलयुग नहीं कराता है, यह खोटे कर्म्म नाना प्रकारके अबोध के कारण से होता है।

प्रमाण श्रीतुलसी कृत रामायण अयोध्याकाण्डम् २-दोहा ९५ के बादका भावार्थ यह है, सो क्या? याने—

चौपाई।

शिवि दधीचि हरिचन्द्र नरेशा*
सहे धर्म्महित कोटि कलेशा*
रन्तिदेव बलि भूप सुजाना*
धर्म्म धरेउ सहि सङ्कट नाना*

कुम्भ राशि पर सूर्य्य और बृहस्पति ग्रहका फलित।

हमारे जन्म कुण्डलीके लग्नसे पञ्चम स्थानमें सूर्य्य और बृहस्पति है, प्रमाण लग्न-चन्द्रिका यह है, याने जिसके लग्नसे पञ्चयें स्थानमें, सूर्य्य व बृहस्पति होता है, सो धर्म्मवान धनी राजा होवे—अथवा श्रेष्ठ पुरुष हो। पृष्ठ १३—श्लोकार्थ ७८ व ७९।

कहैगा क्या कोई मुझसे मेरा दिल बस वही है *
अगर सब गौर कर देखो ज़माना वह नहीं है *

(No. 70) **नसर ।**

नीरमें आग पड़ैगी नज़र * कलिमें देखाई पड़ैगी ग़दर *
नीत प्रमाणकी जगमें क़दर * अनीत लखाई पड़ैगी (१)क़हर *

(No. 71) **ग़ज़ल ।**

श्रीराम नामकी जगमें बनती हैं गोलियाँ *
आटेमें रामनाम को खाती हैं मछलियाँ *
धन्य वह पुरुष जो खिलाते हैं गोलियाँ *
बैष्णवके पताकों को फहराती हैं बोलियाँ *
कटरे में काट काटके बिकतीहैं मछलियाँ *
पुष्पोंके बदले यह बिकती हैं (२)मीन पतलियां *
संसार धरम लेख पर देना न गालियाँ *
बलदेव प्रसाद मेहरोत्रकी यह नीत बोलियाँ *

हमारा निरमल ज्ञान नीत बचन यह है सो क्या ? यानें ।

(No. 72) चौपाई ।

रबिको धरम जगत बिस्तारा, दूरकरत निशिको अँधकारा *
अधरमजले जगतमें भाई, अनहितकी महिमा मिट जाई *

---

(१) क़हर—क़हत अर्थात् अकाल पड़ै—अथवा अन्यको गिरानी होय ।

(२) मछलीयां ज्योतिष नीतके अनुसार ब्राह्मणी हैं, क्यों ? यानें मीन राशिका स्वामी बृहस्पति ग्रह ब्राह्मण है ॥

असुरनको अपजस भण्डारा, बिदित जगतमें जस हमारा*
उपदेश करण स्वामी संसारा, परहित कारण जन्म हमारा*

उपदेश ।

(No. 73) दोहा ।

सत्य धरम अनमोल है, करिये सबै बिचार *
उपदेशक बलदेवको, लखिये नीत कटार ॥ १ ॥
सत्य धर्म्म त्यागो नहीं, सज्जन चतुर सुजान *
उपदेशक बलदेवको, लखिये नीत प्रमाण ॥ २ ॥
ऊंचो पदवीके पुरुष, रखिये धरम प्रचार *
*काशीके बलदेव यह, कहते बारम्बार ॥ ३ ॥
यह जगतमें जानिये, अज्ञानिनकी खाँन ।
हितकारी बलदेवको, धरम सहित पहिँचान ॥ ४ ॥
लगी शीलमें आग है, बिरोधिनके अब घर *
यह कहते बलदेव हैं, मेहर अढ़ाई घर ॥ ५ ॥
पापके धनको जानिये, रखै धरम बिरोध *
उपदेशक बलदेवसे, कण्टक रखते क्रोध ॥ ६ ॥
धर्म्मीथे सो चल बसे, अधर्म्मी कौड़ी चूस *
हितवानी बलदेव की, न मानैं जङ्गली हूस ॥ ७ ॥
खलहि मण्डली जानिये, निज स्वारथके यार *
यह नीती बलदेवकी, सज्जन करैं बिचार ॥ ८ ॥
निज स्वारथके कारणे, कंटक रखते घात *
उपदेशक बलदेवको, न मानैं परहित बात ॥ ९ ॥

---

*हमारा जन्मस्थान श्रीकाशी जीमें हैं, अथवा मेरे श्वशुरका नाम भी खास काशीप्रसाद है ।

कुलीननको पहिंचानिये, कलिकालमें यार *
उपदेशक बलदेवको, करिये नीत विचार ॥ १० ॥
शीलहि कबहुं न ढूंढ़िये, कुशीलनके अब घर *
यह मानों बलदेवकी, मेरे प्यारो सर ॥ ११ ॥
जो यदि अपने को हनै, तापर रखिये रोष *
यह नीती बलदेवकी. मारे हनै न दोष ॥ १२ ॥
लड़े लड़ाई ज्ञानको, जगमें बुद्धीमान *
जो करै बड़ाई तेगको, सो नर ॐ जड़ समान ॥ १३ ॥
करैं पतित खोटे करम, रखैं कलिको दोष *
उपदेशक बलदेव की, उपजै नीतसे रोष ॥ १४ ॥

तर्ज़ सुवाल।

(१) हजारो ख़्वाहिशें ऐसी किहर ख़्वाहिश में दम निकले ?

ॐ जिस समयमें परमेश्वरने सृष्टिको उत्पन्न किया है, सो उस समय से शस्त्र को लड़ाई होती है, सो क्यों ? याने जब अनीत और पाप बहुत विशेष फैल जाती है, तब वह पाप घोर समूह का भार उतारनेके लिये, ईश्वर अपनी मायाशक्ति को प्रेरणासे आक्रमण कुमतिको विस्तार करता है, याने जब पाप घोर भस्म होजाता है, फिर बाद इसके वह अपनी माया कुमतिको खींचके समेट लेता है, फिर बाद इसके बोझ पाप पृथ्वीका भार जब उतर जाता है, यामें तब शस्त्र की लड़ाई शान्ति होजाती है ।

(१ याने ता० १८—८—४ ई० को मैं L. माधो प्रसादजी साहिब टन्डन लहौरिये आगरेवाल मुलाज़िम बङ्ग बङ्गाल कलकत्ते के दौलत ख़ाने पर गया, सो आपने मुझे यह शेर पुरायोष को तर्ज़ दिया, और इस्का जवाब तलब किया,—

(No. 74) गज़ल जवाब।

(२) खोदा की यादगारीमे गुनहूँ ख़ुवाहिशकी कम निकले।
(३) ज़माने मे करो नेकी हमेशा दिल रहम निकले॥
मुरौवत में दयानतदार सच पूछो तो हम निकले।
बेशरमों की बुराई को कहें तो क्या हया निकले॥
अगरचे मैं कहूं सच्ची तो सब बातें गरम निकले।
लगो बातें हमेशा प्यार की यारो नरम निकले॥
इनायतसे मेरी कोई सुनें साहिब तो ग़म निकले।
सुनों बलदेवकी यारो नसीहत से धरम निकले॥

उपदेश।

(No. 75) कवित।

चमार नीच बरनकी, कहांर इत्यादिकोंकी, ऊंचेसे भली जात हैं।
दोषी की पञ्चायत में, पञ्च के दरम्यान में, क्या हुक्का उठ जात है॥
भाई बन्धुनात में, कुटुम्ब सब परिवार में, कोइ खात् नहीं भात है।
फटकार के बलदेव कहैं, कुलीन की अपराध में, इन्साफ की न बात है॥

"चार थम्बेके १२ परिवार।

अङ्गरेजी राज्यके इस बरतमान समयमें, मेहरोत्र 'कौशिल्य

(२ फिर बाद अर्ज़ांं इस्के मैंने निज लघु बुद्धी के अनुसार यह जवाब दिया,—

(३ और बाकी सात मिसरा मैने अपने ग़रीब खाने पर तहरीर किया,—

गोत्रको १४ थम्बे की परिवार वंशावली पुराचीण प्रमाणकी शाखा शुमार की जाती हैं, याने—पश्चां अथवा पूरब इत्यादिक देशोंमें हमारे बिरादरीके लोग किसी शाही जमानेमें स्थापित किये हुवे इस वरतमान समयमें विख्यात बोले जाते हैं, सो क्या? याने—

(१ जगन पौत्रे। (२ शिवनन्द पौत्रे। (३ डांगामल पौत्रे (४ ललुमल पौत्रे। (५ जगडरमल पौत्रे। (६ भीमराज पौत्रे। (७ अभनराम पौत्रे। (८ राहुतमल पौत्रे। (९ जादोराम पौत्रे (१० नीधेमल पौत्रे। (११टकोराम पौत्रे। (१२ मलिकराम पौत्रे (१३ चोटीमल पौत्रे। (१४ बलीमल पौत्रे। * यह सब लोग सरहिन्द निवासी थे, यह ज़माना ४०० बरसके अनकरीब होता हैं, और इस वरतमान समयमें ४ थम्बे की शाखा प्रफुलित देखलाई पड़ती हैं, जैसे—ललुवाने मेहरोत्र आढ़ाई घर, शिवनन्दीये मेहरोत्र आढ़ाई घर सुप्रफुल्लीत वर्त्तमान हैं, और शनीचरहे भीममल की शाखा ४ घर फलीभूत बोले जाते हैं, और कनौजके मेहरोत्र बलियेमलकी शाखा ४घरवाले इस वर्त्तमान समय में दिखलाई पड़ते हैं, और बाकीयात थम्बोंको शाखे एक आध पूरब अथवा पश्चिममें शाखें तलाश करनेसे निकलेंगी, वरना सब इस मृत्युलोकमें बाकीयात् अस्त होगई हैं।

---

* मलिकमल नामको जानिये, मलिक शब्दका निर्णय यह है, याने मुलकके रियासत की मिलकियत का रखनेवाला—मलिक शब्द उच्चारण होता है, और मल—शब्दका भावार्थ यह है, याने योधा—बीर।

(No. 76) कवित्त।

लखनऊ के कपूर को, अढ़ाई घर कुलीन को, कोइ रांड़ हरलाये हैं।
* गिरजा घर में, नहीं, ठाकुरजी के साम्हने, व्याह के पुनर लाये हैं॥
विधवा के विवाह से, ६ बरस के बालक को, घर में जिलाये हैं।
कलकार के बलदेव कहैं, धिक्कार आगरेवाल को, जो ज़ात में मिलाये हैं॥

कलकत्तेके खत्री सभापतिसे प्रश्न
"कलङ्की औतार नमस्ते।

कलकत्तेमें सुनते हैं कि, कोई आगरेवाल कुलीन २॥ घर मेह-रोत्र वंशमें उत्पन्न खत्रीने अपराध किया था, यानि इस बातको सात बरस का अरसा होता है, सो क्या अपराध किया था? यानि सुनते हैं कि, अपने नातेदार २॥ घर कपूर की विधवा स्त्रीको, अपने उत्तम कुलकी मर्य्यादा, और सनातन धर्म्म और अपने चाचा चाची कुटुम्ब इत्यादिकों की तथा विरादरियोंकी लज्जाको त्याग करके बेशरम निरलज्ज होकर पचीस हज़ार रुपये की गरमीके कारणसे कोई ग़रीब इज्जतदार की विधवा भौजाई को निकाल लाया था, फिर बाद इसके जब उस औरतके लड़का पैदा होने-वाला हुआ, तब सब विरादरियोंने, उस अपराधीको अपने ज़ातसे खारिज कर दिया था, सो यह बात हमारे बिरादरी के लोगोंको कलकत्ते में प्रसिद्ध है, सो अब वह सुरैतिनका लड़का ६ वर्षका परवरिश पाता है, और उसको सब विरादरी रुपये

* गिरिजा नाम श्रीपार्व्वती जीका है, अर्थात् श्रीशिवाय माता जीका स्थान कहिये—और गिर्जा घर ईसाइयोंके हज़रत ईसाका मन्दिरको कहते हैं।

और ओछरे पुरुष ई अथवा शिना जोरीके बलसे उसको बरतते हैं, सो हे भाईयो ! हमारी कर लेखनी नीत धर्मकी रक्षा करनेवाली है, सो मैं अन्याय विचार करके नीत धर्मके अनुसार यह न्याय अपराधी का करता हूँ, सो वह क्या ? याने यह पुरुष कुलीन से अपने को कुलहीन पद समझे, और कहनेवाले लोग यह कहते हैं, सो क्या ? याने दूसरे की बहू बेटी की इज्जत बिगाड़ा, और अबकी साल अपने माताजी को गया करने को गिया है, सो यह बात बड़े शरम की है, और सुरेतिनके लड़केको सुरे तवालकी उपाधि पदवी दीजाती है।

और चार सालका अरसा होताहै, सो क्या ? याने सुनते हैं कि कोई इज्जतदार २॥ घर आगरेवाल खत्री कुलीन वंशकी बिधवा लड़की को कोई रोड़ा खत्री कण्टक निकाल कलकत्ते से लेगया है, सो इस कण्टक को इस पुस्तकके १०८ पृष्ठ से पर्य्यन्त १११ पृष्ठ नीत प्रमाणके साथ प्रचण्ड दण्ड होना चाहिये, अपराधी रोड़ा खत्री कण्टकने, अपनी माँ—बहिन बेटी बहू की इज्जत आबरूह क्यों न बिगाड़ा ? पराई बहू बेटीको क्यों भ्रष्ट किया ? इस कारण से, ऐसे दुष्ट जीव अपराधी को, ताश्रबद के वास्ते कठिन दण्ड होना चाहिये, और इस विषयमें श्रीमान् पूरोहित गोविन्द-नरायण उर्फ मानिकलाल मिश्र सारस्वत ब्राह्मण सूतापट्टी क्रास ष्ट्रीट, नं० ६५ कलकत्ता बरतमान को नीत धर्म्म विचार करके बिपक्ष होकर न्याय करना चाहिये।

और सुनते हैं कि पर साल कोई अधम खत्री अपने मासी की लड़की तथा रिश्ते नाते में अपनी बहिनको निकाल कर

बनारससे कलकत्तेमे लाया है, सो हे भाईयो! इस अपराधी पुरुषके हाथका पानी किसी हिन्दु मात्र पुरुष को ताअबद जिन्दगी भर के वास्ते न पीना चाहिये, और जो शुद्रिन कहॉविन से प्रसिद्ध खत्रीके बीर्य्य अर्थात् तुख्म से कोई लड़का या लड़की पैदा हुई होय सो वह रुपये के प्राक्रम से वह सन्तान खत्री नहीं बोली जा सक्ती है, क्योंकि शुद्रिन को औलाद शुद्र अर्थातु दास कहलाती है।

शेर।

(No 77) शिना शौ होगया बलदेव कबसे ?

यह दुनियां में दग़ा पाया है जबसे ॥

सत्यवादी धार्म्मिक पुरुषों से स्वप्न विषयकी वर्त्तमान प्रश्न का निर्णय क्या है ?

और इस वर्त्तमान वर्षमें, एक रोज़ मैंने, याने स्वप्नमे क्या देखा ? याने एक ज़ईफ अत्यन्त बुड्ढा मुझे स्वप्नमें सोते हुवे जगा रहा है, और यह बात कहता है, को हमारी बातको सुनों ? सो क्या ? याने एक बड़े दुःखके साथ शोकातुर की बात यह है, सो क्या ? याने कोई खत्री कूलीन कलकत्ते मे, अपनी भौजाई से फंसा हुवा था, याने जब उस्को लड़का पैदा होनेवाला हुवा, तब बाद इसके उसने उस गर्भ को गिराना चाहा, फिर बाद इसके जब वह गर्भ नष्ट नहीं हुवा, तब उसने कोई चीज़ खिला कर अपनी बिधवा भौजाई गर्भणी को मार डाला, फिर बाद इसके उसके नातेदारोंने रुपये और प्राक्रम के बलसे उस बेगुनाहँ, औरत को कलकत्तेके स्मशान नीमतल्ले में फूंक आये, और इस बातको गुप्त करके प्रसिद्ध नहीं किया, याने प्राइवेट रखा, फिर बाद इसके उस बुड्ढे ने मुझसे यह भी कहा, कि यह बात को

पूर्ब्बियों खत्रियों के कोई (*प्रोहितजी कलकत्तेवाले अच्छीतरह से जानते हैं, सो हे भाईयो! यदि यह स्वप्न मेरा सत्य है, तो ऐसे चाण्डाल पुरुष के हाथ का जलग्रहण करना हिन्दुमात्र को महा दोषित है। सो हे भाइयो! हमारी दो जिह्वा है, याने एकमें अमृत और दूसरी में विष है, याने हमारी अमृतवाली जिह्वा सज्जनोंकेलिये है, और बिषवाली जिह्वा कण्टकोंकेवास्ते हलधर है

(No. 78) चौपाई।

हितको †जिह्वा दो है भाई। ‡अमृत बिषकी लखहु मिताई॥
अमृत बचनहिं नीत सुनाई। हलधर अनहित को दुखदाई॥
सांच बचन बोले जो बांनो। कण्टकको बिष कटुक समांनो॥

दोहा।

मीठे रसको सब चहैं, कड़ुवो चहैं न कोय।
कटुक वचन बलदेवको, नीतसे अमृत होय॥ १॥
जैसे आमको जानिये, खट्टे से मीठा होय।
यह नीती बलदेवकी, समझहु सब जन कोय॥ २॥
जैसी नीयत जानिये, तैसी बरकत होय।
सांच कहैं बलदेव यह, कुकरम धनको खोय॥ ३॥
मोहर कोले में लगे, कहीं अशरफी लूट।
यह अनीत व्योहार की, जगमे लखिये फूट॥ ४॥

---

* पृष्ठ १२८ पदके प्रथम पंक्तीमें—प्रहित शब्दका अपभ्रंश प्रोहित—अर्थातु प्रेतोंका हित करनेवाला, अथवा—परोहित—श्रेष्ठ हितकारी अर्थातु दूसरों का हित परोनेवाला-पुरोहित अर्थातु ग्रामका हित करनेवाला,पूरोहित, अर्थातु पूरा हित करनेवाला,—

(† भाषा—जिभ्या। (‡यह दोनों वस्तु समुद्रसे निकली हैं।

(No. 79) चौपाई।

श्रीकृष्ण द्वापर औतारा। (*मृत्युलोक जानत संसारा॥
इन्धीं बहेलिया अधमक साई। यह नीती पुराण अस गाई॥

दोहा।

यह (* मृत्यु लोकमे जानिये, जो आवे सो जाय।
उपदेशक बलदेव यह, कहते नीत सीखाय॥

(No 80) राग चेतौनी।

यहां जो चाहे सो तुम करलो अनीत जगमें भाई।
जो अनरीत किया है जिसने फिर क्या उसने पाई॥
यहां वहां दोनों हाकिममें मुख भञ्जन हो जाई।
अन्त समय जब पड़ेगा दण्डा फिर क्या हो पछताई॥
अज्ञानी उपदेश को सुनिये सब धन यहँ छुट जाई।
भाई बन्धू मित्र कुटुम्ब हित सङ्गहि कछुक न जाई॥
अहङ्कारको त्यागरे मनुवां मोहँ न मुक्ती पाई।
चेत चेत चेते नहिं कोई ज्ञान चेतौनी भाई॥
अन्याई पुरुषों को रहती अपजस कीरत छाई।
बलदेवप्रसाद को जगमें सबको राम राम है भाई॥

(No 81) मृत्यु समाचार।

दोहा।

जगन्नाथ बर्मण खन्न, नामीथे संसार।
मृत्युलोक तनु त्यागके, उतरे भवके पार॥

---

* मृत्युलोक—संस्कृत उच्चारण जानिये, और भाषा अपभ्रंश—मिरतलोक जानिये।

जगन्नाथ दासजी खन्ना कम्पनी कलकत्ता पचागली मुल्लिन्न अर्रमनी ष्ट्रीट (नं० ६३।१) के आप रोजगारी पेशोंमें सरनाम पुरुष थे, और आपकी अवस्था ५३ वर्ष छ महीने की थी, याने आपका जन्म श्रीविक्रमी संवत १९०७ मे हुआ था, सो आपका ता० ११ सेपटेम्बर सन् १९०४ ई० को लहौर में अन्त जन्मभूमि प्राप्त हुआ,—

अपःभ्रंश शब्दका निर्णय ।

इस पुस्तक के पृष्ठ १४१ के ३ पंक्तीमें (लल्लू * मल) और पंक्ती १३ व पंक्ती १४ में, (लाला हरकिशुन † शाह) व लाला जयकिशुन शाह हमारे परदादा अर्थातु प्रपितामह दो सगे भ्राता स्वर्ग-निवासी का ठीक नाम लाला हरकिशुनलाल व लाला जयकिशुन लालजी था,—

पृष्ठ १२५ के (नं० ५४) के ३ पंक्तीमें रजस्वला के शब्दका अपभ्रंश रजस्सुला—पृष्ठ १२९के (नं० ५८) के ३ पंक्तीमें, सारस्वत शब्दका अपःभ्रंश—सारस्सुत,—

अपःभ्रंश ।

(* मल्ल शब्दका अपःभ्रंश—मल उच्चारण होता है अर्थातु मल्ल—पहिलवान को कहते हैं ।

(†शाह शब्दका अपभ्रंश—साव—शाह—अर्थातु याने मुल्कका मालिक बादशाह को कहते हैं, और—साव अर्थातु मिलकियत का मालिक को कहते हैं, और इस पुस्तक को पृष्ठ ११५ की १५ पंक्तीमें शोरहपुश्त—ठीक उच्चारण—शोहरह् पुश्त अर्थातु—ढीट बदमाश को कहते हैं, अपःभ्रंश शोरह पुश्त याने—शोरे पुश्त ।

पोष्टाफिसमें कलयुगके अन्तर का आक्रमण किञ्चितमात्र क्या है? याने—

इस पुस्तक का मुद्रित लेख पत्र पृष्ठ १०५से पर्य्यन्त १५२ताईं और खास १ फोटो अपनी प्रकाशित की हुई—प्रभु छोटे लाट साहिब आगरा तथा अवध देशाधिकारी के सेवामें बजरिये रजिष्ट्री डांक हाज़ाके A.D. नं० ५८ खेङ्गरापट्टी कलकत्तेके द्वारा से ता० १०—८—४ ई० को रवाना किया था, सो मेरा यह पाकेट ता० १२—८—४ ई० को आंजनाब के खिदमत शरीफ में डिलेवरी हुवा, और यह तारीख १४ को कलकत्ते में पहुंचा, और ता० १४ से १६ ताईं हमारी यह रसीद कलकत्ते की शिमला पोष्टाफिस में हवा खाती रही, फिर बाद इसके ता० १७—८—४ ई० को यह इकनालिजमेण्ट मुझे प्राप्त हुवा, और इस पाकेट के पहुंच की कोई चिट्ठी वरूद आं जनाब के खिदमत शरीफ से इस मरतबह् बजरिये डांक हाज़ा के नहीं मरहमत हुई है।

प्रश्नके उत्तर का समाचार।

हे भाइयो! विदित हो कि जब मैंने अपनी बिरादरी की बदनामी और हर एक तरह की शिकायतें कस व नाकस से उड़ती पुड़ती सुना, तब मुझसे रहा नहीं गया, फिर बाद इसके मैंने, बाबू नरसिंह दासजी खन्ना जमाई दामोदर दासजी टण्डन खत्री सभापति कलकत्ते बड़ी बाज़ार कोठी (नं० ५५) से यह सब हाल मैंने दरियाफ्त किया, क्योंकि आपभी हमारे इस विषयमें बिचारमान हैं, फिर बाद इसके आपने, यह मुझे उत्तर दिया, सो क्या? याने हमारी बिरादरी में लोग अपने को खुद सुख-

तार आम हैं, जो जिसके मनमें आता है, सो कर उठाता है, क्योंकि खौफ और डर किसी को न तो परमेश्वर का है, और न बेशरमों को दुनियां के जात पर जात मेंलज्जा—हया है, और द्रव्य के अहङ्कार से न हाकिम न हुक्कामो का डर है, यानें जो जिसके मनमें आता है, सो वैसाही बेखौफ होकर अन्याय कर उठाता है, यदि कोई बात नीति से समझाई जावे, तो अन्याई लोग फौजदारी लड़ाई करने को आमादह् होते हैं।

धर्म्म सम्बन्धी विषय समाचार।

और सुनते हैं कि कोई वैष्णव खत्री कुलीन धनी का लड़का जनेऊदार कलकत्ते का कोई बङ्गालिन रण्डी मुसलमानिन् के साथ छ: महीनेसे अवारा होकर भ्रष्ट होगया है, सो इस बातको बहुतेरे लोग जानते हैं, सो हे भाईयो! इस बातको विचार करना चाहिये, सो क्या? यानें जैसे मुसलमान से कोई हिन्दू पराश्चित करनेसे नहीं हो सक्ता है, वैसेही इस अवारे पुरुष का भी प्रमाण जानिये? सो नहीं। रुपये में बड़ी ताक़त है, सो क्या? यानें सत्य का असत्य हो सक्ताहै: और असत्य का सत्य हो सक्ता है।

कलकते की तेल और मैदे की कलमें कलयुग प्रवेश,

उपदेश।

(No 82) कवित्त।

कलकत्ते के कलवाले, सुनहु तेल मैदे वाले, क्यों अन्धेर मचाते हो?
निज घर माल उठाने वाले, वे पूछे लेजाने वाले, क्यों

अन्याय जनाते, हो ? यह निज स्वारथ के कारण से, एक महीना घरमें रखके, फिर क्यों माल तौलाते हो ? यह सुनके बलदेव कहैं, अनीतको बिचार के, महाजन क्यों सताते हो ?

दोहा।

वैश्य सभा को चाहिये, सब जन करैं विचार।
उपदेशक बलदेवनें, सुनिहिं शिकायत यार॥

म्युनिसिपलिटिका आक्रमण।

कलकत्ते को म्युनिसिपलिटी के आक्रमण से ता० ३० अगस्त सन १९०४ ई० से पर्य्यन्त ता० १ सिपटेम्बर सन् अलह् तक बड़ो-बाज़ार में हरताल रहा, याने बाज़ार को सब दुकानें बन्द रहीं,—

स्वीकार पत्र।

अडोटर जगदीश पुरी श्रीमान् पण्डित श्रीशुकदेवजी शर्म्मा श्रीकाशी निवासो वैद्यजो मैंने आपका जगदीश महात्मय पाया, सो आपने बहुत अच्छा भाषानुवाद किया है, और आपने इस पुस्तक का दाम चार आना रखा है, यह पुस्तक सब महाशयों के लिये बहुत सरल भाषा है, और आपने पुरीके पण्डों का अनर्थ प्रचार किया है, सो यह लेख हमारे बहुत पसन्द आया है, विदित हो कि मैं भी दो अढ़ाई वर्षतक नीम षार मिश्रित में रहा, यानें यह तीर्थ इस मृत्युलोक में, बहुत पुराचीण शास्त्र पुराण, इत्यादिकोंके प्रमाणसे है, श्रीमहाराज्य श्रीदधीच जीका तपोभूमि पुनीत स्थान है, याने ता० ३० अप्रेल सन् १८८९ ई० में—मैं ख़ास तहसील मिसरिख ज़िला सीतापुरमें मौजूद था, सो मैंने

भी वहांके पण्डों को बाज़२ लुटेहरा पाया, और पण्डा जो चत्री और पण्डाइनकी कैथिन, सो यह दोनों पण्डा ब्राह्मण बन कर, ब्राह्मण और चत्रियों से तीर्थ स्थानमें पैर पुजाते हैं, यानि बाज़ बाज़ यात्रियों को मारते और ग़रीब यात्रियों को भी अक्सर कभी कभी लूट लेते हैं।

अशुद्ध।	शुद्ध।
पृष्ट ७९ के दृश्य के बाद ११ पंक्ती में,	
और और—	और
पृष्ठ १२१ के दृश्यके बाद की ४ पंक्तीमें,	
मुशाहिब—	मुसाहिब,—
पृष्ठ १२२ की चार पंक्ती में परोखत्—	फरोखत्
पृष्ठ १२८ प्रमाण की ७ पंक्तिमें रितरो—	पितरो
पृष्ठ १४४ की ९ पंक्तीमें, प्रमाण—	प्रणाम
पृष्ठ १४८ की कजरी के रागकी अन्तरा प्रथम पंक्तीमें, बजावेना—	बचावेना,—
पृष्ठ १४९ के दो हेके ८ पंक्तीमें कोई—	कोइ
पृष्ठ १५० के ६ पंक्तीमें, प्रकाशीत—	प्रकाशित,—
पृष्ठ १५२ के तात्पर्य्य की ७ पंक्तीमें,	
ताड्वाल—	ताड्वाल
पृष्ठ १५७ के फुटनोटके प्रथम पंक्तीमें	
स्स्के—	इसके
पृष्ठ १५८ की ९ पंक्तीमें बलीमल पोवे—	बालीमल्ल पोवे,—

दोहा।—(No83) विष रुधिर नरको चखें, मच्छर मक्खी जोंक।
सब कण्टक को जानिये, धरम नीत है भोंक॥

पद निरवाणी— मेरे प्यारे सब कोइ भाई हिन्दू मुसलमान है।
उनको भी मैं चहता हूँ जो किरिश्तान हैं॥
अपने मज़हबमें जो रहते दीनदार हैं।
बलदेव प्रशाद दुनियां में करते सनमान हैं॥

(No 84) **पद-द्वितीय-भाव।**

मेरे प्यारे सब कोइ भाई हिन्दू मुसलमान हैं।
मैं भी उनको चाहता हूँ जो पूरे कोरिस्तान हैं॥
अपने मज़हब औ धर्मका जो रखते गुमान हैं।
बलदेव प्रसाद उनकाही करते सनमान हैं॥

ता० १५ अक्टूबर सन १९०४ ई० के (गुप्त मित्र महाशय कलकत्ते जो) हमारो नीत न्यायकी यह क़ानून दफा है, सो क्या ? यानें—

(No. 85) **पद।**

चुरट लगाके ओंठमें चलते मुख साबुन से धोते हैं।
गिट पिट भगवत गीता पढ़ते अज्ञानी जो होते हैं॥
मुसलमानको छूजा पांनी क्या न खरेसे रोते हैं।
सोडावाटर लेके पीते क़सबीके घर सोते हैं॥
* कांचका बरतन मट्टी बराबर जिसमें पाँनी बिकते हैं।
सच्ची बातें धरम नीतकी वैष्णव मतसे लिखते हैं॥
मुंहमें चुक्का देके पीते बाबू धरमको खोते हैं।
ऐँनक आंख लगाके चलते खोंटे खाते गोते हैं॥
यह अनरीत लखो सब कोई चोरी करैं तो रोते हैं।
बलदेव प्रसाद मेहरोत्र बर्म्मन जगमें हितको बोते हैं॥

* कांच-और कांसा—और फूलका बरतन यह सब वैष्णव मतसे मट्टोके तुल्य समझे जाते हैं।

पञ्चानन्दजी गुब्बारा उड़के फटा क्यों ? याने,—

अब की साल कलकत्ते में, गुब्बारा कार्त्तिक मासमें, खूब उड़ा, फिर फट जानेसे नतीजा क्या है ? यानें जिसको फूस खर तिनकों की, जिस ग्राममें झोपड़ियां होवें, सो फुक जावें, याने-बाज़ २ गुब्बारे-उड़के आकाश में तारेके समान होकर तरजाते हैं।

(No. 86) दोहा।

गुप्त सँज्ञा जानिये, * वैश्यों को सरनाम।
गुप्ती गुप्तसे होत है, † एसो-सियन-में काम ॥ १ ॥
वैश्यों को मीटिङ्ग सुमति, कलकत्ते दरम्यान।
एसो-सियन-बङ्गालको, जगमें सभा बखांन ॥ २ ॥
नामके अक्षर अन्तमें, जो रखते हैं दास।
भगवत सेवक जानिये, यह मतलब है ख़ास ॥ ३ ॥

मारवाड़ी चेम्बर आफ़ कामर्स बड़ीबाज़ार हरीसन रोड, कोठी (नम्बर २०३) के बिषयमें।

(No 87) कबित।

मरवाड़ी चेम्बर कामर्स, कलकत्ते व्योपार को, सुमतहि सभा प्रचार है * यह मीटिङ्ग के नेमको, कपड़े को दूकानदार सब रखतो स्वीकार है * वैश्य सभामें जानिये, जो करते हैं कारबार, फैसला बिचार है * यह कहते बलदेव हैं, जहां धरम की चर्चा है अन्याय को फटकार है *

* वैश्य सभा नं० १६६।६८ हैरिसनरोड कलकत्ते में शोभायमान है,—

† मारवाड़ी एसोसियसन मैंड़ातालाव हरीसनरोड नं० १५१ कलकत्ते में सुशोभित है।

विज्ञापन।

सूर्य्यकर्ण तस्यात्मज कृपाशङ्कर दव्य यजुर्वेद पाठकजी ज्योतिष अनुष्ठान पूजन पाठ कर्म्म यजन याजक इत्यादिक अच्छीतरह से विधिपूर्वक कर्म्म अनेक प्रकारके करानेवाले पण्डित हैं, जिन महाशयों को पूजन पाठ प्रश्न जन्मपत्रिका वर्ष फल बनवाना, अथवा देखलाना होय, सो कृपा करके इनके, स्थानमें पधारिये, और वर्ष फलका फल गणितके अनुसार ठीक तौरसे घटित करके घटाते हैं।

आप लोगोंका कृपाकांक्षी
पण्डित—कृपाशङ्कर श्रीमाली ब्राह्मण दव्य।
नं० ७४ शिवूठाकुरकी गल्ली कलकत्ता।

श्रीमान् राय राजा श्रीयुक्त बद्रीप्रसादजी साहिब बहादुर रईश आज़म मुक़ीम कलकत्ता जयतिः।

ता० १३ नवम्बर सन् १९०४ ई०

(No88)

क़सीदा।

जिसने कभी न देखा "हो" सुनां जहांन में।
सो वह भी देखले *कलकत्ते की बग़ान में॥
बैकुण्ठ स्वर्ग द्वार को यहीं पहिंचान ले।
जो जानता नहीं है सो वह भी जान ले॥
जेतने हुवे हैं देवता देवी जहांन में।
दरशन को ख़ूब कीजिये भक्तीसे ध्यान में॥

---

* कलकत्ता वस्ती कलके उपर कलिकाल में कहां है ? यानै इस मृत्यु लोकमें जानिये।

प्रचण्ड घोर पाप जब हुवा संसार है।
औतार लेके स्वामीने किया संहार है॥
शिक्षा किया था लोगों को अनेक प्रकार से।
सब घोर पाप भस्म किया था संसार से॥
वही बिशाल झांकी यहां बिराज है।
शिव प्रतक्ष जानिये ज्ञानीधिराज है॥
* मन्दिर को मैंने देखा बैकुण्ठ द्वार है।
† जहां दीये की रोशनी खूबै बहार है॥
देखा नहीं सुना नहीं ऐसे चिराग़ को।
केसरको पहुंची खुशबूह अजब दिमाग़को॥
फिर ग़ौर करके देखा तो क्या पड़ी नज़र।
चिराग़ बलते देखा बालाय ताक़ पर॥
धुवां न उस्में काजर जमते ‡ पीले केसर।
दानाई से कियाहै ख़रच धरममें ज़र॥
मन्दिर बनां कलकत्ते में "क्या" राय अज़ीम का।
श्रीबद्रीदास राज बहादुर मुक़ीम का॥
क्या सुन्दर बनाहै मन्दिर लिखूं जहांनमें।
बलदेव प्रसाद मेहरोत्र यह गाते हैं तानमें॥

(*) मन्दिर के अन्दर कोई मुसलमान नहीं जासक्ता है, ब्राह्मण, क्षत्री वैश्यों को केवल जाना अधिकार है।

(†) पवित्र पुनीत स्थान—अथवा—दुनियां—जहांन।

(‡) सुनते हैं कि शुद्ध माल कांगनी केसर मिश्रित रोग़नमें भी यह गुण पाये जाते हैं।

गुप्त स्वप्न विषय का समाचार उपदेश क्या है ? याने,—

(No. 89) और।

(*) बेवों के पास होता है जो माल खज़ानाँ।
उसको भी छीन लेता है कलयुग का ज़मानाँ॥
कसबी के घरमें जाके जो तबले को बजानाँ।
बेवों की रकम छीन के धरम को गंवानाँ॥

दोहा।

चमड़ी चमड़े चामकी, चली जाय तो जाय।
गौ विधवनके आपसे, खल सब उजड़ैं भाय॥

(*) यह बात संसारमें बहुधा सुनाई देती है सो क्या ? याने अक्सर बहुतेरी विधवायें सब अपना ज़ेवर बेंच करके, रुपया महाजनों की कोठियों में, ब्याज के लालच से जमा करती हैं, सो हे भाईयो ! याने लालाजी का यदि कहीं देवाला निकला, सो वह सब विधवावोंका रुपया गोलमाल होकर मारा जाता है, सो हे भाईयो ! इस बात का प्रबन्ध रखना इस भारतखण्ड तपोभूमि पुनीत स्थानमें, याने सब जातियों के सभासदों का धर्म्म है,—

याने किसी मारवाड़ीने, मुझे स्वप्नमें एक बिनय पत्र देकर मुझसे यह निवेदन किया है, सो क्या ? याने विधवावोंके प्राण, धर्म्म की रक्षा करना तो दरकिनार रहा, याने यदि कहीं किसी विधवा मारवाड़िन के पास धन अथवा ज़ेवर गहिनां बचा बचाया इत्यादिक कहीं गुप्त रहै, सो उस द्रव्य को कुटुम्ब के बाज़ दुष्ट लोग हज़ार में से एक आध जो बिभिचारी पुरुष इस संसार में

हैं, सो वह दुर्ज्जन पुरुष याने सब मालियत को छल कपट करके हर लेता है, और वह मारवाड़ी बच्चा ऐयाशी में, याने सब रक़म को फूंक देता है, फिर वह विधवा मारवाड़िन बिचारी लाचार होकर अत्यन्त दीनताको प्राप्त होती है, और जो लोगों की विधवा के, नाते रिश्ते में मालिक बन कर मिलकियत के प्रबन्ध करनेवाले करता जो होते हैं, सो वह लोग भी उस रक़म जायदात को गोल माल करना चाहते हैं, शोक का कारण यह है कि कोई सभासद इस बातका बिचार करनेवाला अथवा अपनी बिरादरी का कोई पुरुष बिधवा का सहायक नहीं धर्म्म नीतसे दिखलाई पड़ता है, अथवा विधवा को हलाल करनेकी तदबीर करते हैं, परमेश्वर— हाकिम से नहीं डरते हैं, केवल अपनाही स्वार्थ समझते हैं,—सो हे भाईयो! इस अत्याचर्य्य पर हर एक जातियों की सभासदों को बिचार रखना नीत के अनुसार नेम धर्म्म है।

उपदेश।

(No. 90)

दोहा।

सब कैथन को चाहिये, पूजैं क़लम हमार।
उपदेशक बलदेवकी, पढ़के नीत बिचार॥
ज्ञानी नर जो श्रेष्ठ हैं, सो नहिं खाते मास*।
जो युद्ध करते शस्त्र से, लहचारहि खाते ख़ास॥

---

* हमारी रायमें यह है सो क्या? याने—जितने न्यायधीश बिचारमान ज्ञानी पुरुष नीतसे न्याय चुकानेवाले हैं, सो उन समस्त महाशयों को मांस इत्यादिकों से, परहेज़ रखना चाहिये, अथवा मांस खाना किसको चाहिये, याने जो लोग की शस्त्रों

हिम्मत कबहु' न छोड़िये, जब लौं तनमें प्रान ।
हितकारी बलदेव को, धरम सहित पहिँचान ॥

——:*:——

जन्म कुण्डलीयग्रह पञ्चम स्थान फलानि:—

विदित हो कि मेरी जन्म कुण्डलीके पञ्चम स्थान से, सूर्य ग्रह कुम्भ राशि से चलित उदय होकर षष्टम स्थानमें मीन राशि पर धर्म सम्बन्ध से भारत खण्डमें नीतसे शत्रुनको परास्त करनेवाला दावा रखता है, और मेषराशिका चन्द्रमा सप्तम स्थानमें स्थित रहने-वाला, उच्च पदको प्राप्त होकर मेषराशि का स्वामी मङ्गल ग्रह, नवें धर्म स्थानमें स्थित उदय होकर इस भारत खण्डके नीत और धर्म की रक्षा करानेवाला है, याने न्यायाधीशों के हाथों से असत्य का नाश करानेवाला है, और जो दुष्ट जीव लोग जिस जिस दरजे के लायक हैं, सो उस दर्जे पर उन दुर्ज्जनों को पहुंचानेवाला है, यानें हमारे निज लघु बुद्धीके अनुसार न्यायको ब्रह्मा विष्णु महेश जी भी नहीं काट सक्ते हैं, परन्तु अज्ञानी पण्डितों खण्डितों को क्या गिन्ती है।

से संग्राम में जूझते हैं, सो उस समय में जब अन्न प्राप्त न होय तब लाचारी दरजे मांस को ग्रहण करना स्वीकार चाहिये, सो हे भाईयो ! हमारी राय में यह है, सो क्या ? याने जैसी मांस आहारियों की राय सल्लाह होय, सो उन समस्त महाशयों को अपनें राय बमोजिब विचार करना चाहिये, और सब पशुवों पर दया हितके साथ रखना चाहिये।

उपदेश

(No. 91) **चौपाई ।**

जो नारी स्वामी की चेरी । कोमल बोलै प्रिय बहुतेरी ॥
जो अबला लखिये मरदानी । बोलै बचन कुठार समानी ॥
जो नारी पतिव्रता लखाई । स्वामि चरण सेवत मनलाई ॥
जो नारी पति आज्ञाकारी । अपनी स्वामी की है प्यारी ॥
जो नारी पतिको न दुलारी । करत चूक जो देत बिसारी ॥
कटुक बचन कहते न उचारी । धरमनीतके जो अधिकारी ॥
रतिबिवेक मर्दन ब्रह्मचारी । तपको सिद्धकरत जयकारी ॥
*मनसे उपजै तनमें कामा । इन्द्रिय जीतै आठो जामा ॥
परमेश्वर जा पर अनुकूला । दुर्ज्जन सब रहते प्रतिकूला ॥
ऊसर धान न उपजै भाई । करते लोग उपाय घेनाई ॥
पुत्री पुत्र करम की †रेखा । नीत प्रमाणको सबने देखा ॥

—:*:—

(No. 92) **दोहा ।**

ज्ञानी नरको जानिये, जो तजते हैं नार ।
गुण ऐ गुण पहिचानके, लखके दोष बिचार ॥
पुनि पुनि माता ना मिलै, नारी मिलै अनेक
उपदेशक बलदेव की, सुनिये ज्ञान बिवेक ॥

—:*:—

* मनोज—अर्थात् मनसे उत्पन्न होनेवाला कामदेव ।

† प्रमाण—इस पुस्तके पृष्ठ ७७ की ६ पंक्ती को पढ़िये और देखिये—तथा बिचार कीजिये ।

(No 93) **शेर ।**

किया कलयुग से है संग्राम भारी ।
न रखा है सिया वक्तो ने यारी ॥

(No. 94) चौपाई ।

मान अपमान सुनहुँ नहिं काना, दोनों अमृत एक समाना *
धीरज फलको सुधहि समाना, ज्ञानी नर चखते अपमाना *

दोहा ।

मान अपमान को जानिये, मृत्युलोक व्योहार ।
उपदेशक बलदेव को, करिये न्याय बिचार ॥

(No,95) **शेर ।**

याद करो उस मालिक को अज़मत उस्की क्या न्यारी ।
ख़बरदार हो रहो मुसाफिर राहन है दयानत दारी ॥

कालपक्षेप समय के अनुसार बरतमान फल ।

याने मैंने अपनी अर्द्धाङ्गीवाली भार्य्या का बहुत नेक पाक चाल चलन पाया, यानें जबतक कि यह मेरे पास मेरी खास सेवा में रही, सो मैंने किसी प्रकार का कोई दोष नहीं पाया, याने सेवाय उसने मेरे चरण की सेवामें ध्यान रखा, परन्तु हमारी मातजी को कभी कभी कड़ी बात कह उठती थी, केवल उनकी नेम धर्म्म पूजन भजन पवित्रता के कारण सें बिचार न करके तीखे बचन बोल उठती थी, सो मुझसे यह बात कभी सही न गई, सो मैं भी बाज वक्त अपनी माता जीके पक्षपाती होकर कटुक बचन कह उठता था, याने दो वर्षसे, मेरी स्त्री और कन्या, हमारे

ससुरार में अपना निर्बाह करती है, याने वह अपनी बसर अपने—मा—बाप के घरमें हमारे बरतमान समय के अनुसार अपना कालपक्षेप करके अपने माता—पिता चाचा—चाची तथा भाइयों में गुज़रान करती है, और मैंने अपनी स्त्रीको इस कारण से त्याग किया है, याने अपने ससुरारवालों की दमड़ी छदाम की बुद्धियों के कारण से मेरा विवेक जानिये, याने अब मुझे अज्ञानी निरदई की लड़की से कुछ काम नहीं है, क्योंकि हमारे ससुरारवाले अहङ्कार और अज्ञानता के कारण से, याने हमारे बलवान ग्रलयों से मिल करके अथवा परमेश्वर और वाला हुक्कामों से बेख़ौफ होकर निडर हैं, सो इस कारण से इन लोगोंने, याने मेरे मात्र पक्ष उपदेश का अपमान करके मेरा अत्यन्त निरादर किया है, सो यह अपराध मेरी जिन्दगी ख़ास से क्षमाके योग्य नहीं है, तथा मेरे चचिया ससुर का लड़का याने मेरा साला (No 3) का मुझसे मेरी ख़ास दो तसवीर लेगया है, याने एक फटोग्राफर की खींची हुई ख़ास फोटो जानिये, और दूसरी बिल्लाक के द्वारे से याने जो कि इस पुस्तक के वास्ते, प्रेस में मुद्रित होकर प्रकाशित हुई है, सो उस चित्रकी छबिको जानिये, सो अब उस्की हमशीरह् को चाहिये, सो क्या ? याने मेरी छबीका पूजन किया करे, और मुझसे अब अपने पति का नाता त्याग करे, सो अब इसीमें उसका मोक्ष और कल्याण जानिये, और जब मेरे पास कुछ द्रव्य की हमेशा के वास्ते आमदनी कहीं से प्राप्त होयगी, याने तब मैं जो कुछ मुनासिब समझूँगा, सो माहवारी देता जाऊंगा, यानें बाद इसके जैसी राय सलाह हमारी माताजी की होयगी, सो मैं उनके आज्ञानुसार करूंगा।

(COPY.)

Lieutenant Governor's Camp.
United Provinces of Agra & oudh.
14th December 1904.

Sir,

I am desired to acknowledge pages 153—176 of your book in Hindi Sumitted with your potition dated the 30th November last.

Yours faithfully
Sd—H. G. S. Tyler I. C. S.
Private Secretary.

To
Baldeo Prasad Mehrottra,
CALCUTTA.

(COPY)

Government House,
CALCUTTA.
16th December 1904.

Sir,

I am desired to (+thank you for the loyal poem which you sent to His Excellency Lord Ampthill.

Yours faithfully,
Sd—R. Nathan, C. I. E. Private
Secretary to the Viceroy.

To
Baldeo Prasad Mehrottra,
CALCUTTA.

+ याने मेरी जन्म कुण्डली के पञ्चम स्थानकुम्भराशि पर सूर्य्य और बृहस्पति द्वे ग्रह संयुक्त होकर राजस्थान के द्वारों से सम्मानादि फलित प्रमाण यह अंगरेजी चिट्ठी हैं, सो क्या ? याने ज्योतिष जातक चन्द्रिकायाम् । भाषाव्याख्या: १० पृष्ठ ७३, के सुनना पद्य यह है,—

(COPY)

Government House,

CALCUTTA.

16th December 1904.

Sir,

I am desired to (* thank you for the loyal poem which you sent to His Excellency the Viceroy.

Yours faithfully,

Sd—R. Nathan, C. I. E. Private

To Secretary to the Viceroy.

Baldeo Prasad Mehrottra,

CALCUTTA.

सो क्य ? याने जो पञ्चम ब्रहस्पति हो तो सुन्दर मित्र और पुत्र वाला सुख धन मंत्र वैदिका गमक इन्होंसे युक्त हो, पण्डित पवित्र मान्यवर होवे २८॥ और दूसरा प्रमाण अध्याय: ९ की पृष्ट ६४ का यह है, सो क्या ? याने ब्रहस्पति कुंभमें हो तो मोती मूंगा प्रभतियों से और स्त्रीविभव पुत्र इन्हों से संयुक्त हो सुख सौभाग्यवान मनुष्य होवे ३६, अध्याय:-पृष्ट ४६ सङ्गमाद्विग्रह फलानि:—याने सूर्य ब्रहस्पति युक्त होय तो पर कार्य्यमे तत्पर विषम अर्थात् तीक्षण स्वभाव वाला, सूर्य्यचलित भाव फलित शत्रु स्थान में बुध सूर्य्य मीन राशि पर द्वै ग्रह संयुक्त फलानि:—सूर्य्य बुध युक्त होवे तो पण्डित और सुन्दर कीर्त्तिमान् सौख्ययुक्त होय १२ ।

+ याने मेरे यन्म कुण्डली मे शुक्रग्रह चत्तुर्थ स्थान में मकर राशि १० अंश से उदय प्राप्त हैं, प्रमाण योतिष फलित जातक चन्द्रिका याम्— भावाध्याय: १० शुक्रग्रह चतुर्थ होय तो भूमि मित्र गृह असवारी मान हर्ष इन्होंसे युक्त होवे, सुखी रहे पुन्यात्मा होवे, ७४—७५ ३४ पृष्ट प्रमाण चमत्कार चिन्ता मणि: योतिष फलित याने सबपुरुषों से अधिक माननीय पुरुष होवे, अध्याय:—९ पृष्ट ६५ शुक्र मकर कुंभ में हो तो निंदित स्त्रियों के साथ आसक्त हो, कामी स्त्रियोंके वशमे हो. शोभनी शरीर हो मान वानत मनुष्य होवे ४१॥ याने चतुर्थ स्थान मे शुक्र ग्रह होने से निंदित स्त्रियों के साथ कामी स्त्रियों के बस

व्याख्यान ।

और हे भाइयो ! हमारी नीत और न्याय धर्म्म उपदेश क्या है ? मानों सूर्य्यका देदीप्यमान प्रचण्ड प्रकाशित निरमल ज्ञान कर्णोंके द्वारों से संसार में उदय विस्तारिक है, और हमारा सरल सुभाव क्या है ? याने चन्द्रमाकी नम्रता विशेष सम्पूरण जानिये, और मेरा जगमें अपमान और निरादर क्या है ? यानें इलाहाबाद और कलकत्ते की खत्री सभापति का विरोधी मेरा मान पच्च महाधर्म्म उपदेश है, और मेरे सनमान इत्यादिकोंके शासक परस पर अन्याय विचार करनेवाले, यही दोनों सभासद *राहु और †केतु के समान अज्ञानी हैं, और हमारे ऊपर अत्याचार्य्य प्रहार रखनेवाले, मिथ्या प्रपंची इन दोनों सभासदों के मन्त्री साढ़े साती शनीचर हमारे वास्ते हैं, जैसे २॥ और ५ जोड़ देने से ७॥ हुवा, वैसेही यह दोनोंजाती जानिये, यानें २॥ घर और पच्छा जाती मिलके साढ़े साती शनीचर बाज़ बाज़ कण्टक नज़र हमारी बिरादरी में आते हैं, अथवा इलाहाबाद और कलकत्तेमें बाज़ बाज़ कण्टकों को याने हमारी बिरादरियों के पुरुषों को क्षुद्र शब्द का अपभ्रंश शूद्र के समान जानिये, और हमारी साहस क्या है? यानें अन्याइयों का अन्याय भच्चण है,—

मे वह पुरुष कभी नहीं रहसक्ता है, प्रमाण विवेक अर्थातु—ज़िरो ! ज़िरो ! ज़िरो ! याने और योतिष ग्रन्थ का प्रमाण इस पुस्तक के पृष्ट ९८ से परयन्त पृष्ट ९९ ताँई शुक्र ग्रहका फलित फल वेवरेवार प्रकाशित मुद्रित प्रमाण जानिये,—

(No 96) ॥ गज़ल ॥

लखता है रामराम है लखताहैं रामराम + मुझसे हुवा नहीं है खोटा कभी है काम *
अदालत उसीकी क़ायम दुनियाँ जहानमे + शाहो' का शाह आफताब आसमानमें *
मै हूँ हमेशा सच्चा अपने इमान मे + बलदेव मन रमा है शङ्कर के ध्यान मे *

* राहु कौन है ? याने राहु तमोगुणी धन अजीरम रोगी धर्म्म प्राण प्रिय शासक

माई लार्ड,

मुबारक बादी।

(No. 97) गज़ल।

आये थे(* लार्ड एम्पथिल भारत के (*ताजपर।
एवज़ी पूरी करके जाते अपने राज पर॥
अपनें अपनें काम का चारज लिया दिया।
हिन्दमें फिर (*लार्ड कर्ज़ननें हुकुम किया॥
रवनक़ अफ़रोज़ आज वाइसराय हमारे।
क्या हिन्द के परसपर चमके हैं(* सितारे॥
मुबारिक बादी हो मेरी पैदा जहान में।
बलदेव प्रसाद मेहरोत्र यह कहते हैं शान में॥

इलाहाबाद की खत्रीसभा के हेड् को जानिये सो क्यों? याने इन्हीं ने हमारी यन्मकुण्डली के विंशोत्तरी माहादशा चन्द्रमा की सुखदाई को ग्रास किया,—

† और केतू कौन है? याने केतू वैष्णव तमोगुणी गौनों के हाट में हिंसक लाभदायक बुद्धि नाशक कलकत्तेकी खत्री सभापतिको जानिये, सो क्यों? याने इसने हमारे श्रेष्ट कामका मेहनताना राजस्थान से नहीं दिलाया, और बल्कि इसने मेरे प्राण ग्राहक अनेक मूर्खों को वेमान बना दिया, सो क्यों? याने क्षुद्र बुद्धियों की बुद्धियोंने मेरे लाभ पर डाह रखने लगी, सो इस कारण से मेरे सहायक यह लोग न हुवे, याने नीयतों में बेमानियाँ छागईं याने मुझे जे़रबार करने के लिये कमर बस्ता हुवे,—

* His Excellency Lord Ampthill, G. C. S. I. Viceroy and Governor General of India.

+ ताज तख़्त—सरताज—मुकुट को कहते है। *सितारा—प्रताप—तेज—रोशनी।

+ याने आपका सुशोभित इस्म मुबारिक) इस पुस्तक के २ पृष्ट मे प्रकाशित होकर मुद्रित है, और सुनने हैं कि जनाब आली जाह वाइस राय श्रीसर्वोपरि विराज मान लार्ड कर्ज़न साहिब बहादुर हिन्द दाम इक़ बालहू- याने आप इस भारतकी राज धानी के राजकाज पर दो साल रवनक़ अफ़रोज़ होकर विलायत चले जायँगे, सो यह बात मैं नहीं जानता

(No. 98) **मुबारक बादी।**

मुनसिफ के हाथ की कलम दुनियां में मुबारिक।
अदल जबांसे आती है जाती है मुबारिक॥
यह बन्दे की जबां से यारो नेकों को मुबारिक।
मुझको भी मिली आज है शादी से मुबारिक॥
नेकों को नेक चलन पर होती है मुबारिक।
बलदेव (प्रसाद मेहरोत्र की असहाब मुबारिक॥

भावार्थ,—

आज दिन (ता: १२—१२—४ ई०) को अनकरीब दस बजे याने दिन को आप लण्डन से शोभायमान होकर इस भारत खण्ड तपोभूमि पूनीत स्थान् में, याने आप कलकत्ते को राजस्थान में कैसे प्रकाश मान हुवे हैं, याने मानो चमचमाता हुवा हिन्द के परस्पर चमकीला दो प्रतापी सितारा अद्भुत उदय तेज होकर अत्यन्त महोदय को प्राप्त हुवा है * और इससाल मैंने एक अपूर्व बात यह देखा, सो क्या ? याने जब आपकी सवारी कलकत्तको बस्तोमे आई है, तब मै भी मुत्तिल अर्थात् निकट हरीसन रोड हबड़े के पुलके निकट बस्ती सड़क की पटरी पर खड़ा हुवा

* हूं, याने जहां तक ठीक है, और मेरी राय में तो यह है, सोक्या ? याने यदि आप इस भारत खण्ड में ५ वर्ष और विराज मान रहैंगे तो मैं यह आशा कर ता हूं कि भारत अच्छी तरह से सुधर जाय गा, सो क्या? याने दुष्ट पुरुषों की दुष्टता—और बैमानी की बैमानियां तथा अज्ञानियों की अज्ञानता और क्षुद्र बुद्धियों का विश्वास घात रखना मिट जायगा—

क्या देखा ? याने कूदती हुई और उछलती हुई दो सुर्ख अर्थात् लाल२ रङ्ग की गौवें जय जय कार मनाती हुई सवारी के आगे दौड़ी हुई चली जा रही हैं, सो इन दोनों गौवों की प्रसन्नता परख कर मेरा चित्त अत्यन्त आनन्द को प्राप्त हुवा—फिर बाद इसके मैंने निज लघु बुद्धि के अनुसार यह बात विचार किया, सो क्या ? यानें भारतेश्वर प्रभु सप्तम एडवर्ड सम्राट अभिनन्दन महोदयजी से आपने गौवें और विधवावों के प्राण धर्म्मको रक्षाके वास्ते, याने बहुत अच्छा उपकार हमारे सनातन धर्म्म का किया है, और आपने गौवों के प्राणों को सम्पूर्ण सहायता किया है।

(No. 99) **ग़ज़ल।**

आकाश में जो देखते हो जितना सितारा।
हर शख़्स की वह रोशनी रोशन है सितारा†॥
जब किसी का होता है दुनियां से छुटकारा।
वह टूटती है रोशनी गिरता है सितारा॥
दुनियां में होता जन्म है आता है सितारा।
आदमी मरता है जब (* जाताहै सितारा॥
प्रताप तेज फलक में रवि सब का सितारा।
बलदेव*प्रसाद मेहरोचका (*मेहर है सितारा॥

---

* यानें आकाश का सितारा नहीं जाता है, परन्तु नवग्रह शुभग्रह और पापग्रहों का अंश शक्ति तेज प्रकृति चली जाती है।

* प्रसन्न। † मेहरबानी करनेवाला सच्चा हाकिम अथवा परमेश्वर तथा प्रकाशमान सूर्य्य को जानिये।

ॐ नमः शिवाय नमः।

अथ बलदेवप्रसाद मेहरोत्र २॥ धरस्य विनय कृतः—

(No. 100) चौपाई।

सुनहु सदाशिव विनय हमारी।
हरहु निशाचरि माया भारी॥
अज्ञानी सब पशु नर नारी।
कलिहिकाल में अत्याचारी॥

दोहा।

असुरन की माया प्रबल, खल कपटी सब यार।
कलिकाल में जानिये, लखिये बहुत गँवार॥ १॥

नेकी के बदले लखो, बदी रखत सब यार।
उपदेशक बलदेव यह, हित लिखत संसार॥ २ ॥
द्वापर युगमें जानिये, कृष्ण भयो औतार।
सुदामा मित्र ग़रीब के, दुख मेट्यो करतार॥ ३ ॥
(१सिंह राशि को, ईश है, ज्योतिष भानु प्रमान।
हित शिक्षा बलदेव की, जगमें रविहि समान॥ ४ ॥
साहस रखना कठिन है, साहस दुसह कराल।
उपदेशक बलदेव को, साहस विदित विशाल॥ ५ ॥
हिर्स दवाई ज्ञान को, अज्ञानी सब लेव।
उपदेशक बलदेव को, पढ़के दामहिं देव॥ ६ ॥
डाह रशक को छोड़िये, अन्याई सब ख़ास।
उपदेशक बलदेव को, रखिये नीतहि पास॥ ७ ॥
क्या बुड्डन की जानिये, अक्किल गई बुढ़ाय।
उपदेशक बलदेव यह, न्याई नहीं कुढ़ाय॥ ८ ॥
सच्चे को नहिं आंच है, अन्याई सच बोल।
उपदेशक बलदेव को, लखहु बचन अनमोल॥ ९ ॥
टी पीके टीँ टीँ करते, अन्याई सब यार।
चाह को बलदेव पीते, चाह चहै संसार॥ १० ॥
चाह शब्द को अर्थ है, चाह प्रेम को प्यार।
जो चाहे बलदेव को, रखिये भक्ती यार॥ ११ ॥
टी अङ्गरेजी में कहैं, भाषा कहते चाह।

---

(१) यानें हमारी ज्ञान बुद्धी क्या है? मेहर अर्थात् सूर्य है, प्रमाण यह है, सो क्या? याने मेरे जन्म कुण्डली के लाभ स्थान में सिंह राशि ग्यारहवें है, और सिंह राशि का स्वामी पञ्चम स्थान में सूर्य संयुक्त बृहस्पति ग्रह है, सो पञ्चम स्थान से बुद्धी का प्रमाण ज्योतिष मत से विचार किया जाता है।

शिवहि भजेहि बलदेव नित, चाह्व गुरू की चाह ॥१२॥
सफेदी लगे मकान में, (२चूना कहै जहांन।
(३चुँनांचुँनी करते सब,(४ चुन चुन खाते पान ॥ १३ ॥
धब्बे में चूँना लगे, मन उज्जल नहिं जान।
शेखी कबहुं न मारिये, अन्तकरन पहिंचान ॥१४॥
मृत्युलोक में जानिये, (५फूट (६बैर हित खाय।
यह कहते बलदेवलखि, (७जगत अनीत जनाय ॥१५॥
(८तारे को तारा कहत, तारा है संसार।
लखहु नीत बलदेव की, क्या चमके भवपार ॥ १६ ॥
नीत प्रमाण से जानिये, (९कौशिल गोत्र हमार।
उपदेशक बलदेव यह, हित चाहत संसार ॥ १७ ॥
(१०राजमान उपदेश (११हित,(१२जगत भरे को(१३काल।
नीत लेख बलदेव को, लखिये कठिन विशाल ॥ १८ ॥

---

(२) मेरा उपदेश क्या है ? याने कगटोकों को चुना लगनेवाला है।

(३) लल्लोपत्तो—लल्लोचप्पो—अथवा हम चुनी दीगरनेस्त (४) बिन बिन—गिन गिन—अथवा खजुली कोभी चुन चुन कहते हैं।

(५) फल कुमति (६) फल शत्रुता (७) संसार—जागताहै गरजता है (८) सितारा—तारा अथवा मृत्युलोककी पुरुषों की तथा स्वर्गलोक के पुरुषों की रोशनियां (९) प्रमाण गोत्रावली पृष्ठ (४) कोशल्य यजुर्वेद धनुर्वेद माध्यन्दिनी कात्यायन पृष्ठ (९) कौशिल-प्रवर विश्वामित्र-शिखापाद-दाहिन-देवताशिव, यानें यह पुस्तक भोलानाथ अग्निहोत्री पुस्तकालय चौक इलाहाबाद में मिलता है, मूल्य ⁄) सम्वत १९५७ में सातवी बार २००० मुद्रित हुई है।

(१०) राजा का राजकाज—अथवा कलकत्ते में राज शब्दका उच्चारण बहुधा लोग क्या करते हैं ? याने जैसे मिस्त्री इमारत का बनाने वाला मजदूर कारिगर—और श्रीकाशीजी में अहीर—कुनबी—पत्थरके ढोनेवाले मजदूरों को पेशराज कहते हैं, (११) हित कैसा है, याने धर्मनीत कलयुग वरतमान में रिपुके समान है ? (१२) याने बालगुण बेमान निगोड़े को जानिये, (१३) काल—मौत अथवा समय को भी कोहते है—,

(No. 101) *ग़ज़ल।

दिलतो साफ है नहीं गङ्गा नहाते हैं।
भजन को ख़ूब करके तीलक जमाते हैं॥
पराया माल लूटके († डेकार जाते हैं।
लखने पराई नारको तीरथमें जाते हैं॥
देखलाने को दुनियां में पूजारी कहाते हैं।
बलदेव राम नाम को निरगुण लखाते हैं॥

*ACKNOWLEDGMENT.

याने' मैंने' इस पुस्तक का पृष्ट १०५ से परयन्त पृष्ट १७६ तांइ रवाना किया था, किस मेहरबाँन की दरसाल ख़िदमत शरीफ़ में ? याने' जनाब The Hon. Sir Andrew Fraser, K. C. S. I.

* प्रमाण कबित।

खड़ी कर दूकानें, सनसिका समीप धरे, बिछे क्या गलीचा फरस परी तरे तरे।
लिखत गुमास्ता, हुण्डी खाते औ जमा खर्च, मानो सब साख तोडा फिरे परे परे॥
उलटाय कर टार कार, अनेकन को जमा करि, करके हिसाब आप फिरते टरे टरे।
ओढ़े हैं दुसाला, पीछे काढके देवाला, क्या ? माला जपते हरे हरे॥

† हज़्म कर जाते हैं।

* Attested true of receipt. Date of delivery 5—12—1904 and signature of addressee Sd.—A. H. L. Fraser याने' यह पाकेट बुक का इक-नालिजमेन्ट बज़रिये रजिष्ट्री लिफाफ़्ह डाँक हाज़ाकि, याने' जनाब पोष्ट माष्टर जनरल साहिब बङ्गाल के चिट्ठी (No. 91600) Dt. 21 st. February 1905 ई० के बमोजिब (No. A. 237.) का इकनालिजमेन्ट ता० ५-१२-४ ई० का याने जनरल पोष्ट आफिस का ता० २१ फेबरी सन् १९०५ ई० को पाया।

Lieutenant Governor of Bengal, की सेवा में भेजा था, याने Dt. 5-12-4 ई० को रजिष्ट्री (A. D.) No. A. 237 को बज़रिये डांक द्वारा जनरल पोष्टाफिस कलकत्ता से रवाना किया था, याने ≶) महसूल पाकेट का दिया था, और /) इकनालिजमेन्ट का अदा किया था, फिर बाद इस्के जब हमारे पास (No. A. 237) की रसीद नहीं पहुंची, तब मैंने लाचार हो कर पोष्ट माष्टर जनरल बङ्गाल तथा प्रेसीडेन्सी पोष्टमाष्टर कलकत्ता को इस बात से बज़रिये चिट्ठी के आगाह किया, फिर बाद इस्के दोनों जगह से मेरे पास यह जवाब कृतार्थ हुवा, सो क्या ? याने इन दोनों महाशय की चिट्ठी अङ्गरेजी की कापी मेहरबानों के जवाब को प्रकाशित करता हूं—

(COPY)

From—

The Post Master General, Bengal

To

Babu Baldeo Prasad Khettri Mehrotra 2½ Ghur No 12 Shickder para Street, Room No, 32 Calcutta,

No, 85846—dated Calcutta, the—1—2—1905,

Sir,

In reply to your Letter dated the 18-1-5,

I have the Honour to say that the subject will receive attention, A Further communication will be sent you in due course,

I have the honour to be
Sir,
Your most Obedient Servant,
Sd—HENRY SIMITH

(COPY.)

No, 77388 No, R 2—1511 OF 190—190

CALCUTTA GENERAL POST OFFICE,
Dated 3rd February 1905

From

The Presidency Postmaster,

To

* GURU Baldeo prasad Mehrottra Khettri,
Room No, 32, Shickder para Street, No, 12 Calcutta,

Sir,

In continúation of my Letter No, 60515 dated the 27th December 1904, I beg to inform you that the registered Letter in question was delivered to the addressee on the 5th December last. An attested copy of the addresssee's receipt has been forwarded to the postmaster General, Bengal, for transmission to you,

I have the honour to be,
SIR,
Your most obedient servant,
Sd—H, Peraira

---

* संसार माया भरमित हरन गुरु कौन है ? याने जगतारन परब्रह्म ईश्वर घट घट व्यापक निरङ्कार प्रचण्ड शक्ति प्रज्वलित देदीप्यमान केवल सूर्य्यका प्रकाश अन्धकार को दूर करनेवाला जानिये, क्योंकि सूर्य्यका पवित्र निरमल ज्ञान दोष को भस्म करनेवाला संसार में विस्तारिक है,—

(No. 102) दोहा। राज ऋषि गुरु मान्यवर, हित उपदेशक यार।
बलदेव को परमात्मा, पूजनीय संसार ॥

प्रमाण—यन्म समय की जन्म कुण्डलीके मेष राशिका चन्द्रग्रह सम्बन्ध विषय फलित,—

चन्द्रादेकादशे भानु:—यन्मकाले यदा भवेत्।
राजगर्व्यति वेता च: प्रसिद्ध कुलनायक: ॥ १ ॥
चन्द्रात् द्वादशे सौम्यो राजयोगी नर: सदा।
राशि कर्म्म यदा चन्द्र: कुटुम्बि नायको भवेत् ॥ २ ॥

* कलिराज के गर्वका शान्ति करनेवाला क्या है ? याने राजगर्व्यति वेता च:—अर्थात् मेरे अन्त:करण का ज्ञान अगाड़ से महाधर्म्म उपदेशों को जानिये,—

यह भूल नहीं है अथवा पन्ने२ का दृष्टान्त, ERRATA.

अशुद्ध	शुद्ध ।
पृष्ट ४९ की ६ पंक्ती मे, श्रीइबेटेश्वर—	श्रीवेंङ्कटेश्वर—
पृष्ट ७६ की १० पंक्ती मे —	
क्या क्या खूब लोगोने कपट हसद किया—	क्याही खूब लोगोंने कपट हसद किया—
पृष्ट ८७ के (No. 40) की ४ पंक्ती मे	
बङ्गाल के—	बङ्गाल की—
पृष्ट ११७ की ५ पंक्ती मे अपने—	अपनी—
पृष्ट १२० के रूलके बाद १३ पंक्ती मे —	
मौसूक तथा १७ पंक्ती में —	मौसूफ—
सगे—	सगी—
पृष्ट १५४ की (नं० ७२) के २ पंक्तीमें	
अनहित की—	अनहित की—
पृष्ट१५५ (No, 73) की ५ पंक्तीमें	
उंची—	ऊंची—
पृष्ट १६१ के शेर की (No. 77) की	
प्रथम पंक्ती में — शिनाशा—	शिनाशाँ—
पृष्ट १६२ के फुट नोट की प्रथम पंक्ती में	
प्रहित—	प्रेहित—
पृष्ट १६४ की ६ पंक्ती में ढीट—	ढीँट—
पृष्ट १६५ के प्रश्न के उत्तर के ३ पंक्ती में —	
सुना — ऐजन—	सुनों—
८ पंक्ती में साक्या ?	सोक्या ?
पृष्ट १६८ (No, 83) की पदनिरवाणी के २ पंक्ती में उनको भी मैं चाहता हूं जो कौरिस्तानहैं,	उनको भी मैं चाहता हूँ जो आधे कौरिस्तान हैं—याने आधे कौरिस्तान अथवा कौरिस्तान अत: पूरे कौरिस्तान याने इन तीनों को मैं चाहता हूँ, जो लोग अपने सच्चे ईमान पर कायम हैं—
पृष्ट१७१ की रूल के बाद हेडिङ्ग की भूल श्रीमान रायराजा बद्री प्रसादजी मुकीम—	श्रीमान रायबद्रीदासजी राज बहादुर मुकीम

शुद्ध

की २ पंक्ती में—

फिर राहत है | खबरदार हो रहो मुसाफिर राहत है

दयानतदारी—

क्ती में | सो क्या ?

पंक्ती मे | प्रकाशित—

े (No, 97) की ३

देया— | अपने' अपने' काम का चारज लिया दिया

में— | हाकिम—

ृष्ट की

टीहे के

ी ६पंक्ती

ब्राह्मणों की भोजन कराया जाता है—

ै तथा पृष्ट १८२ के (No 97) की ४ पंक्ती का फुटनोट
Right Hon'ble george Nath aniel Barron Lord
e county of Derby. in the Peerage of Ireland.
M, I, E, Viceroy and Governor General of

उपदेश

शेर

यॉं के मालिक से डरो सब।
की लखो बातें पढ़ो अब॥
क्या फरक़ सब के भई है।
युग में पलट दिल को दई है॥

"स्वर्गप्राप्ति:—

पृष्ठ १८—* बाबू लालबिहारीलालजी खन्ना हैड आफि इलाहाबाद बङ्क के इकाउनटेन्ट थे, सो ता० १८ । ६ । ०५ ई० इनका देहान्त हुवा—

पृष्ठ २१— बाबूसीतावचन्द जी जौहरीका मि० माघ शुक्ल १ सम्बत् १८६२ में देहान्त हुआ—

पृष्ठ ८६—राय लालाशिवप्रसादजी बहादुर रईश कानपुर का मि० चैत शुक्ल ११ सम्बत् १८६३ को देहान्त हुआ—

पृष्ठ १४५—पण्डित रामगोपालजी पूजारी मथुरिया घर वारो—का स्थान कमतरी—ज़िला आगरा में मि० बैसाख शुक्ल ४ सम्बत १८६३-ता०-२७ अप्रैल सन् १८०६-ई०को देहान्त हुआ—

पृष्ठ७७—विश्वेश्वरप्रसाद उर्फ़ मल्लूमल (No. 2) का देहान्त मि० जेठ शुक्ल १२ सम्बत १८६२—को प्राप्ति हुआ—यह हमारे स्वसुरके सगे छोटे भाई थे—

गरीब विधवावोंके ऊपर चमर पंथोंका आक्रमण—

ता० ३ री जौलाई सन् १८०५ ई० का सप्ताहिक बङ्गवासी के लिखका समाचार यह है, सो क्या ? याने—एक खतरानी विधवाके ऊपर लाहौरमें पुनर विवाहके वास्ते खत्री प्रचारणी आर्य्य समाजी के तरफ़से—उस विधवा औरत के माता पिताको कष्ट देकर पुनर विवाह के वास्ते ज़ोर ज़ुल्म किया गया—

और ता० २६ जौलाई सन् १८०५ ई०के लाहौरका सनातन धर्म्म हिन्दो गजट लिखताहै कि एक विधवा औरत शरीफ़ाखन्दानकी कोई थी, सो उस्को कोई मिमर्ईसाइन ने धोखा देकर के निकाल

---

* यह लाला कुञ्जबिहारीलालजी खन्ना के सगे छोटे भाईथे और बाबू रामनरायण इनकी सगे भांजे हैं, जो कि इस पुस्तक के पृष्ठ १८ मे वेवरा लिख चुके हैं।

लेगई, और उसके धर्म्मको नष्टकर डाला— धिक्कार है--किनको ? जो हिन्दू से काफ़र होगये हैं-- (No 104)

दोहा   †हिन्दूको काफ़िर कहैं, जो काफ़र हैं यार।
सुचि पवित्रसे जानिये, हिन्दू करम विचार ॥

इलाहाबादके चूंगी सदर चौकके आफिसमें एक चपरासी खत्री मुलाज़िम था, सो वह थोड़ी तलबका आदमी रिशवत खोरी और ईनाम वग़ैरहसे अपनी बसर करता था, सो उसकी इज्जत आबरूहको जोर खत्री कुलमें कमीने तथा नीच उत्पन्न हुवे है, सो दुर्ज्जनोने रुपयेके प्रलोभनके दारो से इसकी स्त्रीकी इज्जत आबरूहको मट्टीमे मिला दिया है, और यह चपरासी खत्री बड़े२ कुलीन खत्रियों का रिशतेदार है, जिनर अपराधियो ने इसकी इज्जत आबरूह को बिगाड़ डाला है, सो इस पुस्तक के पृष्ठ १०९ से १११ के प्रमाण से वमोजिब दण्ड होना चाहिये— इस बातको अनक़रीब २ सालका अरसा होता है—

८९०० पृष्ठ १०३ से पर्य्यन्त १०५ तक की मीज़ान ८९०० तूकग्रोस जो मैंने अपने लेख को प्रकाशित करके संसारमें अर्पण किया था।

१००० Dt. 3 rd. June 1906 ई० को एक मारवाड़ीकी कन्याके झगड़े के विषय में एक नोटिस गद्य पद्य में प्रकाशित किया था।

१००० Dt. 5th. October 1905 ई० को पृष्ठ ४ का लेख बङ्गाल के दो खण्डके विषयमें प्रकाशित किया था।

१००० Dated the No $\frac{26}{30}$ November 1905 ई० को पृष्ठ ४ का अपना लेख गद्य पद्य मे व्योपार के विषयमें प्रकाशित किया था।

---

† इस पुस्तक के पृष्ठ १०८ मे यह लिख चुके हैं, सो क्या ? याने—हीनम नीच वर्णम् दूषयन्ति ये ते हिन्दुवः—

१००० Dated the 15th February 1906 ई॰ को एक अपना लेख गद्य पद्यमें Highness the Royal Prince of Wales के आगमनमें प्रकाशित किया था।
Dated the 19th June 1906 ई॰ को एक नोटिस गद्य पद्य में Application मकान के झगड़े के बारेमें प्रकाशित किया था, सो सिक्धर पाड़ा ष्ट्रीट नं॰ १२ के कमरे नं॰ ३२ में मेरा, कुफुलबन्द हैं, सो इसका फैसला अबतक जनाब आलीजाह। वाइस राय हिन्दु के यहांसे नहीं हुवा है।
यह पुस्तक पृष्ठ १८६ को प्रकाशित कीगई है।

१४८०४ मीज़ान कुल

इस पुस्तकमें ३ फर्मका लेख बहुत ज़रूरी और प्रकाशित करनेको बाक़ी रह गया, थोड़ेसे द्रव्यकी सहायताकी दरकार थी, सो किसी महाशयने अज्ञानताके कारणसे दिया नहीं, सो इस कारणसे निज लेखनीके लेखको लाचार होयकर बन्द करता हूं।

Government House.
LUCKNOW.
*17th March 1905.

Sir,

I am desired to acknowledge your letter of the 8th instant, together with its enclosures.

Yours faithfully,
H. G. S Tyler Esq I. C. S.
Private Secretary.

Baldeo Prasad Mehrottra, CALCUTTA.

---

* यह अङ्गरेजी चिट्ठी ता॰ १७ मार्च सन् १९०५ ई॰ की जो है सो, इस पुस्तकके १९९ . १२ तारीख़का इक़नाम्नामा है।

Dated 15th. August 190

अशुद्ध	शुद्ध
पृष्ठ १११ की २ पंक्ती में	
बरणशङ्कर	बरनसङ्कर
पृष्ठ १२९ की १ पंक्ती में.	
डण्डहि	दण्डहि
पृष्ठ १४४ की २ पंक्ती में पाकशान क्या है?	जो हम सब भारतनिवासियों पर आपकी अनुग्रह है,
पृष्ठ १८७ की २ फुटनोट की	
पंक्तीमें कण्टो	कंटकों
पंक्ती १२ में नि गोड़	निगोड़ अर्थात् पातकी
पृष्ठ १९० की फुटनोटके	
प्रमाण के ३ पंक्तीमें	
चैंद्रा द्वादशि सग सौम्यो	चन्द्रा द्वादशि सौम्यो
पृष्ठ १९२ की (No. 103)	
के ४ पंक्तीमें—मैं	नै

राज्यमान्य, जगत हितकारी, श्रीकाशोजीके विश्वनाथजी का वारिष्टर अत्यन्त गरीब साहस का रखनेवाला न्याई प्रमाणनीय मान्यवर।

BALDEO PRASAD MEHROTTRA
KHATTRI ARHAYI GHAR

C/o Lalla Kunj Behari Lall jee Sahib Khanna— Raja Bardwan's Katra
Olive Street Calcutta.

ता० १९।४।०६ई० को आपके बारीमें रात्रिके समयमें केवल चैन कर रहता हूं और लिखूं तो क्या लिखूं? याने—किसीने मुझे अज्ञानताके कारणसे रहनेके लिये जगह तक नहीं दिया।

I Present this Book.

Jagat Hitkari
Shri Kashiniwasi
Baldeoprasad Mehrottra
Khatri Arhayi Ghar
Dt. 190

दोहा।

श्रीलक्ष्मी मातेश्वरी, सो है विष्णुसाथ।
विनय करत बलदेव यह, कर जोरे दोउ हाथ॥
माया तेरी शक्ति है, अद्भुत प्रचण्ड हाथ।
उपदेशक बलदेव के, श्रीरक्षक श्रीनाथ॥
जो चाहे सो तू करे, दुनियां तेरे हाथ।
उपदेशक बलदेव के, प्यारे तेरे नाथ॥
जगदम्बे नारायणी, राजत है संसार॥
करत ध्यान बलदेव यह, चरण मे बारंबार॥
शुमिरण तेरे चरण को, करूँ मैं आठो जाम।
नित करत बलदेव यह, बार बार परणाम॥

श्रीश्रीमहालक्ष्म्यैनमः।

विदित होकि २२ तथा २३ वर्ष से कलकत्ते में, हर साल भादों शुक्ल ८ से परयन्त आश्विन कृष्ण अष्टमी तक श्रीश्रीमहालक्ष्मीजी को जन्मोत्सव होता है, और श्रीश्रीमहालक्ष्मीजीका महा शृङ्गार सम्पूर्ण विशेष होता है, और षोड़शोपचारेण:—पूजा इत्यादिक विधिपूर्व्वक होता है, और एक दिन चार प्रकार को वेद पाठ और होमादिक और ब्राह्मणों का भोजन होता है, सो

यह हर साल धरम का काम प्रेम भक्ति से होता है, और श्रीमहालक्ष्मीजी सब चारो बरणों की श्रीकुलदेवी पूज्य है, सो श्रीभगवतीजी की स्मरण और दरशन किये बिना कृपा होती नहीं, और भक्ती आती नहीं, इस लिये धार्म्मिक सज्जन भक्त लोगों को दरशन करना हर साल उचित है, याने प्रेमसे भक्ती करने से श्रीदेवीजी की दया और प्रसन्नता होयगी, इस वास्ते सब महाशयों से यह प्रार्थना है, सो क्या? याने आपलोग बन्धु बाँन्धव सहित उत्सव के दिनों में श्रीश्रीमहालक्ष्मीजी के दरशन करने को नित पधारिये, क्योंकि दरशन करने से श्रीश्रीमहालक्ष्मीजी माता सदैव आपलोगों को प्रसन्न और मनोंकामना पूरण करेंगी। इति शुभ मस्तु।

आपलोगों का शुभाध्यायी—श्रीमाली ब्राह्मण सामवेदी श्रीमाणिकराम त्रिपाठी स्थानापनम्—जोड़ासाँकू बलरामदेव ष्ट्रीट नं० ७ कलकत्ता।

NOTICE.

Dr S. L Mullick's Cmative Tinctme or Cholera Spe ific.

ওলাউঠা রোগের একমাত্র মহৌষধ মূল্য ৸০ বার আনা শ্রীব্রজ লাল মল্লিক; ৪০ নং সিকদরপাড়া ষ্ট্রীট, জোড়াসাঁকো কলিকাতা।

दोहा।

यह दवाई हैज़े की, तीन सुकी अकसीर।
फी शीशी को जानिये, दूर करै सब पीर॥

डाक्टर एस, एल मल्लिक की किउरेटिफ टिन्चर अर्थात् कलरेका एकमात्र महौषध है, अथवा हैजा रोग, सीतरम इत्यादिकों की जानिये कीमत फी शीशी ॥) अर्क औषध की है।

आपलोगों का कृपाकांक्षी

Babu—BROJOLAUL MULLICK.

40, Sickderpara Street Calcutta.